रीति - शृंगार

सम्पादक

डा० नगेन्द्र, एम० ए०, डी० लिट्

प्रकाशक

गौतम बुक डिपो
नई सड़क, दिल्ली

प्रकाशक
गौतम बुक डिपो
नई सड़क, दिल्ली

१९५४
प्रथम वार

मूल्य पाँच रुपया

मुद्रक
यूनिवर्सिटी प्रेस
दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली

आमुख

रीति-श्रृंगार रीति परम्परा के श्रृगार मुक्तकों का संकलन है। हिन्दी काव्य मे रीति की परम्परा रस की अजस्र निर्झरिणी के समान प्रवाहित है। अभी तक उसका कोई प्रतिनिधि सकलन न होना वास्तव मे हमारे साहित्य का एक बड़ा अभाव था—प्रस्तुत ग्रथ के सम्पादन द्वारा इसी क्षति-पूर्ति का विनम्र प्रयत्न किया गया है। इन छन्दों का चयन रीति-काव्य के अनेक मुद्रित-अमुद्रित ग्रंथों से किया गया है, और यथा-सम्भव रीति-श्रृंगार को रीति-श्रृंगार-विशिष्ट रीति-परम्परा का प्रतिनिधि सकलन बनाने का प्रयत्न किया गया है। रीतिग्रथों का हिन्दी मे आज घोर दुष्काल है—वर्षों की उपेक्षा के कारण मुद्रित ग्रन्थ भी अप्राप्य है, अमुद्रित ग्रन्थों के विषय मे तो कहना ही क्या! ऐसी स्थिति मे इस सकलन को तैयार करने मे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पडा है। इन छन्दों के चयन मे मैंने रस को या यह कहना चाहिए कि रसराज को ही प्रमाण माना है क्योंकि रीति काल पर उसका ही एकछत्र साम्राज्य था। सम्भव है दो चार छन्द श्रृगार की परिभाषा मे न बँध सकते हों, परन्तु उनका काव्य-चमत्कार लक्षण की अपेक्षा अधिक प्रबल है। पारिभाषिक दृष्टि से आलम, घनानन्द, बोधा तथा ठाकुर की रचनाएं भी रीति परम्परा के अन्तर्गत नहीं आतीं, किन्तु केवल इस शास्त्रीय कल्पना के आधार पर प्रमाता को इनकी अमूल्य काव्य-निधियों से वञ्चित करने का अपराध मेरी सहृदयता न कर सकी। ये कवि तो रीति-श्रृगार के श्रृंगार हैं।

अन्त में, एक क्षमा-याचना मुझे करनी है और वह यह कि प्रस्तुत सकलन मे पाठ-शोधन पर मै विशेष ध्यान नही दे सका। विभिन्न मुद्रित अथवा हस्तलिखित प्रतियों मे कारक-चिह्नों के भिन्न-भिन्न वैकल्पिक रूपों का प्रयोग होने से उनके स्थिरीकरण का प्रश्न भी सामने आया, परन्तु मेरे पास पाठाध्ययन के लिए अभीष्ट साधन, समय तथा क्षमता तीनों का अभाव था, उधर इस कार्य के लिए समर्थ प्रूफ़-शोधक भी उपलब्ध नहीं था—इसलिए मैने इस प्रश्न का समाधान करने का प्रयत्न ही नहीं किया और मूल प्रतियों मे प्रयुक्त विकल्पों को यथावत् रहने दिया है। रसदशा को

आचार्यों ने वेद्यान्तर-स्पर्श-शून्य कहा हे—अतः मेरा विश्वास है कि सहृदय पाठक को छन्दों के रसास्वादन मे इन छोटी-मोटी त्रुटियों का ज्ञान भी नही रहेगा।

इस ग्रंथ का आरम्भ गौतम बुक डिपो के स्वामी स्वर्गीय श्री दिलावर सिह के जीवन-काल मे ही हो गया था—दैव के विधान से इसकी समाप्ति से पूर्व ही उनकी जीवन लीला समाप्त हो गई। आज यह आमुख लिखते हुए उनका वह हॅसमुख चेहरा अनेक बार मेरी कल्पना मे साकार हो गया है। उनकी दिवगता आत्मा को सजल स्नेहाञ्जलि अर्पित करता हुआ मै यह रीति-शृगार सहृदय पाठको की सेवा मे प्रस्तुत करता हूँ।

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली — नगेन्द्र

विषय-सूची

उत्तर-रीति

पूर्व-रीति

कृपाराम

(हित-तरंगिनी से)

अङ्ग-अङ्ग जोबन छयौ, नवल-बधू के आज।
लघु सिसुता ज्यों देखिए, भोर-तरैयन साज ॥

खिझवति हँसति लजाति पुनि, चितवति चमकति हाल।
सिसुता-जोबन की ललक, भरे बधू तन ख्याल ॥

नवल बधू तन तरुनई, नई रही है छाइ।
दै चसमा चख चतुरई, लघु सिसुना लखि जाइ ॥

ऐसो हाँस न कीजेये, जातैं रूसे हाल।
नवल बधू की ना मिटी, अजहूँ हिलकी लाल ॥

अति प्रवीन वह सुन्दरी, मोहन को हित आँकि।
सबकी दीठि बचाइ के, गई झरोखनि झाँकि ॥

नाइन पै नाहिन बन्यो, देत महावर पाइ।
निरखि बधू की रुख सखी, हुलसि दियो जदुराइ ॥

मोहि रुचै सोई करै, अति उदार प्यो जानि।
मो मनसा घर है सदा, करो कोन विधि मान ॥

खेलति चोर-मिहीचनी, निजु सखि डीठि बचाइ।
स्याम दुरे तिहि कोन मे, दुरत लए उर लाइ ॥

छिन रोवै छिन मे हँसै, छिन में बहु पनराइ।
गहै मौन छिन मे बधू, छिन दृगजल उफनाइ ॥

गए रूसि जदुपति सखी, निरखि उदधि सों मान ॥
बडवानल तें विषम उर, उपजो विरह कृशान ॥

३

इन्द्र-धनुष सी पति-अधरन की शोभा ।
निरखि बधू-मन उपजो पूरन छोभा ॥

पति आयो परदेश तें, रितु बसत की मानि ।
झमकि झमकि निजु महल मे, टहलें करे सु रानि ॥

आये मोहन गॉव ते, सुनि हुलसी उर नारि ॥
फरकें उरज कपोल दृग, तरकत तनी निहारि ॥

लोचन चपल कटाक्ष-सर, अनियारे विष पूरि ।
मन मृग बेधे मुनिन के, जगजन सहित बिसूरि ॥

— ※॥०॥※ —

गंग

जल मे दुरी है, जैसे कमल की कलिका द्वै,
उरजन ऐसे दीन्ही सरुचि दिखाई सी
गग कवि साँझ सी सोहाई तरुनाई आई,
लरकाई माँझ कछु मै न लखि पाई सी ।।
स्याम को सलौनो तन, तामे दिन द्वै क मांझ,
फिरी ही चहत मनमथ की दुहाई सी।
सीसी मे सलिल जेसे, सुमन पराग तेसे,
सिसुता मे झलकति जोबन की झाँई सी ।।

मृगहू ते सरस विराजत बिसाल दृग,
देखिए न अति दुति कौलहु के दल मे।
गग घन दुज से लसत तन आभूपन,
ठाढे द्रुम छाँह देख के गई विकल मै ।।
चख चित चाय भरे शोभा के समुद्र माँझ,
रही ना सँभार दशा औरे भई पल मे
मन मेरो गरुओ गयो री बूडि मै न पायो,
नैन मेरे हरुये तिरन रूप-जल मै ।।

बाँकी मोहै सोहै बाँकी चितवन मन मोहै,
वाको मोती बेसर अधर पर करको।
कहै कवि गंग तेरे उचकि उचकि कुच,
गति न रहत निरखत भरा भर को ।।
आनन की उपमा तैं सकल विकल भई,
भली सोभा लै रहयो तिल कपोल पर को
पंकज के बीच आली अलि गो समाइ तहाँ,
मानो री बिछुरि छोना बेठयो मधुकर को ।।

गयद की चुराई चाल मैदही को लक चोर्‌यो
मुख तेरे चंद चोर्‌यो नासा चोरी कीर की ।
म्रिगनि के नैन चोर्‌यो पिकनि के बेन चोर्‌यो,
ओठ तेरे लाल चोर्‌यो दंत छवि हीर की ॥
कहे कवि गंग बैनी नाग तै चुराई लाई,
भोह तो कमान पल अर्जुन के तीर की ।
जेते तुम लूटे ते पुकारत कन्हैया जू पै,
एतनि की चोरी कहा छपेगी अहीर की ॥

अंग ओप आँगी भीजी अन्त अनुराग भीजे,
अधर तमोर भीजे विद्रम से झलकै ।
गति भीजी आलस सहज सोहै मोहै भीजी,
लाज भीजी चितवनि प्रेम भीजी पलकै ॥
आवो लाल दौरि दुरि देखै मेरी पीठ पीछे,
जाके देखिबे को निसि द्यौस लेत ललकै ।
बचन पियूष भीजे बुधि के विलास गंग,
रस भीजी आपुन फुलेल भीजी अलकै ॥

मोर को मुकुट मुक्तानि के वे अवतंस,
रोम-रोम रूप मानो मनमथ मई है ।
काछिनी रुचिर रुचि सोहै पीतपट सुचि,
चटकीली अङ्ग अङ्ग पीत छवि छई है ॥
कहै कवि गंग बनी बानिक विविध भाँति,
आभा तीनो लोक की सुएक ठौर भई है ।
मनि मनमोहन के कंठ मे यों झलकति,
जानिये जुन्हैया जमुना मे फैलि गई है ॥

स्री नंदलाल गोपाल के कारन,
कीन्हो सिंगार सु राधे बनाई ।
कुंकुम आड सुकंचन देह,
दिये मुकताहल की झलकाई ॥

सीस ते एक छुटी लट सुन्दर,
आनि के यों कुच पे लपटाई
गग कहै मानो चंद के बीच ह्वे,
संभु को पूजनि नागिनि आई ॥

मृगनैनी की पीठ पै बैनी लसै,
सुख साज सनेह समोइ रही ॥
सुचि चीकनी चारु चुभी चित मे,
भरि भौन भरी खुशबोइ रही।
कवि गङ्ग जू या उपमा जो कियो,
लखि सूरति ता श्रुति गाइ रही।
मनो कंचन के कदली-दल पे,
अति साँवरी साँपिनि सोइ रही ॥

चाल न जानत चंचलता,
चुनरी चहूँ खूब बनी अति रानी।
चंदन खौर चुनाव की बेंदी,
नवेली तिया सब संग सगाती ॥
सेज को नाम लिए सकुचे,
कविगंग कहै न कही छवि जाती।
सोने से गात सलोने से नेन,
अनूठे से ओठ अछूती सी छाती ॥

लाल गई ललना कहँ लेन ही,
ताहि बिलोक रही गहि मौन सो।
वा मुख की दुति नील दकूल मे,
चाहत चद उदो मनु हौन सो ॥
गंग कहै लखि रीझिहो लाल,
जगैमग जोति सबै तन सोन सो।
प्यारी के रूप के पानिप में,
मन माइल मेरो बिलाइ गो लोन सो ॥

मन घायल पायल मायल ह्वै,
गढ लक ते दूरि निसंक गये ।
तहं रूप-नदी त्रिबली तरि कै,
करि साहस सागर पार भयो ॥

कवि गग भनै बटपार मनोज,
रुमावलि सों ठग सग लयो ।
परि दोऊ सुमेरु के बीच मनोभव,
मेरो मुसाफिर लूट लयो ॥

जो चितऊँ तो रहे चित मे,
चुभि याही ते भूलि न दीठ उठाऊँ ।
गुपाल परोस बसे बस माई हो,
को लगि आँचर आँखि दुराऊँ ॥

गग कहे हरि को मुख चंद,
विलोकत हो भरि आनन्द पाऊँ ।
देखि सखी बडवानल लाज ते,
प्रेम-समुद्र न बाढन पाऊँ ॥

जा दिन ते हेर्‌यो मनमोहन है आली सुनि,
ता दिन ते देहबिन दूनो ह्वे दगतु है ।
कहे कवि गंग नित चित चटपटी होति,
पावस नदी की न्याइ नेहु उमगतु है ॥
रूप की मरोरे मारे मारु के मरूरे मेरे,
मुरि मुसकानि पर मैनु सो जगतु है ।
साँवरेऊ मानस निगोरे नीके लागत कि,
गोरी ही की आँखिनि को लूहरु लगतु है ॥

जा दिन तें माधो मधुबन को सिधारे सखी,
ता दिन तें द्रिगनि दवागनि सी दै गयो ।
कहि कवि गग अब सब ब्रजवासिनु की,
सोभा औ सिगार सुख संग लाइ लै गयो ॥

आछे मन भावने वे विविधि बिछावने जे,
सकल सुहावने डरावने से कै गयो।
फूले-फूले फूलनि मे सेज के दकूलनि मे,
कालिंदी के कूलन विसासी बिस बे गयो॥

धीर न धरति धरी देखे बिन जाति मरी,
ऐसी कछु करी दीयो घाइनि मे नोन है।
सुधि-बुधि टरी मानो खाइ ठग बरी जीभ,
खरी अरबरी न गहति क्यों हूँ मोन है॥
लाज परहरी खरी उबरी न डरी काहू,
कहै कवि गग समुझहि सखी सो न है।
कौन टेव परी साठ्यो घरी कहै हरी,
पूछे सहचरी अरी हरी तेरो कोन है॥

हा हा नेकु आइ लेहु बूडे लेति तेरो नेहु,
केहू हवे दिखाई देहु डोरू ज्यों दगत है।
कहै कवि गंग कान्ह व्याकुल इतक मान,
काउ की कनाई कहाँ करेजे लगति है॥
कोइल अलग डार बोलत डहारी लागे,
डहडही जोन्ह जी मे डाह सी लगति है।
तुम बिनु सूनी गति कारी साँपु ह्वे है खाति,
रति सेज देखि देखि छात उमगति है॥

बेठी है सखिन संग पियको गमन सुन्यो,
सुखके समूह मे वियोग आग भरकी।,
गग कहै त्रिबिध सुगध लै बह्यो समीर,
लागत ही ताके तन भई व्यथा ज्वर की॥
प्यारी को परसि पौन गयो मानसर पै सु,
लागत ही औरै गति भई मानसर की।
जलचर जरे औ सेवार जरि छार भई,
जल जरि गयो पंक सूक्यौ भूमि दरकी॥

सेत सरीर हिये विष स्याम,
कला फन री मन जान जुन्हाई।
जीभ मरीचि दसौ दिसि फैलति,
काटत जाहि बियोगिन ताई॥
सीस तें पूछ लौं गात गर्यो, पै
डसे बिन ताहि परै न रहाई।
सेस के गोतके ऐसे हि होत है,
चन्द नहीं या फनिन्द है माई॥

चकई बिछुरि मिली तू न मिली प्रीतम सों,
गग कवि कहै एतो किया मान ठान री।
अथये नछत्र ससि अथई न तेरी रिस,
तू न परसन परसन भयो भान री॥
तू न खोलो मुख खोलो कज औ गुलाब मुख,
चली सीरी वायु तू न चली, भो बिहान री।
राति सब घटी नाहीं करनी ना घटी तेरी,
दीपक मलीन न मलीन तेरो मान री॥

अधर मधुप जैसे वदन अधिकानी छवि,
विधि मानो बिधु कीन्हो रूप को उदधि कै।
कान्ह देखि आवत अचानक मुरछि पर्यो,
बदन छपाइ सखियान लीन्ही मधि कै।
मारि गई गग दृग-शर बेधि गिरिधर,
आधी चितवनि मै अधीन कीन्हों अधिकै।
बान बधि बधिक बधे को खोज लेत फेरि,
बधिक-बधू ना खोज लीन्ही फेरि बधि कै।

रीति

केशवदास

केशोदास लाख लाख भाँतिन के अभिलाष,
बारि देरी बावरी न बारि हिये होरी सी।
राधा हरि के री प्रीति सब ते अधिक जानि,
रति रतिनाह हू मे देखो रति थोरी सी।
तिन हूँ मे भेद न भवानि हूँ पै पार्यो जाइ,
भारती की भारती है कहिबे को भोरी-सी।
एकै गति एक मति एकै प्राण एकै मन,
देखिबे को देह द्वै है नैनन की जोरी सी॥

जो हो कहूँ रहिये तो प्रभुता प्रकट होत,
चलन कहौ तो हित हानि नाहीं सहनो।
भावै सो करहु तो उदास भाव प्राणनाथ,
साथ लै चलहु कैसे लोकलाज बहनो।
केशौराय की सौ तुम सुनहु छबीले लाल,
चलै ही बनत जो पै नाहीं आजु रहनो।
तै सिये सिखावो सीख तुमहीं सुजान पिय,
तुमहीं चलत मोहि जैसो कछू कहनो॥

पूरण कपूर पान खाये कै सी मुखबास,
अधर अरुण रुचि सुधासौं सुधारे हैं।
चित्रित कपोल लोल लोचन मुकुर मैन,
अमर झलक झलकनि मोहि मारे हैं।
भृकुटी कुटिल जैसी तैसी न किये हू होहि,
आँजी ऐसी आँखें केशौराय हेरि हारे है।

काहे को शृंगारि कै बिगारति है मेरी आली,
तेरे अङ्ग सहज शृंगार ही शृंगारे हैं ॥

भूषण सकल घनसार ही के घनश्याम,
कुसुम कलित केसरहि छवि छाई सी।
मोतिन की लरी शिर, कठ कठमाल हार,
और रूप-ज्योति जात हेरत हेराई सी।
चदन चढाये चारु सुन्दर शरीर सब,
राखी शुभ शोभा सब बसन बसाई सी।
शारदा सी देखियतु देखौ जाइ केशौराय,
ठाढी वह कुँवरि जुन्हाई मै अन्हाई सी।

शिशुता-सहित भई मदगति लोच
गुणनि सो बलित ललित गति पाई है।
भौहनि की होडाहोड़ ह्वै गई कुटिल अति,
तेरी बानी मेरी रानी सुनत सुहाई है।
केशौदास मुखहास ही सिखे ही, कटि-तटि —
छिन-छिन सूछम छबीली छवि छाई है।
बार बुद्धि बालनि के साथ ही बढी है बीर,
कुचन के साथ ही सकुच उर आई है ॥

कोमल अमलता की रंगभूमि कैधौं यह,
शोभियत आँगन के शोभा के सदन को।
अरुण दलनि पर कीनो कै तरणि कोप,
जीत्यो किधौ रजोगुन राजिव के गन को।
पल पल प्रणय करत किधौ केशौदास,
लागि रहयो पूरबानुराग पिय मन को।
ए री वृषभानु की कुमारी तेरे पाँय सोहै,
जावक को रग कै सुहाग सौतिजन को ॥

कौमल अमल चल चीकने चिकुर चारु
चितये ते चित चकचौंधियत केशौदास।
सुनहु छबीली राधा छूटे ते छ्वै छवानि,
कारे सटकारे है सुभाव ही सदा सुवास ॥
सुनिकै प्रकास उपहास निशि-बासर कौ.
कीनौ है सुकेशव सुवास जाय कै अकास।
यद्यपि अनेक चन्द्र साथ मोर-पच्छ तऊ,
जीत्यौ एक चद्र-मुख रूप तेरे केशपास ॥

तन आपने भाये शृगार नही,
ये शृंगार शृंगार शृंगारे वृथा ही।
ब्रज भूषण नेननि भूख है जाकी
सु तो पै शृंगार उतारे न जाही ॥
सब होत सुगध नहीं तो सुगध,
सुगध मे जाति सुगध वृथा ही।
सखि तोहि तै है सब भूषण भूपित,
भूषण तौ तुव भूषित नाही ॥

लोचन बीच चुभी रुचि राधे की,
केशव कैसे हूँ जाति न काढी।
मानहु मेरे गही अनुरागिनि,
कुकुम-पक अलकित गाढी ॥
मेरी यो लागि रही तनुता जनु,
यो द्युति नील निचोल की बाढी।
मेरे ही मानौं हिये कहँ सूँघति
यों अरबिन्द दिये मुख ठाढी ॥

नील निचोल दुराइ कपोल,
विलोकति ही किये आलिक तोही।

जानि परी हँसि बोलति, भीतर
भाजि गई अवलोकति मोही ॥
बूझिबे की जक लागी है कान्हहि,
केशव कै रुचि रूप लिलोही।
गोरस की सो बबा की सो तोहि,
किबार लगी कहि मेरी सो कोही ॥

मोहन मरीचिका सो हास घनसार कैसो,
बास मुख रूप कैसी रेखा अवदात है।
केशोदास बेणी तौ त्रिवेणी सी बनाइ गुही।
जामै मेरे मनोरथ मुनि से अन्हात है ॥
नेह उरझे से नैन देखिबे को बिरुझे से।
बिझुकी सी भौंहे उझके से उरजात है।
देवी सी बनाई बिधि कौन की है जाई यह,
तेरे घर जाई आजु कही कैसी बात है ॥

मत्त गयंदन साथ सदा इहिं,
थावर जंगम जंतु विदार्‌यो।
ता दिन ते कहि केशव बेधन,
बन्धन कै बहुधा विधि मार्‌यो ॥
सो अपराध सुधारन शोधि,
इहै इनि साधन साधु बिचार्‌यो।
पावक पुंज तिहारे हिये यह
चाहत है अब हार बिहार्‌यो ॥

काछे सितासित काछनी केशव,
पातुर ज्यों पुतरीन बिचारो।
कोटि कटाक्ष नचै गति भेद,
नचावत नायक नेह निहारो ॥

बाजत है मृदु हास मृदंग सो,
दीपति दीपनि को उजियारो।
देखत हो हरि देखि तुम्हे यह
होतु है आँखिन बीच अखारो॥

दशन बसन माहि दरसै दशन-द्युति,
बरषि मदन रस करत अचेत हौ।
झाँई झलकति लोल लोचन कपोलन मे,
मोल लेत मनक्रम बचन समेत हौ॥
भौहैं कहे देत भाउ कहो मेरी भावती के,
भाव ते छबीले लाल मौन कौन हेत हौ।
केशव प्रकाश हास हँसि कहा लेहुगे जु,
ऐसे ही हसे ते तौ हिये को हरि लेत हौ॥

ज्यों ज्यो हुलास सो केशवदास,
विलास निवास हिये अवरेख्यो।
त्यौ त्यौ बढ्यो उर-कंप कछू,
भ्रम भीत भयो किधौ शीत विसेख्यो॥
मुद्रित होत सखी वरही मेरे
नैन सरोजनि साँच कै लेख्यो।
तैं जु कहयो मुख मोहन को
अरबिंद सो है सो तो चंद सो देख्यो॥

बैठी सखीन की शोभै सभा,
सब ही के जु नैनन माँझ बसै।
बूझै ते बात बराइ कहै,
मन ही मन केशवदास हँसै॥
खेलति है इत खेल उतै पिय,
चित्त खिलावत यो बिलसै।

कोउ जानै नही दृग दौरे कबे,
　　कित ह्वै हरि आनन छ्वै निकसे॥

पहिले तजि आरस आरसि देखि,
　　घरीक घसै घनसार हिलै।
पुनि पौछि गुलाब तिलॉछि फुलेल,
　　अँगोछे मै आछे अँगौछन के॥
कहिं केशव मेदजवाद सो मॉजि,
　　इते पर आँजे मै अंजन दे।
बहुरे दुरि देखौ तो देखौ कहा—
　　सखि लाज तो लोचन लागे रहै॥

सौहै दिवाय दिवाय सखी इक
　　बारक कानन आनि बसाये।
जानै को केशव कानन ते कित ह्वै,
　　हरि नैननि मॉझ सिधाये॥
लाज के साज धरेई रहे,
　　तब, नैनन लै मन ही सौ मिलाये।
कैसी करौ अब क्यों निकसैं री,
　　हरेई हरे हिय मे हरि आये॥

रीझि रिझाइ झरोखनि झॉकि
　　रही मुख देखि दिखाइ सुभाही।
बोलन आये अबोल भई,
　　अब केशव ऐसी हमै न सुहाही॥
मैं हुतै बहराई है तोसी री,
　　तू बहरावत मोहि वृथाही।
याही सयान सदा बलि हौ,
　　हरि सो हँसि हॉ करै मोहि सों नाहीं॥

जानै को पान खवावत क्यो हूँ,
गई लगि अंगुली ओठ नवीने।
ते चितयौ तबही तिहि भाँति जु,
लाल के लोचन लीलि से लीने।
बात कही हरये हँसि कै सुनि,
मै समुझी वै महारस भीने।
जानति हौ पिय के जिय के,
अभिलाष सबै परिपूरण कीने।

दीनो मै पॉइ झवाइ महावर,
ऑजी मै ऑजन ऑख सुहाई।
भूपण भूपित कीने मै केशव,
माल मनोहर हू पहिराई।
दर्पण लै अब दीपत देखि,
सखी सब अंग शृंगार सिधाई।
बक विलोकन अक लै पान खवावे
को कान्ह कुमार की नाई॥

चचल न हूजे नाथ अंचल न खैचो हाथ,
सोवै नेक सारिका ऊ शुक तौ सुवायो जू।
मद करो दीपद्युति चद-मुख देखियत,
दौर के दुराइ आऊँ द्वार तौ दिखायो जू॥
मृगज मराल बाल बाहिरै बिडार देऊँ,
भायो तुम्है केशव सु मोहू मन भायो जू॥
छल के निवास ऐसे वचन- विलास सुनि,
सौगुनो सुरत हूँ तै श्याम सुख पायो जू॥

केशोदास नेह दशा दीपन सँयोग कैसे,
ज्योति ही के ध्यान तप तेजहि नसाइ है।

ऑखिन सो बॉधै अन्न काहू की न भागी भूख,
पानी की कहानी रानी प्यास क्यो बुझाइ है ॥
येरी मेरी इंदुमुखी इदीवर-नेन लिखे,
इदिरा के मन्दिर क्यो सम्पात सिधाइ है।
ऐसे दिन ऐसे ही गॅवावति गॅवार कहा,
चित्र देखे मित्र के मिले को सुख पाइ हे ॥

खेलत ही सतरंज अलिन मे आएहि ते,
तहॉ हरि आये किधौ काहूके बुलाये री।
लागे मिलि खेलन मिलै कै मन हरे-हरे,
दैन लागे दावु आपु आपु मन-भाये री ॥
उठि-उठि गई मिस मिसहा जितैही तित,
केशोराय की सो दाऊ रहे छवि-छाये री।
चौकि चौंकि तिहि छिन राधाजू के मेरी आली,
जलज-से लोचन जलद-से ह्वै आये री ॥

कौ लो पीहौ कान-रस रूप की बूझै है प्यास,
केशोदास कैसे नयनन भरि पीजिये।
बीर की सौ मेरी बीर वारी है जुवारी आन,
नेंक हॅसि हॉ कर बलाइ तेरी लीजिए।
बरसक मॉझ यह बैस अलबेली बीते,
देहो सुख सखिन क्यो अब ही न दीजिये।
य री लडबावरी अहीर ऐसी बूझों तोहि,
नाही सो सनेह कीजै नाह सों न कीजिये ॥

नाह लगे मुख सौनि दहै दुख,
नाही लगे दुख देह दहैगो।
नाहीं अबै सुख देत है केशव,
नाह सदा सुख देत रहैगा ॥

नाहीं ते नाहि री नाहि भलाई,
भलो सब नाह हितै पै कहैगो।
नाह सो नेह निबाहि बलाइ ल्यौं,
नाही सो नेह कहा निबहैगो।

सिखै हारी सखी डरपाइ हारी कादबिनी,
दामिनी दिखाइ हारी दिशि अधिरात की।
झुकि-झुकि हारी रति,मारि-मारि हार्यो मार,
हारी झकझोरति त्रिविध गति बात की।
दई निरदई वाहि ऐसी काहि मति दई।
जारत जु रैन ऐन दाइ ऐसी गात की।
कैसे हूँ न माने ही मनाइ हारी केशोदास,
बोलि हारी कोकिल, बुलाइ हारा चातकी॥

छबिसों छबीली वृषभानु की कुँवरि आज,
रही हुती रूप-मद मान-मद छकि कै।
मारहू तैं सुकुमार नंद के कुमार ताहि,
आये री मनावन सयान सब तकि कै॥
हँसि हँसि सौह करि- करि पाँय परि-परि,
केशोराय की सों जब रहे जिय जकि कै।
ताही समै उठे घन घोर-घोर, दामिनी-सी
लागी लौटि श्याम-घन-उर सो लपकि कै॥

मेघन ज्यों हँसि हंसन हेरत,
हंसन ज्यों घन रूपन पीवैं।
कंजन ज्यों चित चंद न चाहत,
चन्द ज्यों कंजनि क्यों हू न छीवैं॥
ताल तै बागनि बाग तैं तालनि,
ताल तमाल की जातनि सीवैं।

कैसी है केशव वे युवती सुनि,
ऐसी दशा पिय की पल जीन ॥

मै पठई मति लेन सखी सु
रही मिलि को मिलिबे कह आने।
जाय मिले दिन हीं दृगदूत,
दयाल सो देह दशा न बखाने ॥
प्रेरत पैज किये तन प्राणनि,
योग के और प्रयोग निधाने।
लाज ते बोल न पाऊँ न केशव,
ऐसे हीं कोऊ कहा दुख जाने ॥

आये ते आवगी आँखिन आगे हीं,
डोलि है मानहु मोल लई है।
सोवै न सोवन देय न या,
तब सों इनमे उन साख दई है।
मेरिये भूल कहा कहौ केशव,
सौति कहूँ ते सहेली भई है,
स्वारथ ही हितु है सबके,
परदेश गये हरि नींद गई है ॥

केशव केसे हूँ कोरि उपायनि,
आन सुतो उर लागति है।
चकचौंधति सी चितवै चितमे,
चित सोवत हूँ महँ जागत है ॥
परदेश प्रिया पल सोहि पत्याति,
न जाने को याकी कहा गति है।
तजि नेनन नींद नवोढा बधू,
लहुँ आधिक रात ते भागति है ॥

मोरिनि ज्यौ भावत रहत बन बीथिकान,
हंसिनि ज्यो मृदुल मृणालिका चहति है।
पिउ-पिउ रटत रहत चित चातकी ज्यौ,
चन्द चितै चकई ज्यों चुप ह्वै रहति है।
हरनी ज्यों हेरति न केशरि के कानन को,
केका सुनि ब्याली ज्यौ बिलान हीं कहति है।
केशव कुँवर कान्ह बिरह तिहारे ऐसी,
सुरति न राधिका की मूरति गहति है ॥

दीरघ दरीन बसे केशवदास केशरी ज्यों,
केशरी को देखे बनकरी ज्यों कँपत है।
बासर की सपदा चकोर ज्यौं न चितवत,
चकवा ज्यौं चंद ही ते चौगुनी चँपत है ॥
केका सुनि ब्याल ज्यौं बिलात जात घनस्याम,
घननि की घोरनि जवासे त्यौं तपत है।
मोर ज्यों भवत बन योगी ज्यों जगत निशि,
चातक ज्यो श्याम नाम तेरोई जपत है ॥

जहीं जहीं दुरे तहीं जौन्ह ऐसी जग-मगै,
कैसे हूँ जु केशव दुराइ ल्याउ रंग की।
पवन को पंथ अलि अलिन के पीछे अली,
अलिनि ज्यो लागी रहे जिन्हे साथ संग की।
निपट अमिल वह तुम्हे मिलिबे की जक,
कैसे कै मिलाऊँ गति मो पै न विहङ्ग की।
इक तो दसह दुख देति हुती, दुति हूँ ते
बीस बिसे बिस बास भई वाके अङ्ग की ॥

शीतल समीर टारु चंद्र-चंद्रिका निवारु,
ऐसे ही तो केशोदास हरष हेरातु है।

फूलनि फैलाइ डारु झारि डारु घनसारु,
चंदन को ढारु चित चौगुनो पिरातु है।
नीरहीन मीन मुरझाइ जीवे नीर ही तें,
छीरते छिरीके कहा धीरज धिरातु है।
पाई है तै पीर किधौ यों ही उपचारु करै,
आगिही को डाढो अंग आगि ही सिरातु है॥

खेलत न खेल कछु हाँसी न हँसत हरि,
सुनत न कान गान तान बान-सी बहै।
ओढत न अम्बरनि डोलत दिगम्बर से,
शम्बर-ज्यों शम्बरारि दुःख देह को कहै।
भूलिहू न सूँघै फूल फूलि-फूलि कुँभिलात
जात, खात बीराहू न बात काहू सो कहैं
देखि-देखि मुखचन्द केशव चकोर सम
चन्द्रमुखी चद्र हू के बिंब-त्यों चितै रहे॥

फूल न दिखाउ, शूल फूलत है हरि बिनु,
दूरि करि माल बाल ब्याल सी लगति है।
चँवर चलाउ जिन बीजन हलाउ मति
केशव सुगध-वायु बाइ री लगति है।
चंदन चढाउ जिन ताप सी चढ़ाति तन
कुंकुम न लाउ अ ग आगसी लगति है।
बार बार बरजति बावरी है वारों आन
बिरी ना खवाउ बीर बिष-सी लगति है॥

चपला न चमकति चमक हथ्यारन की
बोलत न मोर बंदी सयन समाज के।
जहाँ तहाँ गाजत न बाजत दमामे दीह
देत न दिखाई दिन-मणि लीने लाज के॥

चलि चलि चंद्रमुखी सामरे सखा पै बेगि
शोषक जु केशोदास अरि सुख साज के ॥
चढि-चढि पवन-तुरंगन गगन घन
चाहत फिरत चंद योधा यमराज के ॥

अँखियाँनि मिली सखियाँनि मिली,
पतियान मिली बतियाँ तजि भौने।
ध्यान विधान मिली मनहीं मन
ज्यों मिलै एक मनो मिल सौने।
केशव कैसेहुँ बेगि मिलौ नतु
ह्वै है वहै हरि जौ कछु हौने।
पूरण प्रेम समाधि मिलैं
मिलि जैहै तुम्है मिलि हौ तब कौने ॥

आजु मिले वृषभानु-कुमारिहि
नन्द कुमार वियोग बिते कै।
रूप की राशि रस्यो रस केशव,
हास विलासनि रोस रितै कै।
बागे के भीतर देखि हिये नख,
नैनन वाइ रही सु इतै कै।
फूलहि में भ्रम भूलि मनो
सकुचे सरसीरुह चंद चितै कै।

बूझत ही वह गोपी गुपालहि,
आजु कछू हँसि क गुण गाथहिं।
ऐसे में काहू को नाम सखी कहि
कैसे धौ आइ गयो ब्रजनाथहि।
खाति खवावति ही जु बिरी,
सु रही मुख की मुख हाथ की हाथहि।

आतुर ह्वे उन आँखिन ते अँसुवा,
निकसे अखरानि के साथहि ॥

मोह को सोच न सकोच काहू नीच की को,
पोछो प्यारे पीक-लीक लोचन किनारे की ।
माखन की चोरी की है थोरी थोरी मो हूँ सुधि,
जानत कहा किशोरी भोरी है जु बारे की ।
मेरी ये कुमति और कहा कहौं केशोदास,
लागत न लाल लाज इहाँ पग धारे की ।
गती है भुठाई वाहि अब ही रुठाई,
यह छार हू तो छूटी नहीं पाँइन के पारे की ॥

घेरो जनि मोहि घर जान देहु घनश्याम,
घरिक मे लागी उर देखिबी ज्यों दामिनी ।
होइ कोऊ ऐसी-वैसी आवे इत उत ह्वै के,
वे ऊ वृषभानु जू की बेटी गज-गामिनी ।
आदित को आयो अन्त आवो बनि बलि जाउँ,
आवत है वे ऊ बनि आई अरु यामिनी ।
काम के डरन तुम कुंज गइयो केशोदास,
औरन के भवन भवन गह्यो भामिनी ॥

सुन्दर

मानो भुजंगिन कंज चढी
मुख ऊपर आय रही अलकै त्यौं,
कारी महा सटकारी है सुन्दर,
भीजि रहीं मिल सौधन ही सौं।
लटकी लट वा लटकीली ते और
गई बढिके छवि आनन की यौं
आँक बढं दिये दूजी बिकारी के
होत रुपैयनु तैं मुहरैं ज्यो॥

देखति नैन की कोरन लों
अधरानि ही मे मुसक्यानि कौ थानो।
बोलति बोल सो कंठ ही मे,
चलते पग पै न कहूँ अहरानौ॥
सुन्दर रोष नहीं सपने,
अरु जो भयौ तौ मन ही मे बिलानौ।
है बसुधाए सुधाई सबै,
पर याकी सुधाई सुधाई है मानो॥

कहूँ बनमाल कहूँ गुंजनिकी माल कहूँ,
संग-सखा ग्वाल ऐसे हाल भूलि गये है,
कहूँ मोरचन्द्रिका लकुट कहूँ पीत-पट.
मुरली-मुकुट कहूँ डारि दये है।
कुंडल अडोल कहूँ सुन्दर न बोले बोल,
लोचन अलोल मानौं काहू हर लये है।

घूँघट की ओट ह्वै के चितयो कि चोट करी,
लालन तो लोट-पोट तब ही ते भये हे ॥

सकुची न सखीन सों, सौतिन सो,
सपने हू न सासु की कान कहूँ ।
कुनवान की तीयन सों किहूँ भाँति,
डराए ते हौं न डरी कबहूँ ॥
कहि सुन्दर नन्दकुमार लिए,
तन कौ तनकौ नहि चेन कहू ।
हरि के हित मे तौ करी इतनी,
हरि कीन्ही जु आए नही अजहू ॥

प्रीतम गौनु किधौं जियगौनु कि
भौनु कि भारु भयानक भारो ,
पावस पावक फूल कि सूल
पुरन्दरचाप कि सुन्दर आरो ।
सीरी बयारि किधौं तरवारि है
वारिदवारि कि बान चिपारो
चातक बोल कि चोट चुभै चित,
इन्द्रबधू कि चकोर को चारो ॥

भोर भये मथुरा को चलेंगे
यों बात चली हरि नन्द-ललाकी ,
बोल सकी न सकोचनि तें,
पीरी भई मुखजोति तिया की ।
सुनि हाथ टिकाइ ललाट सौं बैठी
इहै उपमा कवि सुन्दरता की ,
देखै मनो तिय आयुके आखर
और कछ हैं रहे बच बाकी ॥

सोरा सों सवारिके गुलाब माँहि ओरा डारि,
सीतल बयारि हूँ सौं बार बार बरिये,
चैन न परत छिनु चम्पक तैं चन्दन तैं,
चन्द्रमा ते चाँदनी तै चौगुनी के जरिये।
सुन्दर उसीर चीर ऊजरे तैं दूनी पीर,
कमल कपूर कोरि एक ठौर करिये,
एतै मानि बिरहागि उठी तन माँझ लागि,
सोई होति आगि जाइ आगे लाइ धरिये॥

ऊधाजू सँदेसो नाहि कहयो जाइ कहा कहै,
जेसी करी कान्ह तैसी कोऊ न करतु है,
जीभ तो हमारे एक कहाँ लगि कहीं परै,
जी मे जिती कहों तिती क्योंहू ना सरतु है।
द्वारका बसतु हरि सुन्दर समुद्र ही मे,
इहों परवाह जाइ सिन्धु मे परतु है.
जानि हैं वे जमुना के जल ही तैं जाकी ज्वाल,
जलधि मे पर्‌यो बडवानल जरतु है॥

काके गए बसन पलटि आए बसन,
सु मेरो कछू बस न रसन उर लागे हौ।
भौहै निरछौहै कवि सुन्दर सुजान सोहै,
कछू अलसौहै गोहै जाके रस-पागे हौ।
परसौ मै पाँय हुते परसौ मै पाय गहि
परसौ वे पाय निसि जाके अनुरागे हौ।
कौन बनिता के हौ जू कौन बनिता के हौ सु,
कौन बनिता के बनि, ताके संग जागे हौ ?

मुबारक

(अलक-शतक—तिल-शतक)

अलक छुटी लपटी बदन देखो दुति दृग दौरि ।
चढी भाग तैं भाल तिय मनु सिंगार की बौरि ॥

तिय नहात जल अलक तैं चुअत नयन की कोर ।
मनु खंजन-मुख देत अहि अम्मृत पौंछि निचोर ॥

तिल कपोल पर अलक झुकि झलकत ओप अपार ।
मनो मयन के बीच तै उपजी लता सिंगार ॥

अरुन चीर के घूँघटे झलके अलक सुढार ।
मनु सोहाग-सर मै परे रुचि-सेवार-शृंगार ॥

घूँघट प्रीति दुकूल के झलकत अलक सोहाय ।
मनु अनुराग समुद्र मे बिसहरि बिरह नहाय ॥

तिल तरुनी के चिबुक मे सो आरसी अनूप ।
मन मुख दैखे आपनो सूझै काम अनूप ।

तन कंचन हीरा हँसनि बिद्रुम अधर बनाय ।
तिल मनि स्याम जडे तहाँ विधि-जरिया उजराय ॥

बेनी तिरबेनी बनी तहँ मन माघ नहाय ।
इक तिल के आहार तैं सब दिन रैन बिहाय ॥

हास सतो गुण रज अधर तिल तम दुति चितरूप ।
मेरे दृग जोगी भये लये समाधि अनूप ॥

मोहन काजर काम को काम दियो तिल तोहि ।
जब जब अँखियन में परै मोहि लेत मन मोहि ॥

(स्फुट)

कनक-बरन बाल नगन लसत भाल,
मोतिन के माल उर सोहै भली भाँति है।
चन्दमे चढाई चारु चंदमुखी मोहिनी-सी,
प्रात ही अन्हाइ पगु धारे मुसकाति है॥
चुनरी विचित्र स्याम सजि कै मुबारक जू,
ढाँकि नख-सिख ते निपट सकुचाति है।
चन्द्रमै लपेटि कै समेटि कै नखत मानो,
दिन को प्रणाम किये रात चली जाति है॥

कान्ह की बाँकी चितौनि चुभी
झुकि काल्हि ही झाँकी है ग्वालि गवाछनि।
देखी है नोखी-सो चोखी-सी कोरनि,
ओछे फिरे उभरे चित जा छनि।
मार्यो सँभार हिये मै मुबारक,
ये सहजै कजरारे मृगाछनि॥
सींक ले काजर दे री गँवारिन,
आँगुरी तेरी कटेगी कटाछनि॥

हमको तुम एक, अनेक तुम्हैं,
उनहीं के विवेक बनाइ बहौ।
इत चाह तिहारी बिहारी,
उतै सरसाइ के नेह सदा निबहौ।
अब कीबौ मुबारक सोई करौ,
अनुराग-लता जिन बोइ दहौ।
घनस्याम! सुखी रहौ आनद सौं
तुम जीके रहौ, उनही के रहौ॥

किसुक झार कुसुंभित डारि दै,
झार बयारि बहै जो गँबारन।

आग लगी है कहूँ बिन काज,
न मै हूँ सुनी समुझी रित-रागन ॥
तेरी सौ तोहि डरौं मे मुबारक,
सीरी करों सखी पे जलधारन ।
च्वै चलि है चुरियॉ चलि आउ री,
आँगुरियॉ जनि लाउ अंगारन ॥

गूँजेंगे भौर पराग-भरे बन,
बोलेंगे चातक औ पिक गाइ के ।
फूलेंगे टेसू कुसुंभ जहां लगि,
दौरैगो काम कमान चढाइ के ॥
पौन बहैगी सुगंध मुबारिक,
लागेगी ही मे सलाक-सी आइ के ।
मेरो मनायौ न मानैगी भामती,
ऐहे बसंत ले जैहै मनाइ के ॥

अम्ब बसंत मे बौरहिगे अरु,
कामिनि चंदन चीर रंगेहैं ।
डोलेंगे पौन सुगंध मुबारक,
कुंज-लता सों लता लपटैहैं ॥
जोगी जती, तपसी औ सती,
इनकों बिरहानल आन सतैहै ।
ताहि छिना सखि ! प्रान तजौं,
जो पै कंत बसंत के तत न ऐहै ॥

आयौ बसंत अली ! बन तो,
अलि के गन डोलत डंक बगारन ।
काम-ध्वजा किसलै उमगी,
बन कोकिल के गन लागे पुकारन ॥

ऐसे मे कैसे बचैगी मुबारक,
आज किए है सती वै सिगारन।
दौरि पलास की डार चिता चढि,
भूमि पडे निरधूम अँगारन॥

आई सोहाई नई बरषा रितु,
रीझि हमारी कही पिय कीजिऐ।
जैसे ही रग लसे चुनरी पिय,
तैसी ही पाग तुहूँ रग लीजिऐ।
झूला पै झूलहि एक ही सग,
मुबारक एतौ कह्यो पुनि कीजिऐ॥
जैसे लसै घनस्याम सों दामिनि,
तैसे तुम्हारे हिऐं लगि भीजिऐ॥

बाजत नगारे घन, ताल देत नदी नारे,
झींगुरन झाँझ, भेरी भृंगन बजाई है।
कोकिल अलाप चारी, नीलग्रीव नृत्यकारी,
पौन बीन-धारी चाटी चातक लगाई है॥
मनिमाल जुगुनू, मुबारक तिमिर थार,
चौमुख चिराग चारु चपला जराई है।
बालम बिदेस, नए दुख कौं जनम भयौ,
पावस हमारे लायौ बिरह बधाई है॥

—:※||०||※:—

सेनापति

(कवित्त-रत्नाकर)

लाह सों लसति नग सोहत सिगार हार
छाया सोन जरद जुही की अति प्यारी है।
जाकी रमनीय रौस बाल है रसाल बनी
रूप माधुरी अनूप रंभाउ निवारी है।
जाति है सरस सेनापति बनमाला जाहि
सींचै घन रस-फूल-भरी मै निहारी है।
सोभा सब जोवन की निधि है मृदुलता की
राजै नव नारी मानों मदन की बारी है॥

चाहत सकल जाहि रति के अमर है जो
पुजवति हौस उरबसी की बिसाल है।
भली विधि कीनी रस-भरी नव-जोबनी है
सेनापति प्यारे बनमाली की रसाल है।
धरति सुवास पूरे गुन कों निबास अब
फूली सब अंग ऐसी कौन कलिकाल है।
ज्यौं न कुम्हिलाइ कंठ लाइ उर लाइ लीजे
लाई नव-बाल लाल मानो फूल-माल है॥

केस रहैं भारे मित्र-कर-सौं सुधारे तेरे
तोही मॉझ पैयत मधुर अति रस है।
तपति बुझाइबे कौं हिय सियराइबे कों
रंभा तो सरस तेरे तन कों परस है।
आज धाम-धाम पुरइन है कहायो नाम
जाके विहसत मैलौ चंद कौं दरस है।
सेनापति प्यारी तैं ही भुवन की सोभा धारी
तू है पदमिनि तेरौ मुख ताम-स है।

विरह हुतासन बरत उर ताके रहै
बाल मही पर परी भूख न गहति है।
सेवती कुसुम हू तैं कोमल सकल अंग
सून सेज रत काम केलि कौ करति है।
प्रानपति हेत गेह अंग न सुधारे जाके
घरी है बरस तन में न सरसति है
देखौ चतुराई सेनापति कबिताई की जु
भोगिनि की सरि कौ बियोगिनी लहति है॥

राधिका के उर बढ्यो कान्ह को बिरह-ताप
कीने उपचार पै न होति सितलाइयै।
गुरुजन देखि कहा सखिन सौं मन मे की
सेनापति करी है कचन चतुराइयै।
माधव के बिछुरे तैं पल न परति कल
परी है तपति अति मानौ मन ताइयै।
सौं॰ वृखभान की न रहै तो जरनि कछू
छाया घनस्याम की जो पूरे पुन्न पाइयै॥

कुद से दसन घन, कुंदन बरन तन
कुंद सी उतारि धरी क्यौ बनै बिछुरि कै।
सोभा सुख-कद देख्यौ चाहियै बदन-चंद
प्यारी जब मंद मुसकाति नैक मुरि कै।
सेनापति कमल से फूलि रहै अंचल मै,
रहै दृग चचल दुराए हू न दूरि कै।
पलकै न लागै देखि ललकै तरुन-मन
झलकै कपोल रही अलकैं बिथुरि कै॥

चंद दुति मद कीने, नलिन मलिन तैं ही,
तो तैं देव-अंगनाऊ रभादिक तर हैं।

तोसी एक तु ही, और तोसे तेरे प्रतिबिंब,
सेनापति ऐसे सब कबि कहत रहे।
समुझै न वेई, मेरे जान यों कहत जेई,
प्रतिबिंब वेह, तेरे भष निरतर है।
यातें मै बिचारी प्यारी परे दरपन बीच,
तेरे प्रतिबिंबौ पे न तेरी पटतर हैं॥

तेरौ मुख देखे चद देखौ न सुहाइ, अरु
चंद के अछत जाको मन तरसत है।
ऐसे तेरे मुख सों कहत सब कबि ऐसे,
देखौं मुख चद के समान दरसत है।
वे तौ समझै न कछू, सेनापति मेरे जान,
चद तैं मुखारबिंद तेरौ सरसत है।
हँसि हँसि, मीठी मीठी बातें कहि कहि, ऐसे
तिरछे कटाच्छ कब चंद बरसत है॥

छूट्यो ऐबौ जैबौ, पेम पाती कौं पठैबो छूट्यो,
छूट्यो दूरि दूरि हू ते देखिबौ द्दगन ते।
जेते मधियाती सब तिन सौ मिलाप छूट्यौ,
कहिबौ सँदेस हू कौं छूट्यौ सकुचन तें।
एती सब बातें सेनापति लोक-लाज काज
दुरजन त्रास छूटीं जतन-जतन तें।
उर अरि रही, चित चुभि रही देखौ एक
प्रीति की लगनि क्यौं हूँ छूटति न मन तें

फूलन सौ बाल की बनाइ गुही बेनी लाल,
भाल दीनी बैंदी मृगमद की असित है।
अंग अंग भूषन बनाइ ब्रज-भूषन जू,
बीरी निज कर कै खवाई अति हित है॥

ह्वै के रस-बस जब दीबे कौं महाउर के,
सेनापति स्याम गह्यौ चरन ललित है।
चूम हाथ नाथ के लगाइ रही आँखिन सौं,
कही प्रानपति यह अति अनुचित है॥

जौतैं प्रानप्यारे परदेस कौं पधारे तौतैं
बिरह तैं भई ऐसो ता तिय की गति है।
करि कर ऊपर कपोलहि कमल-नैनी
सेनापति अनमनी बैठ्यै रहति है।
कागहि उडावे, कौहू कौहू करै सगुनौती,
कौहूँ बैठि अवधि के बासर गनति है।
पढि पढि पाती कौहू फेरि कै पढति, कौहू
प्रीतम कौं चित्र मे सरूप निरखति है॥

बाल, हरिलाल के वियोग तैं बिहाल, रैनि
बासर बरावै बैठि बर की निसानी सौं।
बोलै? कौन बल? कर चरन चलावै कौन?
रहत है प्रान प्रानपति की कहानी सौं।
लागि रही सेज सौ अचेत ज्यौ, न जानी जाति,
सेनापति बरनत बनत न बानी सौं।
रही इकचक, मानौं जतुर चितेरे तिय
रचक लिखी है कोई कचन के पानी सौं॥

लोल है कलोल पारावार के अपार, तऊ
जमुना लहरि मेरे हिय कौं हरति है।
सेनापति नीकी पटबास हू तें ब्रज-रज,
पारिजात हू तें बन-लता सरसति है।
अंग सुकुमारी, संग सोरह सहस रानी,
तऊ छिन एक पै न राधा बिसरति है।

कंचन अटा पर जराऊ परजक, तऊ
कुजन की सेजे वे करेजे खरकति है ॥

कौनै बिरमाए, कित छाए, अजहूँ न आए,
कैसे सुधि पाऊँ प्यारे मदन गुपाल की।
लोचन जुगल मेरे ता दिन सफल ह्वै हैं,
जा दिन बदन-छवि देखौं नँदलाल की।
सेनापति जीवन-अधार गिरिधर बिन,
और कौन हरै बलि बिथा मो बिहाल की।
इतनी कहत आँसू बहत, फरकि उठी
लहर लहर दृग बाँई ब्रज-बाल की ॥

सरस सुधारी राज-मंदिर मै फूलवारी,
मोर करै सोर, गान कोकिल विराव के।
सेनापति सुखद समीर हैं, सुगध मद,
हरत सुरत-स्रम-सीकर सुभाव के।
प्यारौ अनुकूल, कौहू करत करन-फूल,
कौहू सीसफूल, पाँवडेऊ मृदु पाँव के।
चैत मे प्रभात, साथ प्यारी अलसात, लाल
जात मुसकात, फूल बीनत गुलाब के ॥

वृष कौं तरनि तेज सहसौं किरन करि,
ज्वालन के जाल बिकराल बरसत है।
तचति धरनि, जग जरत झरनि, सीरी
छाँह कौं पकरि पंथी-पंछी बिरमत है।
सेनापति नैंक दुपहरी के ढरत, होत
धमका विषम, ज्यौं न पात खरकत है।
मेरे जान पौनौं सारी ठौर कौ पकरि कौनौं,
घरी एक बैठि कहूँ घामै बितवत है ॥

दूरि जदुराई, सेनापति सुखदाई देखौ,
आई रितु पाउस, न पाई प्रेम, पतियाँ।
धीर जलधर की, सुनत धुनि धरकी, है
दरकी सुहागिल की छोह भरी छतियाँ।
आई सुधि बर की, हिये मे आनि खरकी तू
मेरी प्रानप्यारी यह पीतम की बतियाँ।
बीती औधि आवन की, लाल मन-भावन की
डग भई बावन की, सावन की रतियाँ॥

सारग धुनि सुनावै घन रस बरसावैं,
मोर मन हरषावै, लागै अति अभिराम है।
जीवन-अधार बडी गरज करन हार,
तपति-हरनहार देत मन काम है।
सीतल सुभग जाकी छाया जग, सेनापति,
पावत अधिक तन-मन बिसराम है।
सपै संग लीने सनमुख तेरे बरसाऊ,
आयौ घनस्याम सखि मानौ घनस्याम है॥

सूरे तजि भाजी, बात कातिक मौं जब सुनी,
हिम की हिमाचल तैं चमू उतरति है।
आए अगहन, कीने गहन दहन हू कौं,
तित हू तैं चली, कहूँ धीर न धरति है।
हिय में परी है हूल दौरि गहि, तजी तूल,
अब निज मूल सेनापति सुमिरति है।
पूस मे त्रिया के ऊँचे कुच-कनकाचल मे,
गढ़वै गरम भई, सीत सौं लरति है॥

सिसिर मे ससि कौं सरूप पावे सबिताऊ,
घाम हू मैं चाँदनी की दुति दमकति है।

सेनापति होत सीतलता (?) है सहस गुनी,
रजनी की झाँई बासर (?) मे झमकति है।
चाहत चकोर, सूर ओर दृग-छोर करि,
चकवा की छाती तजि धीर धसकति है।
चंद के भरम होत मोद है कमोदनी कों,
ससि-अंक पंकजिनी फूलि न सकति है॥

सिसिर तुषार के बुखार से उखारत है,
पूस बीते होत सून हाथ-पाइ ठिरि कै।
द्यौस की छुटाई की बडाई बरनी न जाइ,
सेनापति पाई कछू सोचि कै सुमरि कै:
सीत तैं सहस-कर सहस-चरन ह्वै कै,
ऐसे जात भाजि तम आवत है घिरि कै।
जौ लौं कोक कोकी कौ मिलत तौ लौ होति राति,
कोक अधबीच ही तै आवत है फिरि कै॥

अब आयौ माह प्यारे लागत है नाह, रवि
करत न दाह, जैसौ अवरेखियत है।
जानिये न जात, बात कहत बिलात दिन,
छिन सौं न तातैं तनको बिसेखियत है।
कलप सी राति, सो तौ सोए न सिराति क्योंहू
सोइ सोइ जागे पै न प्रीत पेखियत है।
सेनापति मेरे जान दिन हू तै राति भई,
दिन मेरे जान सपने मै देखियत है॥

कब दिन दूलह के अरुन-बरन पाइ,
पाइहौ सुभग, जिनै पाइ पीर जाति है।
ऐसे मनोरथ, माह मास की रजनि, जिन
ध्यान सौ गवाँई, आन प्रीति न सुहाति है।

सेनापति ऐसी पदमिनी कौं दिखाइ नैंक,
दूरि ही तै दे कै, जात होन इहि भाँति है।
कछू मन फूली रही, कछू अनफूली, जेसे
तन मन फूलिबे की साध न बुझाति हे।

परे त तुसार, भयौ झार पतझार, रही
पीरी सब डार, सो वियोग सरसति है!
बोलत न पिक, सोइ मौन ह्वै रही है, आस—
पास निरजास, नेन नीर बरसति हे।
सेनापति केली बिन, सुनरी सहेली! माह
मास न अकेली बन-बेली बिलसति है।
बिरह तैं छीन तन, भूषन-बिहीन दीन,
मानहुँ बसंत-कंत काज तरसति है॥

तब न सिधारी साथ, मीडति हे अब हाथ,
सेनापति जदुनाथ बिना दुख ए सहैं।
चले मन-रंजन के, अंजन की भूलि सुधि,
मंजन की कहा उनही के गूँदे केस हैं।
बिछुरे गुपाल, लागे फागुन कराल, तातै
भई है बिहाल, अति मैले तन-भेस हैं।
फूल्यो है रसाल, सो तौ भयौ उर साल, सखी
डार न गुलाल, प्यारे लाल परदेस हैं।

नवल किसोरी भोरी केसरि तैं गोरी, छैल
होरी मैं रही है मद जोबन के छकि कै।
चपै कैसी ओज, अति उन्नत उरोज पीन,
जाकै बोझ खीन कटि जाति है लचकि कै।
लाल है चलायौ, ललचाई ललना कौं देखि,
उघरारौ उर, उरबसी ओर तकि कै।

सेनापति सोभा को समूह कैसे कह्यो जात,
रह्यो है गुलाल अनुराग सों झलकि कै।

सीता अरु राम, जुवा खेलत जनक-धाम,
सेनापति देखि नैन नैकहू न मटकै।
रूप देखि देखि रानी, वारि फेरि पियै पानी,
प्रीति सौं बलाइ लेत कैयो कर चटकै।
पहुँची के हीरन मे दंपति की झाँई परी,
चंद विवि मानौ मध्य मुकुट निकट कै।
भूलि गयौ खेल, दोऊ देखत परसपर,
दुहुन के दृग प्रतिबिंबन सों अटके॥

—:o:—

चिंतामणि त्रिपाठी

इक आजु में कुंदन बेलि लखी,
मनिमंदिर की रुचि वृंद भरें।
कुरविंद के पल्लव इंदु तहाँ,
अरविंदन तें मकरंद झरै।
उत बुन्दन के मुकुतागन ह्वै,
फल सुन्दर भ्वै पर आनि परै।
लखि यौं दुति-कंद अनंद-कला,
नंदनंद सिलाद्रव रूप धरै॥

राधा जू के अंग-संग रुचि त्यो रुचिर बासु
गुलाबन के रंग रुचि सौरभनि सौं भरी।
चितहि चुरावति सु कोकिल की बानी लगी
कानन चितौनि प्रेम-मदकी मनौ झिरी।
चिन्तामनि सो ही है रसाल मोरे कुंजनि मै
अलिन के पुंजन सु मानौ मुनिआ चिरी॥
बातन के बीच तरुनाई आई सिसिर मे
माघ सुदी पंचमी मे ज्यों बसंत की सिरी॥

कोकिल कूक सुने उमगै मनि
और सुभाव भयो अब ही को।
फूली लता द्रुम-कुंज सुहात
लगै अलि गुंजत भावत जी को॥
कारन कौन भयो जननी यहु,
खेल लगै गुडियान को फीको।
काहे ते साँवरो अंग छबीलौ
लगै दिन द्वैक तै नैनानि नीको॥

बाँकी भईं भृकुटी बिन कारन,
लोचन कानन आनि रहे हैं।
छाती कछु उचकी बिन ठौर,
बॅकी चितवे इक भाउ लहे है।
पॉइ उठाइ धरै गरुए मनि,
बैन सकोच न जात कहे है।
मौनहि मौन विचार करै
मेरे अंगनि कौन सुभाव गहे है॥

काहू को पूरब पुन्य लता सु तौ
बेलि अपूरब तू उलही है।
सोने सो जाको स्वरूप सबे
कर-पल्लव काति कहा उमही है।
फूल हॅसी फल है कुच जाहि के
हाथ लगै सुकृती सो सही है।
आली की यौं सुनिकै बतिया,
मुसक्याइ तिया मुख नाइ रही है॥

केसरि बारहि बार उतारत,
केसरि अंग लगावनि लागी।
आई है नैननि चंचलता
दृग अंचल बाम छपावनि लागी।
दूलह के अवलोकन को
वा अटानि झरोखन आवनि लागी।
द्योस दो तीनक ते बतिया,
मन-भावन की मन भावन लागी।

कहुँ किसुक-फूल-फलानि सों पूजत
शंभु, लखे वृषभान हरी।

मुसक्याति कछू मनि डीठि सखी की,
सुबाल- उरोजन बीच परी।
अँसुवान बिलोचन पूरि रही,
सु बिसूरति सी कछु आध घरी।
तब कौल-कली से दुऔ कर जोरि,
तिया नित शंकर ओर करी॥

मोही है ग्वाल गुपाल लखे
बृजबाल कछूक न भेदन पावे।
बोलै न बोल ठगी-सी लखै मनि
मैन के बानहि यों अकुलावे।
रोमन अंग कदंब कली,
मन मै घनस्याम की यों छवि छावै।
सारति मंद कपोल हँसी
उमगै अँसुओं अखियाँ भरि आवै॥

देखै न क्यौ सुख मानिं घनौ मन,
जा सुख मान कौ सोर भयौ है।
साँवरौ सुन्दर जो सिगरी
ब्रज-नारिन कौ चित चोर लयौ है।
आपुने आइ अटा में भटू,
घनघोर घटान कौ मोर भयौ है।
नंद-किसोर झरोखे की ओर
सु तो मुख-चद-चकोर भयौ है॥

बाल के मिलन आस गए चित्र-साल लाल
ललकत पल एक धीरज न ठहरै।
सखी सब ल्याईं नवला को छल-बल,
लखि-छबीलौ छबीली के सकल अंग हहरै।

करी जोरावरी प्यारी सखी सेज ऊपर,
सु आँखिन के ऊपर ह्वै आँस यो ढरहरै।
चारु-कोस-मध्य मधुकर अकुलाने मानौ
छलकी सरोजन के ऊपर है लहरै॥

वैस की उठौन ठौन रूप की अनूप, कान्ह,
अंग-अंग औरै कछु ओप उलहति है।
चिंतामनि चचला विलास वो रसाल नैन
मदन के मद और आभा उमहति है।
कुंदन की बेली-सी नबेली अलबेली बाल
केतिक गरब की सो गौरता गहति है।
उझकि झरोखे तुम्हे चाहिबे कौ चंदमुखी
द्यौसहू मे चंद्रिका पसारति रहति है॥

रास को बिलास देखि, चिंतामनि, धुनि सुनि–
मेखला की, झनक नूपुर बिछियन की।
चद्रमुखी चन्द्रिका पसारी आनि अवनि मे
देखत जो धन्य दसा ताही के जियन की।
तुम्है देखि प्यारी ऐसी मगन भई है, जाते
दरकि गई है तनी अंगिया सियन की।
देखौ लला ललित छबीली ऐसो नीकी बनी
आवति जु फीकी करै दीपति दियन की॥

बाजे जब बाजे महा मधुर नगर बीच
नागरि निखिल ललकनि अकलाई हैं।
चिंतामनि कहै अति परम ललित रूप
अटा पर दूलह बिलोकन को आई हैं।
फैलि महलनि मनि-मेखला झनक महा
मनि-नूपुरन की निनादन की झाँई हैं।

पहिले उज्यारी तन-भूषन-मयूषन की
पाछे ते मयक-मुखी झरोखन आई हैं ॥

अवलोकनि मैं पलकै न लगे,
पलकौ अवलोकि बिना ललकै।
पति के परिपूरन प्रेम पगी,
मन और सुभाव लगै न लकै।
तियकी विहँसौही विलौकनि मे,
मनि आनद आँखनि यो झलकै।
रसवंत कवित्तन कौ रसु ज्यो
अखरान के ऊपर ह्वै छलकै ॥

चैत की चाँदनी कैधौ चंद अवलोकन ते
छीरनिधि छीर के पूरन-पूर उमगे।
चिन्तामनि कहै मन आनद मगन ह्वै कै
बिहरत दंपती परम प्रेम सौं पगे।
अधखुली अखियाँ सुरति-सुख रसबत
मानौ भौंर अधखुले कमलनि मे खगे।
प्यारी के सकल तन श्रम-जल-बिन्द सोहैं
कनक-लता मै मुकता-फल मनो लगे ॥

तुही धन, तुही प्रान, तोही में हरी को मन
तेरे ही रिझाइबे की रीति मे प्रवीन हैं।
चितामनि चिता नित उन्हें लगी तेरी रहै
तेरे ही बिरह खिन खिन होत खीन है।
ठीक जु न कीजै ठकुरायनि इतैक हठ,
छोड दीजै, तेरे बृज-ठाकुर अधीन हैं।
तू है पी के नैन-अरबिदन की इंदिरा,
औ पी के नेन तेरे तनु-पानिप के मीन हैं ॥

गूँधति है मानौ मुकताहल के हार वह
चारु नीर-नैननि की धार यो ढरति है।
अरुन अधर कहि काहे को दुखित करै
कौन हेतु आजु ऊंची सॉसन भरति है।
अचल ह्वै रही केलि-मंदिर मे चिन्तामनि
सघन बदन चंद चद्रिका परति है।
बैठी कत आजु कर कमल कपोल धरि
ध्यान तू कमल-नैनी कौन को करति है॥

वा मनि- मदिर की छवि-वृंद
छपाकर की छवि-पुंजनि पोख्यो।
पाइ के स्वच्छ मनोहर चॉदनी,
चापु लै मैन महा बल रोख्यो।
सुंदरि के मुख-चंद को छॉडि,
चकोरन चंद-मयूखन चोख्यो।
चद-सिलानि तै नीरु झरयो,
सु सबै तिय को बिरहागिनि सोख्यो॥

कहॉ जागे रैन आये निपट उनींदे हौ जू,
सोइ रहौ प्यारे बिछ्यौ आछौ परंजक है।
खेलत हे चॉदनी मे ग्वालन के संग कहूँ,
काहू ग्वाल ही को नाम लीजे कहा संक है।
यो ही भलेमानसै लगावती कलंक हौ
वो देख्यो कहूँ चितामनि रतिहू को अंक है।
पीत रंग अम्बर सो भयो नील रंग, लाल,
झूठी हौं गोपाल तुम्हैं काहे को कलंक है॥

राति रहे मनि लाल कहूँ रमि
ह्यॉ दुख बाल वियोग लहे हैं।

आए घरें अरुनोदय होत,
सरोस तिया इम बैन कहे हैं।
लाल भये द्दग-कोरनि आनि कै
यो अँसुवान के बुन्द रहे हैं।
चोचन चोप मनौ सिथिलै
बिच खजन दाडिम-बीज गहे हैं ॥

आन-बधू- रति- -चिन्ह धरे इत,
प्रातहि प्रीतम आगम कीन्हो।
आली के हाथ मे आरसी दै मनि
नोल बधू भजि भीतर लीन्हो।
बोली सखी यह रूप की रेख
कहाँ यह वेप उपद्रव कीन्हो।
या मृग-नैनी पत्यानी मृगी को
कहा चित लाभ यों काहिल कीन्हो ॥

साँझ तें चद कलक ज्यौ,
मन मेरो लै साथ रहे तुम न्यारे।
बैठि बची मनि-मंदिर बीच,
लगे तब दीप--प्रकास अँध्यारे ॥
प्रानहि पाइ सुधामय पारनौ,
नैन-चकोर छके, मे सुखारे।
क्यों न अनूप कला प्रगटौ,
अकलंक कलानिधि मोहन प्यारे ॥

बोलत काहे न बोल सुनें,
मधुरी बतियाँ मनमोहन भाखै।
बोलै कहा, कछु चित्त मे ह्वै दुख,
पित्त बढे कटु लागती दाखै ॥

ठाडे है लाल, न्रिलोकै न बाल क्यो,
तेरी बिलोकनि को अभिलाखैं।
लाल भई' बिन काजहि आजु ए,
देखौ कहा, मेरी दूखती आँखै ॥

सरद ससी तैं अधससी ह्‌वै बची हौ,
कवि चितामनि तिमि हिमि सिसिर झमक तै।
मारत मरूके बची बधिक बसंत हू तै,
पावक प्रचार बची, ग्रीषम तमक त।
आयौ पापी पावस ये, प्रान अकुलान लाग्यौ,
भयौ री असान घोर घन के घमक तैं।
ताप तै तचौगी, जो पै अमिय अचौगी आली।
अब न बचौगी चपलान की चमक तैं॥

ओढै नील सारी घन-घटा कारी चितामनि,
कंचुकी किनारी चारु चपला सुहाई है।
इंद्रबधू जुगुनू जवाहिर की जगी जोति,
बग-मुकतान माल, कैसी छबि छाई है।
लाल पीत सेत बर बादर बसन तन,
बोलत सु भृंगी, धुनि-नूपुर बजाई है।
देखिबे को मोहन नवल नट-नागर को,
बरषा नवेली अलबेली बनि आई है॥

यों मन बैठी बिसूरति ही मधु मै
अब हौं न बचौंगी अनंग सों।
पीउ अचानक आइ गयो,
सु पराय गयौ सिगरो दुख अंग सौं।
बाहिर भीतर पूरन ऐसो
भयो घट मेरौ अनंद-उमंग सों।

पूर उमंग भगीरथ के तप,
जैसे बिरंचि-कमंडल गंग सों ॥

को महा मूढ छबली के अंगन
जाय पर्यौ ज्यौं ससारौ बहीर मैं।
ठानै अठान अधीन जो आपते
ताहि को आनि सकै पुनि तीर मैं।
जोबन पूर बिलासन रंग
उठै मन मोद उमंग समीर मै।
सैल-उरोज तै कूदि पर्यो मनु
जाइ प्रभा-नदि-भौंर गँभीर मै ॥

बिहारी

मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परै स्यामु हरित-दुति होइ ॥

या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहि कोइ।
ज्यौ ज्यौं बूडै स्याम रँग, त्यौं त्यौं उज्जलु होइ ॥

तजि तीरथ,हरि राधिका तन-दुति करि अनुरागु।
जिहि ब्रज-केलि-निकुंज-मग पग-पग होतु प्रयागु ॥

नाचि अचानक ही उठे बिनु पावस बन मोर।
जानति हौ, नदित करी यह दिसि नंदकिसोर ॥

सोहत ओढे पीत पट स्याम सलोने गात।
मनौ नीलमनि-सैल पर आतपु पर्यौ प्रभात ॥

अधर धरत हरि कै, परत ओठ डीठि पट-जोति।
हरित बाँस की बाँसुरी इन्द्र-धनुष-रँग होति ॥

अंग-अंग नग जगमगत दीपसिखा सी देह।
दिया बढाऐं हू रहै बडौ उज्यारौ नेह ॥

छुटी न रिसुता की झलक, झलक्यौ जोबनु अंग।
दीपति देह दुहूनु मिलि दिपति ताफता-रंग ॥

दुरत न कुच बिच कंचुकी चुपरी, सारी सेत।
कबि आँकनु के अरथ लौं प्रगटि दिखाई देत ॥

मिलि चंदन-बैंदी रही गोरैं मुँह, न लखाइ।
ज्यौं ज्यौं मद लाली चढै, त्यौं त्यौं उघरति जाइ ॥

तू रहि,हौं हीं सखि लखौ,चढि न अटा बलि बाल।
सबहिनु बिनु हीं ससि-उदै दीजतु अरघु अकाल ॥

ललित स्याम लीला, ललन, बढी चिबुक छबि दून ।
मधु-छाक्यौ मधुकरु पर्यौ मनौ गुलाब-प्रसून ॥

भूषन-भारु सँभारिहै क्यौं इहि तन सुकुमार ।
सूधे पाँइ न धर परैं सोभा ही कै भार ॥

लिखन बैठि जाकी सबी गहि गहि गरब गरूर ।
भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर ॥

मानहु बिधि तन-अच्छ-छबि स्वच्छ राखिबैं काज ।
दृग-पग पौंछन कौ करे भूषन पायदाज ॥

अरुन-बरन तरुनी-चरन- अँगुरी अति सुकुमार ।
चुवत सुरँगु रँगु सी मनौ चपि बिछियनु कै भार ॥

गडे, बड़े छबि-छाक छकि छिगुनी छोर छुटै न ।
रहे सुरँग रँग रँगि उहीं नहदी महदी नैन ॥

छिप्यौ छबीलौ मुँह लसै नीलै अँचर चीर ।
मनौ कलानिधि झलमलै कालिंदी कैं नीर ॥

अनियारे, दीरघ दृगनु किती न तरुनि समान ।
वह चितवनि औरै कछू जिहि बस होत सुजान ॥

सटपटाति सैं ससिमुखी मुख घूँघट-पटु ढाँकि ।
पावक-झर सी झमकि कै गई झरोखा झाँकि ॥

मोहि भरोसौ, रीझिहै उझकि झाँकि इक बार ।
रूप-रिझावनहारु वह, ए नैना रिझवार ॥

मुँहुँ धोवति, एडी घसति, हँसति, अनगवति तीर ।
धसति न इंदीबरनयनि कालिंदी कैं नीर ॥

मिलि परछाँही जोन्ह सौं रहे दुहुनु के गात ।
हरि राधा इक संग हीं चले गली महि जात ॥

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात ।
भरे भौन मै करत है नैननु हीं सब बात ॥

लखि गुरुजन-बिच कमल सौं सीसु छुवायौ स्याम ।
हरि-सनमुख करि आरसी हियैं लगाई बाम ॥

सतर भौह, रूखे बचन, करति कठिनु मनु नीठि ।
कहा करौं, ह्वै जात हरि हेरि हँसौंही डीठि ॥

छूटत मुठिनु सँग ही छुटी लोक-लाज, कुल-चाल ।
लगे दुहुनु इक बेर ही चल चित, नैन, गुलाल ॥

ललन चलनु सुनि पलनु मे अँसुवा झलके आइ ।
भई लखाइ न सखिनु हूँ झूठैं हीं जमुहाइ ॥

नासा मोरि, नचाइ जे करी कका की सौह ।
काँटे सी कसकति हियैं गडी कँटीली भौह ॥

दीप उजेरैं हू पतिहि हरत बसनु रति काज ।
रही लपटि छबि की छटनु, नैंकौ छुटी न लाज ॥

बतरस-लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ ।
सौंह करैं भौहनु हँसै, दैन कहैं नटि जाइ ॥

भौंहनु त्रासति मुँह नटति आँखिनु सौं लपटाति ।
ऐंचि छुडावति करु, इँची आगैं आवति जाति ॥

रस भिजए दोऊ दुहुनु तउ टिकि रहे, टरैं न ।
छबि सौं छिरकत प्रेम-रँगु भरि पिचकारी नैन ॥

रहैं निगोडे नैन डिगि गहैं न चेत अचेत ।
हौं कसुकै रिस के करौं, ये निसुके हँसि देत ॥

मुखु उघारि पिउ लखि रहत रहयौ न गौ मिस-सैन ।
फरके ओठ, उठे पुलक, गए उघरि जुरि नैन ॥

मैं मिसहा सोयौ समुझि, मुँहु चूम्यौ ढिग जाइ।
हँस्यौ, खिसानी, गल गह्यौ, रही गरैं लपटाइ॥

डिगत पानि डिगुलात गिरि लखि सब ब्रज बेहाल।
कपि किसोरी दरसि कै, खरैं लजाने लाल॥

कागद पर लिखत न बनत, कहत सँदेसु लजात।
कहिहै सबु ते‹। ।हयौ मेरे हिय की बात॥

चलत चलत लौं लै चले सब सुख सग लगाइ।
·ीषम बासर सिसिर-निसि प्यौ मो पास बसाइ॥

दृग उरझत, टूटत कुटुम, ज‹त चतुर चित प्रीति।
परति गाँठि दुरजन हियैं, दई, नई, यह रीति॥

उडति गुडी लखि ललन की अँगना अँगना माँह।
बौरी लौं दौरी फिरति छवति छबीली छाँह।

क्यौं बसियै, क्यौं निबहियै, नीति नेह पुर नाँहि।
लगालगी लोइन करैं, नाहक मन बधि जाँहि॥

अपनी गरजनु बोलियतु, कहा निहोरौ तोहि।
तू प्यारौ मो जीय कौ मो ज्यौ प्यारो मोहि।

त्यौं त्यौ प्यासेई रहत ज्यौं ज्यौं पियत अघाइ।
सगुन सलोने रूप की जु न चख-तृषा बुझाइ॥

बाम बाँह फरकति, मिलैं जौ हरि जीवन मूरि।
तौ तोही सौं भेटिहौं राखि दाहिनी दूरि॥

बिछुरैं जिए, सकोच इहि बोलत बनत न बैन।
दोऊ दौरि लगे हिय किए लजौहै नेन॥

पिय के ध्यान गही गही रही वही ह्वै नारि।
आपु आपु ही आरसी लखि रीझति रिझवारि॥

इन दुखिया अँखियानु कौ सुख सिरज्यौई नाँहि।
देखै बनै न देखतै, अनदेखै अकुलाँहि॥

नभ लाली, चाली निसा, चटकाली धुनि कीन।
रति पाली आली अनत, आए बनमाली न॥

बाल, कहा लाली भई लोइन-कोइनु माँह।
लाल, तुम्हारे दृगन की परी दृगनु मैं छाँह॥

बिथुर्‌यौ जावकु सौति-पग निरखि हँसी गहि गाँसु।
सलज हँसौही लखि लियौ आधी हँसी उसाँसु॥

जिहि भामिनि भूषन रच्यो चरन-महावर भाल।
उही मनौ अँखियाँ रँगी ओठनु कैं रँग, लाल॥

बामा, भामा, कामिनी कहि बोलौ, प्रानेस।
प्यारी कहत खिसात नहि पावस चलत बिदेस।

अजौं न आए सहज रँग बिरह-दूबरैं गात।
अब हीं कहा चलाइयति, ललन, चलन की बात॥

हौं हीं बौरी बिरह-बस, कै बौरौ सबु गाउँ।
कहा जानि ए कहत है ससिहि सीतकर नाउँ॥

स्याम-सुरति करि राधिका, तकति तरनिजा-तीरु।
अँसुवनु करति तरौंस कौ खिनकु खरौंहौ नीरु॥

रह्यौ ऐंचि, अंतु न लहै अवधि-दुसासनु-बीरु।
आली, बाढतु बिरहु ज्यौं पंचाली कौ चीरु॥

बिरह-बिकल बिनु ही लिखी पाती दई पठाइ।
आँक-बिहूनीयौ सुचित सूनैं बाँचत जाइ॥

मरिबे कौ साहसु ककै बढै बिरह की पीर।
दौरति ह्वै समुही ससी, सरसिज, सुरभि-समीर॥

पलनु प्रगटि, बरुनीनु बढ़ि, नहिं कपोल ठहरात ।
अँसुवा परि छतिया, छिनकु छनछनाइ, छिपि जात ॥

मृगनैनी दृग की फरक, उर-उछाह तन-फूल ॥
बिन ही पिय आगम उमगि, पलटन लगी दुकूल ॥

जद्यपि सुन्दर, सुघर, पुनि सगुनौ दीपक-देह ।
तऊ प्रकासु करै तितौ, भरियै जितै सनेह ॥

नहि परागु, नहि मधुर मधु, नहि बिकासु इहि काल ।
अली, कली ही सौ बध्यौं, आगैं कौन हवाल ॥

स्वेद-सलिलु, रोमाच-कुसु गहि दुलही अरु नाथ ।
दियौ हियौ सँग हाथ कै हथलेयैं ही हाथ ॥

मानहु मुँह-दिखरावनी दुलहिहि करि अनुरागु ।
सासु सदनु मनु ललन हूँ, सोतिनु दियौ सुहागु ॥

रनित भृंग-घंटावली, झरति दान मधु नीरु ।
मद मंद आवतु चल्यौ कुंजरु कुंज-समीरु ॥

चुवतु स्वेद मकरंद-कन, तरु-तरु-तर बिरमाइ ।
आवतु दच्छिन देस तैं थक्यौ बटोही बाइ ॥

सघन कुंज-छाया सुखद सीतल सुरभि-समीर ।
मनु ह्वै जातु अजौं वहै वाहि जमुना के तीर ॥

बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन तन माँह ।
देखि दुपहरी जेठ की छाँहौ चाहति छाँह ॥

कहलाने एकत बसत अहि मयूर, मृग बाघ ।
जगतु तपोवन सौ कियौ दीरघ-दाघ निदाघ ॥

अरुन सरोरुह-कर-चरन, दृग-खंजन, मुख-चंद ।
समै आइ सुन्दरि सरद काहि न करति अनंद ॥

छकि रसाल-सौरभ, सने मधुर माधुरी-गंध ।
ठौर ठौर झौंरत झँपत भौंर झौंर मधु-अंध ॥

मतिराम

क्यो इन आँखिन सों निरसंक ह्वै,
मोहन को तन-पानिप पीजै।
नेकु निहारैं कलंक लगै,
इहि गाँव बसै कहौ कैसे के जीजै।
होत रहै मन यों 'मतिराम',
कहूँ बन जाय बडो तप कीजै।
ह्वै बनमाल हिए लगिए
अरु ह्वै मुरली अधरा-रस लीजै॥

गुच्छनि के अवतंस लसै सिर
पच्छन अच्छ किरीट बनायो।
पल्लव लाल समेत छरी,
कर-पल्लव सों 'मतिराम' सुहायो।
गुंजनि के उर मंजुल हार,
निकुंजनि तैं कढि बाहर आयो।
आज को रूप लखै नँदलाल को,
आजुहि नैननि को फल पायो॥

मोर पखा 'मतिराम' किरीट मैं,
कंठ बनी बनमाल सुहाई।
मोहन की मुसकानि मनोहर,
कुंडल डोलनि मै छबि छाई।
लोचन लोल बिसाल बिलोकनि,
को न बिलोकि भयो बस माई।
वा मुख की मधुराई कहा कहौं?
मीठी लगै अँखियान लुनाई॥

आनन-पूरनचंद लसै,
अरविंद-बिलास-बिलोचन पेखे।
अंबर पीत लसै चपला,
छबि अंबुद मेचक अंग उरेखे।
काम हूँ तै अभिराम महा,
'मतिराम' हिए निहचै करि लेखे।
तें बरनें निज बैनन सौं,
सखि, मै निज नेनन सों जन देखे॥

मोर-पखा 'मतिराम' किरीट,
मनोहर मूरति सो मनु लैगो।
कुंडल डोलनि, गोल कपोलनि,
बोल सनेह के बीज-से बेगो।
लाल बिलोचनि-कौलन सौं,
मुसुकाइ इतें अरुझाइ चितेगो।
एक घरी घन-से तन सौं,
अँखियान घनों घनसार सौ दैगो॥

कुंदन को रँगु फीको लगै,
झलकै अति अंगन चारु गुराई।
आखिन मे अलसानि,
चितौनि मे मंजु बिलासन की सरसाई।
को बिन मोल बिकात नही,
'मतिराम' लहैं मुसकानि-मिठाई।
ज्यों-ज्यों निहारिए नेरे ह्वै नैननि,
त्यो-त्यो खरी निकरै-सी निकाई॥

बानी को बसन कैधों बात के बिलास डोलै,
कैधों मुखचंद चारु चंद्रिका प्रकास है

कबि 'मतिराम' कैधौं काम को सुजस ?
कै पराग-पुंज- प्रफुलित-सुमन सुबास है।
नाक नथुनी के गजमोतिन की आभा कैधौं ?
देहवत प्रगटित हिए को हुलास है।
सीरे करिबे कों पिय-नैन घनसार कैधौं ?
बाल के बदन बिलसत मृदु हास है॥

कब की हौं देखनि चरित्र निज आँखिन सौं
राधिका रसीली स्याम रसिक रसाल के।
'मतिराम' बरनै दुहूनि के मुदित अति.
मन भए मीन-से अमृतमय ताल के।
इकटक देखै लिए ब्रत-से निमेखनि के,
नेम किए मानौं पूरे प्रेम प्रतिपाल के।
लाल- मुख-इन्द नैन बाल के चकोर,
बाल-मुख-अरबिंद चंचरीक नैन लाल के॥

वारने सकल एक रोरी ही की आड पर,
हा हा न पहरि आभरन और अंग मे।
कबि 'मतिराम' जैसे तीछन कटाछ तेरे,
ऐसे कहाँ सर हैं अनंग के निखंग मे।
सहज सुरूप सुघराई रीझो मन मेरो,
डोलत है तेरी अद्भुत की तरंग मे।
सेत सारी ही सौं सब सौतें रंगी स्याम रंग,
सेत सारी ही सौं रँगे स्याम लाल रंग मे॥

खेलन चोर-मिहींचनि आजु,
गई हुती पाछिले धौस की नाईं।
आली कहा कहौं एक भई,
'मतिराम' नई यह बात तहाँईं।

एकहि भौन दुरे इक संग ही,
अंग सों अंग छुवायो कन्हाई।
कंप छुट्यो, घन स्वेद बढ्यो,
तनु रोम उठ्यो, अँखियाँ भरि आई॥

गौने के द्यौस सिंगारन को
'मतिराम' सहेलिन को गनु आयौ।
कंचन के बिछिआ पहिरावत,
प्यारी सखी परिहास बढायौ।
"पीतम स्रौन समीप सदा बजैं,"
यौं कहि कै पहिले पहिरायौ।
कामिनी कौल चलावनि कौं,
कर ऊँचो कियौ पै चल्यो न चलायौ॥

प्रान-पिया मन भावन संग,
अनंग-तरंगनि रंग पसारे।
सारी निसा 'मतिराम' मनोहर,
केलि के पुंज हजार उघारे।
होत प्रभात चल्यौ चहै प्रीतम,
सुन्दरि के हिय में दुख भारे।
चंदसो आनन, दीप सी दीपति,
स्याम सरोज-से नैन निहारे॥

सोने की-सी बेली अति सुन्दर नबेली बाल,
ठाडी ही अकेली अलबेली द्वार महियाँ।
'मतिराम' आँखिन सुधा की बरखा सी भई,
गई जब दीठि वाके मुखचंद पहियाँ।
नेकु नीरे जाय करि बातनि लगाय करि,
कछु मन पाय हरि वाकी गही बहियाँ।

चैनन चरचि लई सैनन थकित भई,
नैनन मैं चाह करै बेनन मै नहियाँ ॥

जमुना के तीर बहै सीतल समीर तहाँ,
मधुकर करत मधुर मद सोर है।
कबि 'मतिराम' तहाँ छबि सौ छबीली बैठी,
अंगन ते फैलत सुगध के झकोर है।
पीतम बिहारी की निहारिबे को बाट ऐसी,
चहूँ ओर दीरघ दृगनि करी दौर है।
एक ओर मीन मनो, एक ओर कुंज-पुंज,
एक ओर खंजन, चकोर एक ओर है॥

अंगन मे चदन चढाय घनसार सेत,
सारी छीर-फेन की सी आभा उफनाति है।
राजत रुचिर रुचि मोतिन के आभरन,
कुसुम कलित केस सोभा सरसाति है।
कबि 'मतिराम' प्रानप्यारे सौं मिलन जात,
करि कै मनोरथनि मृदु मुसकाति है।
होति न लखाई निसि- चद की उज्यारी
मुख-चद की उज्यारी तन छाँहो छिप जाति है॥

सारी जरतारी की झलक झलकति तैसी,
केसरि को अंगराग कीनो सब तन मे।
तीखनि तरनि के किरन तै दुगुन जोति,
जगत जवाहर जटित आभरन में।
कबि 'मतिराम', आभा अंगनि अँगारनि की
धूम की-सी धार छबि छाजती कचन मे
ग्रीषम-दुपहरी मे हरि कौं मिलन जात,
जानी जात नारि न दवारि-जुत बन मे॥

राँझ ही सिंगार सजि प्रानप्यारे पास जाति,
बनिता बनक बनी बेलि-सी अनंद की।
कबि मतिराम कल किंकनि की धुनि बाजै,
मंद-मंद चलनि बिराजत गयंद की।
केसरि रँग्यो दुकूल, हाँसी मे झरति फूल,
केसनि मे छाई छबि फूलन के बृन्द की।
पीछे-पीछे आवत अँधेरी सी भँवर-भीर,
आगे-आगे फैलत उजारी मुखचंद की।

लालन मे रति-नायक ते सुभ,
सुन्दरता रुचि कुंजन पेखी।
बाल मे त्यों मतिराम कहै,
रति तें अति रूप कला अवरेखी।
सामुहि बैठी लखे इक सेज मे,
बोल अली सुख प्रीति बिसेखी।
भाल मे तेरे लिखी विधि सौं,
यह लाल की मूरति लाल मे देखी॥

प्रानपियारो मिल्यो सपने में,
परो जब नेंसुक नींद निहोरैं।
कंत को आगम त्यौं ही जगाय,
कह्यो सखी बोल पियूष निचोरैं।
यों 'मतिराम' भयो हिय मे सुख,
बाल के बालम सौं दृग जोरैं।
जैसे मिहीं पट मे चटकीलो,
चढै रँग तीसरी बार के बोरैं॥

बेलिन सों लपटाय रही है
तमालन की अवली अति कारी।

कोकिल-केकी कपोतन के कुल,
केलि करैं जहाँ आँनद भारी।
सोच करो जिन होहु दुखी,
'मतिराम' प्रबीन सबै नर-नारी।
मंजुल बंजुल कुंजन में,
घन पुंज सखी! ससुरारि तिहारी॥

ह्याँ मिलि मोहन सों 'मतिराम',
सुकेलि करी अति आनँदवारी।
तेई लता-द्रुम देखत दुःख,
चले अँसुवा अँखियान ते भारी।
आवति हौं जमुना तट कौं,
नहि जानि परै बिछुरे गिरिधारी।
जानति हौं सखि आवन चाहत,
कुंजन तें कढि कुंजबिहारी॥

सकल सिगार साज संग लै सहेलिन को,
सुंदरि मिलन चली आनँद के कंद कों।
कवि 'मतिराम' मग करति मनोरथनि,
पेख्यो परंजक पै न प्यारे नँदनंद कों।
नेह ते लगी है देह दाहन दहत,
गेह बाग को बिलोकि द्रुम-बेलिन के बृंद कों।
चंद को हसत तब आयो मुख-चंद,
अब चंद लाग्यो हँसन तिया के मुखचंद कों॥

बीति गई जुग जाम निसा,
'मतिराम' मिटी तम की सरसाई।
जानति हौं कहुँ और तिया से,
रहे रस में रमि कै रसराई।

सोचति सेज परी यों नवेली,
सहेली सों जाति न बात सुनाई।
चद चढ्यो उदयाचल पे,
मुखचंद पै आनि चढी पियराई॥

आई ऋतु पावस अकास आठौं दिसन मे,
साहत स्वरूप जलधरन की भीर को।
'मतिराम' सुकवि कदंबन की बास जुत,
सरस बढावे रस परस समीर को।
भौन ते निकसि वृषभानु की कुमारि देख्यो,
ता समै सहेट को निकुंज गिर्यो तीर को।
नागरि के नैननि तैं नीर को प्रवाह कढयो,
निरखि प्रवाह बढयो जमुना के नीर को॥

रावरे नेह को लाज तजी,
अरु गेह के काज सबे बिसराए।
डारि दिए गुरु लोगन को डर,
गाम चवाई मे नाम धराए।
हेत कियो हम जो तो कहा,
तुमतो 'मतिराम' सबे बिसराए।
कोऊ कितेक उपाय करौ,
कहुँ होत हैं आपने पीउ पराए॥

कोऊ नही बरजै मतिराम,
रहौ तित ही जित ही मन भायो।
काहे कौं सौहैं हजार करौ,
तुम तौ कबहूँ अपराध न ठायो।
सोवन दीजे, न दीजै हमें दुख,
यों ही कहा रसवाद बढ़ायो।

मान रहोई नहीं मनमोहन !
मानिनी होय सो मान मनायो ॥

आजु कहा तजि बैठी हो भूषण ?
ऐसे हीं अंग कछू अरसीले ।
बोलती बोल रुखाई लिए,
'मतिराम' सनेह सने न रसीले ।
क्यों न कहौ दुख प्रान-प्रिया ?
अंसुवानि रहे भरि नैन लजीले ।
"कौन तिनैं दुख है जिनकें
तुम-से मनभावन छैल छबीले ॥"

आई हौ पायँ दिवाय महावर,
कुंजन तै करिकैं सुख-सैनी ।
साँवरे आजु सवार्‌यो है अंजन,
नैनन को लखि लाजति ऐनी ।
बात के बूझत ही 'मतिराम',
कहा करिए यह भौह तनैनी ।
मूँदि न राखत प्रीति ! भटू यह
गूँदी गुपाल के हाथ की बैनी ॥

दोऊ अनंद सौं आँगनि माँझ
बिराजैं असाढ की साँझ सुहाई ।
प्यारी कौं बूझत और तिया को
अचानक नाँउ लियो रसिकाई ।
आयौ उन्हैं मुँह में हँसी, कोपि
प्रिया सुर-चाप सी भौह चढाई ।
आँखिन तैं गिरें आँसु के बूँद,
सुहासु गयौ उडि हस की नाँई ॥

आयो प्रानपति राति अनतै बिताय,
बटी मोहन चढाय रगी सुन्दरि सुहाग की।
बातन बनाय पर्यो प्यारी के चरन आय,
छल सों छिपाई छेल छवि रति-दाग की।
छूटि गयो मान लगी आपु ही सँवारन को
खिरकी सुकवि 'मतिराम' पिय-पाग की।
रिस ही के आँसू रस-आँसू भये आँखिन मे,
रोस की ललाई सो ललाई अनुराग की ॥

अटा ओर नँदलाल उत, निरखो नेक निसंक।
चपला चपलाई तजी, चदा तजो कलक ॥

मुख-बिधु छिन-छिन यो रहे, एक द्यौस ही माँझ।
पून्यो हुती प्रभात अब, होति अमावस साँझ ॥

बदन इंदु तेरो अली, दृग अरबिंद अनूप।
तिनमे निसि-बासर सदा, बसत इंदिरा-रूप ॥

कमल मुखनि कुबलय दृगनि, कुमुद मधुर मुसक्यानि।
लखौ लाल ऊपर महल, कमलाकर सुखदानि ॥

कनक-बेलि मे कोकनद, तामे स्याम सरोज।
तिनमें मृदु मुसक्यानि है, तामे मुदित मनोज ॥

जरतारी सारी ढकै, नेन लसति मतिराम।
मना कनक-पंजर परे, खजरीट अभिराम ॥

स्याम बसन मे स्याम निसि, दुरै न तिय की देह।
पहुँचाई चहुँ ओर घिरि, भौर-भीर पिय-गेह ॥

अधर-रंग बेसरि-मुकत, मानिक-बानिक लेत।
हँसत बदन दीपति बहुरि, होति हीर छबि-सेत ॥

लसत मुकुत रुचि लाल की, तेरे ओठनि सेइ।
अति अद्भुत यह बात पुनि, लाल मुकुत-रुचि लेइ ॥

मुकत हार हरि के हियें, मरकत मनिमय होत ।
पुनि पावत रुचि राधिका-मुख- मुसक्यानि-उदोत ॥

सुनि सुनि गुन सब गोपिकनि, समझ्यो सरस सवाद ।
कढी अधर की माधुरी, मुरली ह्वै करि नाद ॥

लीने तो अँखियानि उन, औ मुसक्यानि रसाल ।
तुहूँ लाल लोचननि की, लेहि लालसा बाल ॥

ध्यान करत नँदलाल कौ, नए नेह मे बाम ।
तनु बूडत रँग पीत मे, मन बूडत रँग स्याम ॥

लसत कोकनद- चरनि मे, यों मिहँदी के दाग ।
ओस-बिंदु परि कै मिट्यो, मनो पल्लवनि राग ॥

पियत रहै अधरानि को रसु अति मधुर अमोल ।
तातैं मीठे कढत हैं, लाल बदन के बोल ॥

दहूँ अटारिन मे सखी, लखी अपूरब बात ।
उतै इन्द मुरझात है, इतै कंज कुम्हिलात ॥

पीउ न आयो, नींद कों मूंदे लोचन ,बाल ।
पलक उघारै पलक में, आयो होइ न लाल ॥

नैन मान वह बाल के, लाज जाल परि आनि ।
पियत रहत तो बदन की, सुधा-मधुर मुसक्यानि ॥

पिय- मिलाप के हेत तिय, सजे उछाह सिगार ।
दृग-कमलनि के द्वार में, बाँधे बंदनवार ॥

नहि सुहाइ परगोत है, गोत आपनो पाइ ।
बिदा करी कुल कानि की, नैननि नैन बसाइ ॥

हियो हिए सों मिल चल्यौ, नैन चले मिल नैन
इतै उतै मारी फिरै, लाज कहूँ ठहरै न ॥

झूठे हा ब्रज मे लग्यो, मोहि कलंक गुपाल ।
सपने हूँ कबहूँ हिए, लगे न तुम नंदलाल ॥

लाज छुटो, गेह्यो छुट्यो, सुख सौ छुटयो सनेह ।
सखि कहियौ वा निठुर सों रही छूटिबे देह ॥

कत सजनी है अनमनी, अँसुआ भरति स ं क ।
बडे भाग नँदलाल सों, झूँठेहु लगत कलंक ॥

तुम सौं कीजै मान क्यो, ब्रजनायक मन-रंज ।
बात कहत यो बाल के, भरि आए दृग-कंज ॥

बैठो आनन कमल के, अरुन अधर-दल आ इ ।
काटन चाहत भाँवते, दीजे भौर उडाइ ॥

जानति सौति अनीति है, जानति सखी सुनीति ।
गुरुजन जानत लाज है, प्रीतम जानत प्रीति ॥

फूलति कली गुलाब की, स े यह रूप लखै न ।
मनो बुलावति मधुप कों, दे चुटकी की सैन ॥

भूषण

सोंधे भरी सुखमा सु खरी,
मुख ऊपर आइ रही अलकैं।
कवि 'भूषन' अंग नवीन बिराजत
मोतिन माल हिये झलकैं।
उन दोउन की मनसा मनसी
नित होत नई ललना ललकैं।
भरि भाजन बाहिर जात मनौ
मुसकानि किधों छबि की छलकैं॥

कोकनद-नैनी केलि करी प्रानपति संग
उठी परजंक तें अनंग-जोति-सोकी-सी।
'भूषन' सकल दलमलि हलचल भये,
बिन्दु लाल भाल फैल्यो कान्ति रवि रोकी-सी।
छूटि रही गोरे गाल गाल पै अलक आछी,
कुसुम गुलाब के ज्यौं लीक अलि दो की-सी।
मोती सीसफूल ते बिथुरि फैलि रह्यो,
मानो चन्द्रमा ते छूटी है नछत्रन की चौकी-सी॥

नैन जुग नैनन सों प्रथमै लडे हैं धाय,
अधर कपोल तेऊ टरै नाहि टरे हैं।
अड़ि-अड़ि पिलि-पिलि लडे हैं उरोज बीर,
देखो लगे सीसन पै घाव ये घनेरे हैं।
पिय को चखायो स्वाद कैसो रति-संगर को,
भये अंग अंगनि ते केते मुठभेरे हैं।
पाछे परे बारन कौ बाँधि कहै आलिन सौं,
'भूषन' सुभट ये ही पाछे परे मेरे हैं

बन उपवन फूले अंबनि के झोर भूले,
अवनि सुहात सोभा और सरसाई है।
अलि मदमत्त भये केतकी बसंती फूली,
'भूषन' बखाने सोभा सबे सुखदाई है।
बिषम बिहारिबे को बहत समीर मंद,
कोकिला की कूक कान कानन सुनाई है।
इतनो संदेसो है जू पथिक तिहारे हाथ,
कहो जाय कन्त सों बसन्त ऋतु आई है॥

मलय-समीर परलै को जो करत अति,
जमकी दिसा ते आयो जमहो को गोतु है।
साँपन को साथी न्याय चन्दन छुये ते डसे,
सदा सहबासी विष गुन को उदोतु है।
सिंधु को सपूत कलप-द्रुम को बंधु,
दीनबंधु को है लोचन सुधा को तनु-सोतु है।
'भूषन' भनै रे भुव भूषन द्विजेस तैं
कलानिधि कहाय कै कसाई कत होतु है॥

जिन किरनन मेरो अंग छुयो तिनहीं सों,
पिय-अंग छ्वै क्यो न मन दुख दाहे को।
'भूषन' भनत तू तो जगत को भूषन है,
हौं कहा सराहौं ऐसे जगत सराहे को।
चंद्र ऐसी चाँदनी तू प्यारे पै बरसि
उतै रहि न सकैं, मिलाप होय चित-चाहे को।
तू तो निसाकरै सब ही की निसा करै,
मेरी जो न निसा करै तो तू निसाकर काहे को॥

मेचक कवच साजि बाहन बयारि बाजि
गाढे दल गाजि रहे दीरघ बदन के।

'भूषन' नत समसेर सोई दामिनी है,
हेतु नर-कामिनी के मान के कदन के।
पैदल बलाका धुरवान के पताका गहे,
घेरियत चहूं ओर सूने ही सदन के।
ना करु निरादरु पिया सो मिलि सादरु
ये आये बीर बादर बहादर मदन के॥

देखत ही जीवन बिडारौ तो तिहारौ जानें,
जीवनद नाम कहिबे ही को कहानी मैं।
कैधों घनश्याम जो कहावें सो सनावें मोहि,
निहचै कै आजु यह बात उर आनी मैं।
'भूषन' सुकवि कीजै कौन पर रोस,
निज भागिही को दोसु आगि उठति ज्यों पानी मैं।
रावरे हू आये हाय हाय मेघराय,
सब धरती जुड़ानी पै न बरती जुडानी मै॥

सुनें हूजै बेसख सुनें बिन रह्यो न जाय,
याही ते बिकल-सी बिताती दिनराती हैं।
'भूषन' सुकवि देखि बावरी बिचार काज,
भूलिबे के मिस सास नन्द अनखाती हैं।
सोई गति जानें जाके भिदी होय कानें सखि,
जेती कढै तातें लेती छेदि-छेदि जाती हैं।
हूक पाँसुरी मैं, क्यौं भरौ न आँसुरी मैं,
थोरे छेद बाँसुरी मैं, घने छेद किये छाती हैं॥

कारो जल जमुना को काल सो लगत आली!
छाइ रह्यो मानो यह विष काली नाग को।

बैरिन भई है कारी कोयल निगोडी यह,
तैसो ही भँवर कारो बासी बन-बाग को।
'भूषन' भनत कारे कान्ह को वियोग हिये
सबै दुखदाई जो करैया अनुराग को।
कारौ घन घेरि घेरि मार्‌यो अब चाहत है,
एते पर करति भरोसो कारे काग को।

———

कुलपति मिश्र

(रसरहस्य से)

गसिय कुंज बने छवि पुंज,
रहै अलि गुंजन या सुख लीजे।
नैन बिशाल हिये बनमाल,
बिलोकत रूप-सुधा भरि पीजै।
जामन जाम की कौन गिनै,
जुग नागत जानिये जो छवि छीजे।
आनद यों उमग्योई रहै
पिय मोहन को मुख देखबो कीजे॥

मोहन के अभिलाष-सी बैस,
लसे बय के सम रूप बन्यो है।
रूप समान लुनाई विराज,
लुनाई सो जी में सुजानपन्यो है।
जैसी सुजानता तैसो विचार कै,
कृष्णकुमार सों नेह तन्यो है।
नेह समान लहै सुखराज,
सु राधे को जीवन धन्य बन्यो है॥

वीर नहीं विष को, जडतै उपज्यो नहि,
बोल सुधा सो है जा को।
उज्जल राहु समीप रहै
निशि द्योस विकासक है वसुधा को।
फूले रहै हरि लोचन- बारिज
जौ लग देखत रूप हिया को।

जाम रहै नित पूरी कला शशि,
सा मुख क्यों वृषभानु सुता का ॥

आनद सो उमग तकि दूर तें,
चोंके से चाहत रूप नवीने ।
राम उदास परे बिन वासरु,
प्रेम के त्रास भये अति दीने ।
सोंहे किये तें लजोंहै खिजोंहै,
रिझोंहैं भये छवि जीतत मीनें ।
सोच सकोच सयानप शील,
सुभाय- भरे दृग देखत कीनें ॥

लोचन लजोंहै सोंहै होत न सखीन हूँ सों,
बातन मैं कीजत अनूप सुरभंग की ।
तन मन आनँद मगन ह्वै बिहसति
याही तें सहेली न सुहात कोऊ संग की ।
डगमगी डगे पल झपकि-झपकि लगें,
कहे देत गति तन झलक अनंग की ।
आली औरै आभा आज भई है बदन पर,
जगर-मगर जोति होति अंग-अंग की ॥

शरद जुन्हाई मे कन्हाई आये औचक ही,
आनद मंगल अंग-अंग न समात है।
पिय को बदन पिया, पिया को बदन पिय,
चाहि चाहि ललचाहि क्यों हू न अघात है ।
द्वैई आँखि एतौ छबि-पुंज कैसे देख्यौ जात,
लोचन सहस नाहि कहि अकुलात है ।
अनिमिष रहै तब ध्यान धरि देखे जू,
निहारत निहारत ही नैन हारि जात है ॥

जो चित लावत जाहि सुपावत,
ताहि सुनाय है वेदन सोहू।
याही ते अवति है बतियाँ कहि,
कव्जु लखी यह रीति न कोहू।
गोरी की तनदुति देखत लाल भयो
मन मेरो, रँग्यो है हिया हू।
एती हिये मे रही निशि बासर,
प्यारी तू मेरे रची नही तो हू॥

देखत स्वरूप प्राण-प्यारे को
कल अंग उमगि उमगि वैहीं भाँति उमहत है।
वह बनमाल मोर-चन्द्रिका रसाल वहै,
वेही भाँति ललचाय चाय सौ चहत है।
ब्रज द्वार- द्वार हरि द्वारका बतावत है,
ऊधो! बात कहत न लाजही लहत है।
गाय हूँ चरायबे को बनहूँ मे जाते तब,
अब निशद्यौस नैन आगेही रहत हैं॥

फूलति है कोई लपटंगी बैन चातुरी सो
फूले पाँचों बान जागे देखे मेन भाग मे।
फूलत है पकज बिचित्र चित्र चंद देखि,
उपबन जीव सबै होत अनुराग मे॥
वेगि चलि आली, नभ छाय रही लाली,
दुमराजी हू बिराजी लखि संपति सुहाग मे।
बिनहि बसन्त रति-कत मयमंत होत,
तेरो मुख देखते बरात होत बाग मे॥

गाय उठे छिन मेघ मलारहि,
हाँसी मे दामिनि सी दरसावै।

बोलत कोकिल कों बरजै, गरजै,
दृग-वारिद सों झर लावै ।
झींगर झाँई सुधारिब कों,
मधुरी धुनि नूपुर मंद बजावै ।
सूने प्रवास मे बाल विलोकि री,
आपही पावस-साज बनावै ॥

राजत है घनश्याम जहाँ
बिन दामिनि हीं छविही सरसै ।
अरु सावन की झर छाइ रह्यौ
निकसै नहि कोउ कहूं घर सें ।
सोहै सलौनी घटा परि चन्द्रिका,
सो दुति भाग भरे दरसै ।
चल आली विलोकिये कौतुक कुंज मे,
पात सबै मुकता बरसै ॥

सुखदेव मिश्र

यों कछु कीन्ही अचानक चोट जु,
ओट सखी न सकी कै दुकूल है।
देह कपे मु ह पीरी परी, सो कह्या नहि,
ज ह्वै गयो हिय सूल हैं।
मॉझ उरोज मे आनि लग्यो,
अँगिरात जही उचक्यो भुजमूल हे।
कोन है ख्याल खेलार अनोखे!
निसक ह्वे ऐसे चलैयत फूल है॥

जोहे जहो मगु नन्दकुमार,
तहाँ चली चन्दमुखी सुकुमार हे।
मोतिन ही को कियो गहनो,
सब फूलि रही जनु कुन्द की डार ह।
भीतर ही जु लखी सु लखी,
अब बाहर जाहिर होत न दार हे।
जोन्ह सी जोन्है गई मिलि यों,
मिलि जात ज्यों दूध मे दूध की धार है॥

ननेद निनारी सासु मायके सिधारी,
अहै रैनि अँधियारी भारी सूझत न करु है।
पीतम को गौन सुखदेव न सुहात भौन,
दारुन बहत पौन लाग्यो मेघ झरु हे।
संग ना सहेली, बैस नवल अकेली,
तन परी तलबेली महा लायो मैन-सरु है।
भई अधरात, मेरो जियरा डेरात,
जागु जागु रे बटोही इहाँ चोरन को डरु है॥

फूलि रहे बनबाग सबै लखि,
फूलनि फूलि गया मन मेरो।
फूलनि ही को बिछावनो के,
गहनो कियो फूलनि ही को घनेरो।
लाल पलाशन मे चहुँ ओर तै,
मैन-प्रताप कियो घन घेरो।
ऐसेहि फूल फैलाइ फैलाइ,
भयो ऋतुराज को मानहु डेरो॥

कालिदास त्रिवेदी

कुंदन की छरी आबनूस की छरी सों मिली,
सौनजुही माल किधौं कुबलय- हार सों ।
कैधो चद्र- चंद्रिका कलंक सों कलित भई,
कैधौ रति ललित बलित भई मार सौं ।
कालिदास मेघ माँहि दामिनी मिली है कैधौ,
अनल की ज्वाल मिली कैधौ धूम-धार सौ ।
केलि समै कामिनी कन्हैया सों लपटि रही,
कैधौ लपटानी है जुन्हैया अधकार सों ॥

प्यारी खड तीसरे रसोली रग रावटी मे,
तकि ताकी ओर छकि रह्यो नंद-नन्द है ।
कालिदास बीचिन दरीचिन ह्वै छलकत,
छबि की मरीचिन की झलक अमन्द है ।
लोग देखि भरमै कहा धौ हे या घर मे,
सु रगमग्यो जगमग्यो जोतिन को कन्द हे ।
लालन को जाल है कि ज्वालनि की माल है कि,
चामीकर चपला कि रवि है कि चद है ॥

भोरी बेस इन्दमुखी साँकरी गली मे मिली,
सुन्दर गोबिन्द को अचानक ही आयकै ।
कालिदास जगै जेब अंगनि जवाहिरकी,
बाहिर ह्वै फैली चाँदनी सी छबि छाय कै ।
नेरो गह्यो स्याम सौंहै बिहसि बिलोकी बाम,
हेर्यो निरछौहैं नारि नैसुक नवायकै ।
गोरे तन चोरै चित चोरै दृग [illegible] मुख
थोरे बीच कोरे लागि चली मुसुकाय कै ॥

कान्ह चतुराई करि द्वार मे बिछाई मैन,
जानि मनि-मंदिर मे मनभाई बाम कों।
कालिदास रसिकाई जानि कै चुपाइ रहे,
आई जब सुन्दरि सिधाई निज धाम कों॥
चचल चतुर छरकायल छबीली वाम,
अंचल छ्वै न दीनौ स्याम अभिराम को।
पाटी पग धरि गई, चेटक सौ करि गई,
नटी लौ उछरि गई, छरि गई स्याम कों॥

चूमो कर कंज मजु अमल अनूप तेरो,
रूप के निधान कान्ह मो तन निहारि दै।
कालिदास कहै मेरे पास हरि हेरि हरि,
माथे धरि मुकुट लकुट कर डारि दे॥
कुँवर कन्हैया मुख-चन्द की जुन्हैया चारु,
लोचन चकोरन की प्यासन निवारि दे।
मेरे कर महदी लगी है नँदलाल प्यारे,
लट उरझी है नकबेसर सँभारि दे॥

सावन की रैन, मन भावन गोविंद बिन,
देत दुख झारन में झिल्लिन के सोर है।
कालिदास प्यारी अँधियारी मे चकित होत,
उमडि उमडि घन घहरत घोर है।
सूने कुंज मदिर मे सुदरी बिसूरे बैठि,
दादुर ये दहकि सी लेत चहुँ ओर है।
हिए में बियोगिनि के बिरह की हूक उठी,
कूक उठी कोयल, कुहुँक उठे मोर है॥

मधुकर माल बन बेलिन के जाल पर,
कोकिल रसाल पर कुहुँक अमद की।
मंद पौन सीतल सुबास भई बागन,
बिलास मई कालिदास रासि मकरंद की॥

दखि़ि सयान, बयसाख मे पयान करे.
कान्ह को दया न होति गापिन के वृ द को ॥
कैसे देखि जीहै चढि चाँदनी महल पर
सुधा की चहल, बसुधा की, चारु चद की

हिलि-मिलि जोखनि मे, झाँकत झरोखनि मे,
हियरा मे हलकी, द्दगन अँसुवार मे।
कालिदास कहै आप कामिनि कुरग नैनी,
दामिनी ज्यों देखी जात दमक दुआर म ॥
जोन्ह मे दहगी, दुख ऐसे क्यो सहेगी,
जैसे सीता पार सागर के रघुवर वार में।
नंद के कुँवर कान्ह कैसे कहो पै हौ जान,
छाँडि वृषभानु जू की कुँवरि कुवार में ॥

कामरी की खोही मोही गोपन की जाई बाल,
आई लाल पामरी रजाई परहरि के।
कहै कालिदास पास भई है एकत कत,
लीजिए लपेट, लपटाय अक भरि के ॥
रैन मे नगर द्यौस जन के बगर कीजै,
जगर-मगर ब्रज-भूमि केलि करि क।
पूस मे कलाधर ये धन कौ न छोडें सग,
तातें रग कीजै, हिए प्रेम ध्यान धरि क ॥

हाथ हसि दीन्हौं भीति अतर बरसि प्यारी,
देखत ही छकी मति कान्हर प्रवीन की।
निकस्यो झरोखे माँझ बिगस्यौ कमल सम,
ललित अँगूठी तामै चमक चुनीन की ॥
कालिदास तैसी लाल मेहदी के बुदन की,
चारु नख-चंदन की लाल अँगुरीन की।
कैसी छबि छाजति है छाप औ छलान की, सु
ककन चुरीन की, जडाऊ पहुँचीन की ॥

आलम और शेख

मुकुता मनि पीत हरी बनमाल सु,
तौ सुर चापु प्रकासु कियो तनु।
भूषन दामिनि दीपति है,
धुरवा सित चदन खौरि किये तनु।
'आलम' धार सुधा मुरली बरषा,
पपिहा ब्रज-नारिन को पनु।
आवत है बन ते घन से लखि री,
सजनी घनस्याम सदा-घनु॥

त्रुटि आई भौहै मुरि चढी है उचौ है,
नैना मैन-मद-माते पलकन चपलई है।
कटि गई छूटि पे सिमटि आई छाती ठौर,
ढौर तें संवारी देह और कछु भई है।
'आलम' उमँगि रूप सोना सरवर भर्यो,
पानिप तें काई लरिकाई मिटि गई है
झलक सी भई पियरस पियरई किधौ,
कछु तरुनई अरु नई अरुनई है

अंग नई जोति लै बरंगना विचित्र एक,
आँगन में अंगना अनंग की सी ठाढी है।
उजरई की उज्यारी गोरे तन सेत सारी,
मोतिन की जोति सौं जुन्हैया मानो बाढी है।
आलम सु आली बनमाली देखि चली दुति,
सुगढ कनक की सी रूप-गुन गाढी है।
देह की बनक वाके चीर में चमक छाई,
छीरनिधि मथि किधौ चाँद चीरि काढी है॥

जबह जमुन जैहै सुधि बिसराइ ऐहै,
घरी डारि औरनि के सग धाइ आई है ।
रोम खरी राव खरी काँपै थरहरै खरी,
जड ह्वै रहति कछू जूडियो जनाई है ।
'आलम' कहै हो अबही ते रिझवार भई,
दुरै न दराई मै तो अब लौ दराई है ।
रूप रस प्यासी भई कान्ह, तन डीठि दई,
गागरि भरन गई नैना भरि लाई है ॥

हँसे हँसि देइ बोलै बोलै औ न खोलै पेम,
यातें पहिचानी कछु पीरी पीरी ह्वै भई ।
'आलम' कहै हो याके हिये की पौढाई देखो,
कैसे कै दुराई माई प्रीति कान्ह सो नई ।
अब अनमनी हुती अँसुवा भरति ठाढी,
औचक ही धाइ धाइ भुज भरि ह्वै लई ।
पूछे तिहि अँसुवा कहे हो ? कहै कैसे आँसू,
पलकै पसारि दई पुतरीनु पी गई ।

मया करि चितै चितु चोरी लीनो हितु करि,
हिन बिनु चितै नहीं सोई सोच नित है ।
'आलम' कहै हो पुर बास मे जो बसी तिन्है,
नेमुक न चाउ निसु-बासर चकित है ।
देखे टक लागै अनदेखे पलकौ न लागै,
देखे अनदेखे नैना निमिष रहित है ।
सुखी तुम कान्ह हौ जु आन को न चिन्ता,
हम देखे हू दखित अनदेखे दुखित है ॥

काकी लाज काकौं डरु कौन आपु कैसो घरु,
कौन घरुबसी कछू बाते घर की कहै ।

साँस लेत हिये मे सलाका ऐसी सालनि है,
कान्ह चितवनि माः नित चित कों दहै।
'आलम' कहै हों परबस न बसात कछू,
भागे हू न छूटे दुख अति साथ ही गहै।
पलक ते न्यारी कीनी नींदऊ बिडारि दीनी,
निसि दिन नैननि मे बैरी बैठोई रहै॥

लाज तजी जिहि काजु सखी,
इन लोगन मे बसि आपु हँसाऊँ।
'आलम' आतुरता अति ही,
तिहि लालचु हौ तुम्हरे संग आऊ।
कान्ह मिलै तो मया करि चाहत,
हौं न कछू जिय हू की सुनाऊं।
देखन को अँखियान महा सुख,
जो अँसुवानि सो देखन पाऊ॥

जहां तें निवारो जाइ तहाँ उठि परे धाइ,
हियो अति अकलाइ लाज न करत है।
देख्यौ चाहै बार बार मुरि नन्द के कुमार,
अति ही बसी बिहार प्राननि हरत है।
देखे तें ह्वै मुरझात बिन देखे बिललात,
दुख देत दुहूँ भाँति व्याकुल करत है;
मारि मारि मींजि के मरूरन मरोरि डारी.
मेरे नैना मेरी माई मोही सौ अरत है॥

सखिन बुलावै कान्ह मुखहि न लावैं झुकि,
दूतियौ निकारी बीनि बेगि ही बगर तें।
हौं न भई हाती कहाँ वाही की सुहाती ऐसी,
मान रस माती हौं न बोली डोली डर तैं।

जौलों कहूँ मुरली की घोर सनी कान 'सेख',
घरी ही मे देहली दुहेली भई घर तें।
परी तिहि काल हुती पीरी पीरी बाल जनु,
सीरी भई सुनि छूटि बीरी भई कर तैं ॥

किंकिनि कंकन क्वान मिलै,
वर दादुर झींगुर की झनकारहिं।
भूषन की मनि एक भई
जुगनू बर की मनि जोति अपारहि।
'आलम' कामिनि को तन कुन्दन,
जाइ मिल्यो जग बीजु उजारहि।
काम के त्रासनि स्याम निसा,
बर बैरी सहाइ भये अभिसारहि ॥

सरद उज्यारी निसि सीतल समीर धीर,
सोवत पियारी पिय पाये सुख सैन के।
आलम' सुकवि आगे जागै वे रसाल लाल,
बालहि जगावै लगे लोभ बाल बैन के।
चिलक सरीर रोमराजी राजै पिय पानि,
पल्लव उठे हैं जैसे चंदन मे चैन के।
सकुची पनच उतरें तैं चाप चारु सोहै,
धरे वे विचित्र मानो पाँचों बान मैन के ॥

[illegible]न भई रजनी रसिक रितुराज की,
न छीन भयो भानु, जातै लालच न डोली री।
प्राचियो रची पै तू न रची मेरे बचननु,
अलि-माला बोली पै तू बोलहू न बोली री।
द्रुम-बेली हलीं तू न हली अली चलिबे को,
चकई मिली पै तू न हियो खोलि बोली री।

उये रवि कौन काज उठ न रूठन तेरो,
'आलम', न बचि काल सरति कलोली री ॥

काम-रस-माते ह्वे करेरी केलि कीन्हीं कान्ह,
फूलनि की माल्लिका हू मीडि मुरझाई है ।
'आलम' सुकवि याहि और सी न जानो बलि,
ऐसी नारि सुकुमारि कहौ कौने पाई है ।
कमल को पात लै लै हाथु याको गात छूजे,
हाथ लाये मैली होय गात की निकाई है ।
अचर दे मुख सनमुख तासों बात कीजे,
ना तरु उसाँस लागे मुकुर की हाई है ॥

नाती होति छाती छितु जूडियो न जाति कछू,
ताती सीरी राती पीरी बूझि न परति है ।
'आलम' कहै हो कान्ह कौन बिथा जाना का को,
मौन भई काहू की न कानि हू करति है ।
आगि सी झवाति है जू ओरो सी बिलाती है जू,
छिनु हू न देखे सुधि बुधि बिसरति है ।
अँसुवननि भीजै औ पसीजे त्यों त्यो छाजै बाल,
सोने ऐसी लोनी देह लोन ज्यों गरति है ॥

गौन के सुनत रही मौन भूली भौन सुधि,
पीरी परि आई थकि बीरी रही हाथ ही ॥
चौकति चकति पछिताति मुरछाति तन,
ताही छन आय उर लाय लई नाथ ही ।
रही ही नवाय नारि पूछति पियारे के सु,
कैसे हूँ कैसे हू कै उठाय उत माथ ही ।
चितै हरबरै गहबरै गरै,
उतरु उसाँसु आँसु आये एक साथ ही ॥

भली भई भोर भये पॉन धारे भावते जू,
हम अनभावती है भावतिनु भाये हो
रोस ह्वै कहत हैं न रिस कीजे रस की सु,
जाके रस-रसे तिन बस करि पाये हौ।
ऐसो परिहासु हियो तरकि मरीजै पै न,
'आलम' पतीजै पुनि पिय जानि पाये हौ।
अंग नये चिन्ह रतिरंग न दुरत नयो,
आँगन मे अंग सग अंगना लै आये हौ॥

कैधो मोर सोर तजि गये री अनत भाजि,
कैधौ उत दादुर न बोलत है ए दई।
कैधौं पिक चातक महीप काहू मारि डारे
कैधौं बकपॉति उत अन्तगत ह्वै गई।
'आलम' कहै हो आली अजहूँ न आये प्यारे,
कैधौ उत रीति विपरीत बिधि ने ठई।
मदन महीप की दोहाई फिरबे तें रही,
जूझि गये मेघ कैधौं दामिनी सती भई॥

जा थल कीन्हे विहार अनेकन,
ता थल कॉकरी बैठि चुन्यो करै।
जा रसना सों करीं बहु बात सु,
ता रसना सो चरित्र गुन्यो करै।
'आलम' जौन-से कुंजन में करी केलि,
तहाँ अब सीस धुन्यो करैं।
नैनन मे जो सदा रहते,
तिनकी अब कान कहानी सुन्यो करै।

जब कह्यो देखि मित्र हो तौ भयो देखि चित्र,
अजहूँ लौ चित की अचेत चतुरई है

रीझ्यौ हौं तिहारो इन नैननि की रीझि कों जू,
कौन मृदु मूरति [illegible]ाय मुरझई है।
घूँघट की ढिग चाँपि भृकुटी उचाइ 'सेख'
मन्द मुसुकाइ चपला-सी कौंधि गई है।
तुम सोध वाही के सिधारे कञ्ज सुधापुंज,
मोहि कान्ह घरी एक पाछे सुधि भई है॥

निधरक भई अनुगवति है नद घर,
और ठौर कहूँ टोहे हू न अहटाति है।
पौरि पाखे पिछवारे कौरे कौरे लागी रहै,
आँगन देहली याही बीच मंडराति है।
हरि-रस राती 'सेख' नेकहू न होइ हाती,
पेम-मद-माती न गनति दिन राति है।
जब जब आवति है तब कछू भूलि जाति
भूल्यो लेन आवति है और भूलि जाति है।

बिथा को बिचारु कै सकानी हू न जान्यो नेकु,
पीरी होते जाति अरु तातो सीरो गातु है।
सुमन सुहाते तें तो हिये हूँ ते हाते करि,
नैननि सों चाँद नेकु हेरे न हितातु है।
तुम्हरे बियोग कवि आलम बिरह बढ्यो,
तुम बिनु प्यारे हरि कछु न बसातु है।
आइहू की ओर आये ऐसी गति होति भई,
ओरती से नैना आँगु ओरो सो ओरातु है॥

———

रसनिधि

(रतन हजारा)

रसनिधि मन-मधुकर बसौ जो चरनाम्बुज माहि ।
मरस अनुखुलौ खुलत है खुलौ खुलोई नाहि ।

बाल-बदन को मदन-नृप रूप-इजाफा दीन ।
मे।ा गजन पर भौह जनु मीनकेत घर लीन ॥

बदन-सरोबर तै भरे सरस रूप-रस मन ।
डीठ डोर सौं बाधिके डोलत सुन्दर नैन ॥

जब ते दीन्हौ है इन्हे मैन-महीपति मान ।
चित-चुगली लागे करन नैना लगि-लगि कान ॥

नागर सागर रूप कौ जोबन तरल तरंग ।
सकत न तर छबि-भवर पर मन बूडत सब अंग ॥

रूप-समुद छबि-रस भरौ अतिही सरस सुजान ।
तामे तैं भर लेत दृग आन घट उनमान ॥

लाल भाल पै लसत है सुन्दर बिंदी लाल ।
कियौ तिलक अनुराग ज्यौ लख कै रूप रसाल ॥

रूप-सिधु मे नाइ के जब तै परस्यौ नेह ।
तब तै कैयो रग सौं रूप दिखाई देह ॥

तौ कैसे तन पालते नैही नैन-मराल ।
जौ न पावते रूपसर छबि मुकताहल लाल ॥

रूप-दीप जेतौ धरौ मन-फानूस दुराई ।
तऊ जोत वाकी दृगन होत प्रकासित आइ ॥

सुन्दर जोवन रूप जो बसुधा मे न समाइ ।
दृग-तारन तिल विच तिन्हैं न ही धरत लुकाइ ॥

ज्यों उत रूप अपार है त्यों इत चाह अपार
नैन मिचौहीं दुहुन कौ पाइ सकै नहि पार ॥

जौ भावै सो कर लला इन्हैं बाँध वा छोर ।
है तुव सुबरन-रूप के ये मेरे दृग चोर ॥

तुव बन मे खोयौ गयौ मन-मानिक ब्रजराज ।
लगे संगही फिरत है नैना पावन काज ॥

सरस रूप को भार पल सहि न सकै सुकुमार ।
याही तैं ये पलक जनु झुकि आवै हर बार ॥

रूप किरकिटी परि गई जब तैं दृगन मँझार ।
लाल भये तब तैं रहत बरषत अँसुवन धार

सुमन सहित आँसू-उदक पल-अँजुरिन भरि लेत ।
नैन-ब्रती तुव चद-मुख देखि अरघ कों देत ॥

रसनिधि सुन्दर मीत के रंग चुचौहैं नैन ।
मन-पट कौं कर देत है तुरत सुरँग यै नैन ॥

कजरारे दृग की घटा जब उनवे जिसि ओर ।
बरसि सिरावैं पुहुमि-उर रूप-झलान झकोर ॥

प्रेम नगर दृग-जोगिया निस दिन फेरी देत ।
दरस-भीख नँदलाल पै पल झोरिन भरि लेत ॥

रुप ठगौरी डारि के मोहन गौ चित चोरि ।
अंजन मिस जनु नैन ये पियत हलाहल घोरि ॥

दृग-द्विज ये उठि प्रातही करि अँसुवन असनान ।
रूप-भूप पर जाचही छवि-मुकताहल दान ॥

दग-दुस्सासन लाल के ज्यों ज्यो खैंचत जात ।
त्यो त्यौं द्रोपदिचीर लौं मन पट बाढत जात ॥

लघु मिलनो बिछुरन घनो तामें बिच बैरिन लाज ।
दृग अनुरागी भावते कहु केह करैं इलाज ॥

तीन पेंड जाके लखौ त्रिभुवन मे न समॉइ ।
धन राधे राखत तिन्हे तू दृग आधिन मॉइ ॥

मेरे नैननि ह्वै लखौ लाल आपनौ रूप ।
भावत है गौ भावतौ कैसी भॉति अनूप ॥

तनिक किरकिटी के परै पल पल मे अकुलाय ।
क्यो सोवे सुख नींद दृग मीत बसै जब आय ॥

तिल-चुन लालच लाग के दृग-खंजन चल जाइ ।
जुलफ-फदा तै जौ बचै दृग-फन्दन परि जाइ ॥

रिस-रस दधि, सक्कर जहॉ मधु मधुरी मुसक्यान ।
घृत सनेह, छबि पय, करै दृग पचामृत पान ।

यातै पल पलना लगत हेरत आनदकद ।
पियन मधुर छबि दृगन के जात ओठ ह्वे बद ॥

रुकन न खजन नैन ये जतन कीजियत कोर ।
प्रीतम-मन तन चलत है पल-पिजरन को तोर ॥

मचल जात है नैन ये समुझाये समुझै न ।
बदन-चद के लखन को सिसु ज्यो खिरझत नैन ॥

और रसनि लै जानही रसना हू अभिराम ।
चाखत जे ये रूपरस यातै है चख नाम ॥

उपजत जीवनमूर जहै मीत-दृगन मे आई ।
तिनके हेरे तुरत ही अतन सतन ह्वै जाइ ॥

अद्भुत रचना बिधि रची यामै नहीं बिबाद ।
बिना जीभ के लेत दृग रूप सलौनी स्वाद ॥

भरत ढरत जलकन पलन पलहू ठहर सकै न ।
भये कौन के नेह सो तेरे चिकने नैन ॥

छबि-धन दै नदलाल ये किये अयाची आइ ।
पल-कर तब ते और प दृग न पसारत जाइ ॥

बाढी सुन्दरता अधिक हरिहर अंग अनेक ।
कितै कितै हेरे अरी डीठ विचारी येक ॥

मदन-परब कौ पाइकै जुरी रूप की जात ।
दृग-मन धन कौं देत है छबि-सौदा ले जात ॥

प्रीतम कहि यह बात कौ जानो जात न हेत ।
मो दृग तारन कौन बिधि बदन चद भर देत ॥

जिन नेनन का है सही मोहन-रूप अहार ।
तिन कों बेद बतावहीं लघन कौ उपचार ॥

यह अचरज लख मे हियो कछु बिहसी अनखाइ ।
चार दृगन मे दुहुन कौं मूरत चार दिखाइ ॥

घट बढ इन मे कौन है तुही सामरे ऐन ।
तुम गिरि ले नख पै धर्यौ इन गिरधर लै नैन ॥

जो अखियॉ बौराइही लगे बिरह की बाइ ।
प्रीतम-पगरज कौ तिन्है ऑजन देहु लगाइ ॥

पलक पानि कुस बरुनिका जल असुवा दुज मेन ।
पियहि चलत सुख-नीद कौं करत सकलप नेन ॥

दरसन कौ चलतौ कहूँ जो सुमरन सौ काज ।
दग-चकोर होते नही ससिमुख के मुहताज ॥

श्रवन सुखारे होत है सुने सदेसन बेन ।
तृपित होइ क्यो दरस बिन रूप अहारी नैन ॥

जलकन तिलकन पलक मे कहु आली केहि हेत ।
भावन्ता लखि बिरह कौ नैन तिलाजुलि देत ॥

जिन नैनन में बसत है रसनिधि मोहन लाल ।
तिन मै क्यों घालत अरी तैं भर मूठ गुलाल ॥

अब लग बेधत मन हते दृग अनियारे बान ।
अब बसी बेधनि लगी सप्त-सुरन सौं प्रान ॥

बिछुरत सुन्दर अधर तैं रहत न जिहि घट साँस ।
मुरली सम पाई न हम प्रेम-प्रीत की आंस ॥

वह बिधुबदनी के लखे खुले छबीले बार ।
बस्यो मनौ तम आइ के ससिमुख के पिछवार ॥

पुरयन बिच कंचुक अरी ता बिच कली उरोज ।
गुंजत अलि सन जाइ तहँ उर सरसाइ सरोज ॥

मोह तोह मेहदी कहूँ कैसे बने बनाइ ।
जिन चरननि सौं मे रची तहाँ रची तूँ जाइ ॥

और लतन सों हित-लता अद्भुत गति सरसाइ ।
रामन लगे पहिले इहै पाछे कै हरियाइ ॥

राखे है हिय सेज मे चुन के सुमन बिछाइ ।
अरे गुमानी पलक तो इहाँ पाँव धर आइ ॥

अंधियारी निस कौ जनम, कारे कान्ह गुवाल ।
चितचोरी जो करत हौ कहा अचभौ लाल ॥

त्यौ तू उत मुर जात है त्यौं गिरबर मुरजाइ ।
तेरी या मुर जान पै मेरो मन मुर जाइ ॥

नेह अतर छबि अरगजा भर गुलाल अनुराग ।
खेलत भरी उछाह सौं पिय संग होरी फाग ।

भोर होत पीरी लगी यातै ससिमुख जोत ।
सरसन दरद चकोर की आइ [illegible] सधि होत ॥

याके बल वह लेत है पावक चिनगी खाइ ।
चंदहि जौ जारन लगौ तौ चकोर कित जाइ ॥
जिहि ब्राह्मण पिय-गमन कौ सगुन दियौ ठहराइ ।
सजनी ताहि बुलाइ दै प्रान-दान लै जाइ ॥

देव

पायनि नूपुर मंजु बजै,
कटिकिंकिनि के धुनि की मधुराई ।
साँवरे अंग लसै पट पीत,
हिये हुलसै बनमाल सुहाई ॥
माथे किरीट बड़े दृग-चंचल,
मन्द हँसी मुख-चन्द-जुन्हाई ।
जै जग- मंदिर- दीपक सुन्दर,
श्री ब्रजदूलह देव सहाई ॥

देव सबै सुखदायक संपति,
संपति-दंपति दंपति-जोरी ।
दंपति सोई जु प्रेम-प्रतीति,
प्रतीति की रीति सनेह-निचोरी ।
प्रीति महागुन गीत बिचार,
बिचार की बानी सुधारस बोरी ।
बानी को सार बखान्यो सिंगार,
सिंगार को सार किसोर-किशोरी ॥

जागत सोवत हू सपने,
अपनेई अयानपने को अँध्यारो ।
केहू छिपै न छिनौ न दिनौ,
निसि दीपति देह सदेह उज्यारो ।
नैनन ते निचुर्यो परै नेह,
सु रोकत बैनन प्रेम-पत्यारो ॥
दूरि रहे कित जीवन मूरि जु,
पूरि रह्यो प्रतिबिंब ज्यौं प्यारो ॥

जाके न काम न क्रोध बिरोध,
लोभ छ्वै नहि छोभ को छाहौ।
मोह न जाहि रहै जग बाहिर,
मोल जवाहिर ता अति चाहौ।
बानी पुनीत ज्यौं देव धुनी.
रस-आरद सारद के गुन गाहौ।
सील-ससी सबिता-छबिता,
कबिताहि रचै कबि ताहि सराहौ ॥

औचक अगाध सिधु स्याही को उमडि आयो,
तामै तीनौ लोक बूडि गए यक सग मे।
कारे कारे आखर लिखे जु कारे कागद,
सुन्यारे करि बाँचै कौन चाँचै चित भंग मे।
आँखिन मे तिमिर-अमावस की रैनि जिमि,
जम्बूनद- बुन्द जमुनाजल- तरग मे।
यौ ही मन मेरो मेरे काम कौ न रह्यो माई,
स्याम रंग ह्वै करि समान्यो स्याम-रंग में ॥

देव मै सीस बसायो सनेह कै,
भाल मृगम्मद बिदु कै भाख्यो।
कंचुकी में चुपर्यो करि चोवा.
लगाय लियो उर सो अभिलाख्यो।
कै मखतूल गुहे गहने,
रस मूरतिवत सिगार कै चाख्यो।
साँवरे लाल को साँवरो रूप,
मै नैननि को कजरा करि राख्यो ॥

राधे कही है कि तै छमियो,
ब्रजनाथ किते अपराध किये मे।

कानन तान न भूलत ना खिन,
आँखिन रूप अनूप पिये मै ।।
आपने ओछे हिये मे दुराइ,
दयानिधि देव बसाय लिये मै ।
हौ ही असाध बसी न कहूँ,
पल आध अगाध तिहारे हिये मै ।।

धार मे धाइ धँसी निरधार ह्वे,
जाय फसी उकसीं न अधेरी ।
री अँगराइ गिरी गहिरी,
गहि फेरे फिरी न घिरी नहि घेरी ।
देव कछू अपनो बस ना,
रस लालच लाल चिते भई चेरी ।
बेगही बूडि गई पखियाँ,
अँखियाँ मधुकी मखियाँ भई मेरी ।।

रीझि-रीझि रहसि-रहसि हँसि-हँसि उठै,
साँसे भरि आँसू भरि कहत दई दई ।
चौंकि-चौकि चकि-चकि औचकि उचकि देव,
जकि- जकि बकि- बकि परत बई-बई ।
दुहुन को रूप गुन दोऊ बरनत फिरैं,
घर न थिरात रीति नेह की नई-नई ।
मोहि मोहि मोहन को मन भयो राधा-मय,
राधा-'' न मोहि मोहि मोहन मई-मई ।।

कोई कहौ कुलटा कुलीन अकुलीन कहौ,
कोई कहो रंकिनि कलंकिनि कुनारी हौं ।
कैसो परलोक नरलोक बर लोकन मे,
लीन्हो मैं अलोक लोक लीकन तें न्यारी हौं ।।

तन जाहि मन जाहि देव गुरजन जाहि,
जीव क्यों न जाहि टेक टेरत न टारी हौं ॥
बृंदाबनवारी बनवारी के मुकुट-वारी,
पीत-पटवारी वाहि मूरति पै वारी हौं।

चाखि के चषक चख भरि चोखी छबि छातो,
मन छत छितिपरी पीर छतिया की हौ।
गोकुल के छैल ढूँढि ढूँढि बन मैल हौ,
अकेली यहि गैल तो को ऐल करि थाकी हौ।
मंद मुसक्याय लै समाय जी मे ज्याय लै रे,
प्याइले पियूष प्यासी अधर-सुधा की हौ।
मेरे सुखदाई दौरे देवजू दिखाई नेकु,
ए रे ब्रज-भूप तेरे रूप-रस छाकी हौ ॥

मोहि तुम्है अतुरु गनै न गुरजन तुम मेरे,
हौं तुम्हारी पै तऊ न पघिलत हौ।
दूरि रहे या तन मे मन में न आवत हौ,
पंच पूँछि देखे कहूँ काहू ना हिलत हौ।
ऊँचे चढि रोई कोई देत न दिखाई देव,
गातनि की ओट बैठे बातन गिलत हौ।
ऐसे निरमोही सदा मोही में बसत अरु,
मोही तें निकरि फेरि मोही न मिलत हौ।

रावरो रूप रह्यो भरि नैननि,
बैननि के रस सौं श्रति सानो।
गात में देखत गात तुम्हारे ई,
बात तुम्हारिये बात बखानो।
ऊधा हहा हरि सौं कहियो,
तुम हौ न इहाँ यह हौं नहि मानो।

या तन ते बिछुरे तो कहा,
मन ते अनतै जु बसौ तब जाना ॥

जौ न जोमें प्रेम तब कीजै व्रतनेम,
कञ्ज-मुख भूलै तब संजम बिसेखिये।
आस नहीं पीकी तब आसन ही बाँधियत,
सासन के सासन को मूँदि पति पेखिये।
नख ते शिखा लौं सब स्याममई बाम भई,
बाहिर लौं भीतर न दूजो देव देखिए।
जोग करि मिले जो बियोग होय बालम,
जु ह्याँ न हरि होंय तब ध्यान धरि देखिये॥

फलि-फलि फूलि-फूलि फलि-फैलि झुकि-झुकि,
झपकि-झपकि आई कुंजै कहूँ कोद ते।
हिलि-मिलि हेलिन कै केलिन करन गई,
बेलिन बिलोकि बधू ब्रज की बिनोद ते।
नंदजू की पौरि पर ठाढे हैं रसिक देव,
मोहन जू मोह लीनी मोहनी के मोदते।
गाथन सुनत भूली साथन के फूल गिरे
हाथन के हाथन ते गोदन के गोद ते॥

घोर तरु नीजन बिपिन तरुनीजन ह्वै,
निकसी निसंक निसि आतुर अतंक में।
गनैं न कलंक मृदु- लङ्कनि मयंक मुखी,
पंकज पगन धाईं भागि निसि-पंक मे।
भूषननि भूलि पैन्हे उलटे दुकूल देव,
खुले भुजमूल प्रतिकूल बिधि बंक में।
चूल्हे चढे छाँड उफनात दूध भाँडे उन,
सुत छाँडे अंक पति छाँडे परजंक में॥

कालिंदी के कूलनि तरुनि तरु-मूलनि,
निहारि हरि-अंग के दुकूलनि उघेरतीं।
मल्ली मल मालती नेवारी जाती जूही देव,
अंबकुल बकुल कदम्बन मे हेरतीं।
ताल दै दै तालनि तमालनि मिलत फिरै
बोलि-बोलि बाल भुज भेंट भट भेरतीं।
पुलकि-पुलकि पुलनानि मे पुलोजमा सी,
बिलपि बिलोकि कान्ह कान्ह कहि कै टेरतीं॥

बैरागिनि कीधौ अनुरागिनि सोहागिनि तू,
देव बडभागिनी लजाति औ लरति क्यों।
सोवति जगति अरसाति हरखाति,
अनखाति बिलखाति दुख मानति डरति क्यो।
चौंकति चकति उचकति औ बकति,
बिथकति औ थकति ध्यान धीरज धरति क्यो।
मोहति मुरति सतराति इतराति,
साहचरज सराहि आहचरज मरति क्यों॥

जबते कुँवर कान्ह रावरी कलानिधान,
कान परी वाके कहूँ सुजस कहानी-सी।
तबही ते देव देखी देवता सी हँसति-सी,
खीझति सी रीझति-सी रूसति रिसानी-सी
छोही-सी छली-सी छीनिलीनी-सी छकी सी छीन,
जकी-सी टकी-सी लगी थकी थहरानी-सी।
बाँधी-सी बधी-सी विषबूडी-सी बिमोहित-सी,
बैठी वह बकति बिलोकति बिकानी-सी॥

बसी गुन बाँधि चित चंग सो चढायो सुनि,
तानन की तुंग धुनि चंग मुहचंग की।

मधुर मृदंग सुर उपज उपंग भई,
पगु परबीन बीन बोलनि अभंग को।
बधिक बिहग बधू ब्याध ज्यों कुरंग,
ताहि हनि है कुरंगनेनी पारधी अनग की।
संग संग डोलति सखीनि के उमंग भरा,
अंग अंग उठति तरंग स्यामरंग की॥

राधिका कान्ह को ध्यान धरौं,
तब कान्ह ह्वै राधिका के गुन गावै
त्यौं अंसुवा बरसै बरसाने को,
पाती लिखे लिखि राधिके ध्यावै।
राधे ह्वै जात तहं छिन मे,
वह प्रेम की पाती लै छाती लगावै।
आपु मे आपुन हीं उरझै—
सुरझै बिरुझै समुझै समुझावै॥

बरुनी बघम्बर मे गूदरी पलक दोऊ
कोए राते बसन भगौहै भेप रखियाँ।
बूड़ी जल ही मे दिन जामिनि हूँ जागै,
भौहै धूम सिर छायौ बिरहानल बिलखियाँ॥
अंसुवा फटिक-माल लाल डोरे सेली पेन्हि,
भई है अकेलो तजि चेली संग-सखियाँ।
दीजिये दरस देव कीजिये सँयोगिनि ये,
जोगिनि ह्वै बैठी है बियोगिनिक की अँखियाँ॥

प्रानसे प्रानपती सों निरतर,
अंतर अंतर पारत हेरी।
देव कहा कहौ बाहेर हूँ,
घर बाहेर हूँ रहै भोह तरेरी॥

लाज न लागत लाज अहे,
तोहि जानी मैं आजु अकाजिनि ए री।
देखन दै हरि को भरि नैन,
घरी छिन एक सरीकिनि मेरी॥

स्याम को नाम सुनो जब ते,
इन कानन आनि कहूँ ते बसाई।
देखि उन्हैं दुरि ढूँढे कहूँ,
दृग पूरि रही पहिले दुखदाई।
देव कहूँ तौ मिलौगी गोपालहि,
है अब आँखिन तै उर-भाई।
न्याव चुकै तौ चुकै ब्रजराज सौं,
आजु तौ लाज सो मो सो लराई॥

देव अचान भई पहिचान,
चितौत ही स्याम सुजान के सौहै।
लालच लाज चितौत लग्यो,
ललचावत लोचन लाज लजौहैं।
प्रेम पुराने को बीजु उग्यौ,
जमि छीजि पसीजि हिये हुलसौहैं।
लाज-कसी उकसी न, उतै,
हुलसी अँखिया बिकसी कछु भौहैं॥

जगमगे जोबन जराऊ तरिवन कान,
ओठन अनूठे रस हाँसी उमडे परत।
कंचुकी मे कसे आवैं उकसे उरोज,
बिंदुबंदन लिलार बडे बार घुमडे परत।
गोरे मुख सेत सारी कंचन किनारीदार,
देव मनि झुमका झुमकि झुमडे परत।

बडे बडे नैन कजरारे बडे मोती नथ,
बड़ी बरुनीन होड़ा-होड़ी हुमडे परत ॥

आई बरसाने ते बुलाई वृषभानसुता,
निरखि प्रभात प्रभा भानु की अथै गई ।
चक-चकवानि के चकाये चकचोटन सौं
चौंकत चकोर चकचौंधि सी चकै गई।
देव नँदनंद जू के नैननि अनंदमई।
नँद जू के मंदिरनि चदमई छ्वै गई।
कुंजनि कलिन मई गुंजनि अलिन- मई,
गोकुल की गलिन नलिन-मई कै गई ॥

देव सुबरन गुन बींध्यो है मधुर महा,
अधर अखारे केई सुघर घटार मे।
मंद मुसुकानि पटु तानि पटुता निपट,
न थक्यो ये नथ को निरत निराधार मे।
घूँघट-बितान तान तोरत तरयोननि सौं,
तिलक कपोल बेंदी तूल के लिलार मे।
मोती लटकन को नवल नटु नाचै सदा,
नैन-नटवानि की चटुल चटसार मे ॥

लागत समीर लंक लहकै समूल अंग,
फूल से दुकूलनि सुगंध बिथुरो परै।
इन्दु-सो बदन मंद हाँसी सुधा बिंदु,
अरबिंद ज्यों मुदित मकरंदनि मुर्यो परै।
ललित लिलार रंगमहल के आँगन के,
मग में धरत पग जावक घुरयो परै।
देव मनि-नूपुर पदुमपद ह्वै पर ह्वै,
भू पर अनूप रंग-रूप बिथुरयो पर ॥

नन्दलला वृषभानलली भये,
सामुहे देव सँयोग सुभै कै।
लोयन लोयन लागे अनूप,
दुहू के दुहूँ रसरूप लुभै कै।
मन्द हँसी अरबिद ज्यौं बिन्द,
अँचै गये दीठि में दीठि खुभै कै।
कज की मंजिम खंजन मानौ,
उडे चुनि चचुनि चंचु चुभै कै॥

हौं सपने गई देखन को,
कहूँ नाचत नन्द जसोमति को नट।
वा मुसकाइ कै भाव बताइ कै,
मेरो ई खैचि खरो पकरा पट।
तौ लगि गाइ बगाइ उठी कहि,
देव बधूनि मथ्यौ दधि को घट।
जागि परी तो न कान्ह कहूँ
न कदम्ब न कुंज न कालिदी को तट॥

झहरि-झहरि झीनी बूँद हैं परति मानों,
घहरि-घहरि घटा घेरी है गगन मे।
आनि कह्यो स्याम मो सों चलौ झूलिबे कों आज,
फूली ना समानी भई ऐसी हौं मगन में।
चाहत उठाई उठि गई सो निगोडी नीद,
सोय गए भाग मेरे जागि वा जगन मे।
आँख खोलि देखौं तौ न घन है, न घनस्याम,
वेई छाई बूँदै मेरे आँसु ह्वै दृगन मै॥

रूप के मन्दिर साँवरो सुदर,
चाल चलै गुन गर्ब-गहीली।

जोबन के बलसानी हसै,
अलसानी हँसैं अँखियाँ रनमीली ।
देव सुनें छवि सीस धुनै,
अबलाजन जे अब लाज-लजीली ।
रेहै क्यौ ऊजरी गोकुल में,
ब्रजगूजरी गोकुल की गरबीली ॥

मंजुल मंजुरी पंजरी-सी ह्वै,
मनोज के ओज सँवारति चीर न ।
भूख न प्यास न नींद पर
परी प्रेम-अजीरन के जूर जीरन ॥
देव घरी पल जाति लुरी,
अँसुवानि के नीर उसास-समीरन ।
आहन जाति अहीर अहै तुमैं,
कान्ह कहा कहौ काहू की पीर न ॥

दोऊ किवार दुहूँ भुज दाबे,
कछू बिच पैनी चितौनि छुरी है ।
इन्दु ते सुंदर आनन मैं मृदु,
मन्द हंसी हरि हेरि दुरी है ।
केसर खौरि दियें उझकै,
गृहपौरि के भीतर दौरि दुरी है ।
मैन मनो तिरछी बरछी करै,
देव नचावत नैन-तुरी है ॥

बैठी कहा उटि देखो भटू,
रँगभौन तुम्हैं बिन लागत सूनो ।
चातक लौं रटि देव तुम्है,
स चकोर भया चिनगी करि चूनो ।

माझ सुहाग की मॉझ उदे करि,
सौति सरोजनि को बन ऊनो।
पावस ते उठि कीजिये चैत,
अमावस ते उठि कीजिये पूनो॥

ग्वालि गई इक द्यॉ की वहॉ,
मग रोकी सु तो मिसु कै दधिदानि को।
वा तौ भटू यह भेटी भुजा भरि,
नातौ निकासि कछू पहिचानि कौ।
आई निछावर कै मन-मानिक,
गोरस दे रस ले अधरान को।
वाही दिना ते हिये मे गडौ,
वहै ढीठ बडौ री बडी ऑखियान को॥

सखिन को सुख सुनै सौतिनि कौ महादुख,
होत गुरजननि के गुन कौ गरूर है।
देव कहै लाख-लाख भॉति अभिलाष पूरि,
पी के उर उमगति प्रेमरस पूर है।
तेरो कल बोल कल भावन कौ स्वाति बुंद,
जहॉ जाइ पर्यौ तहॉ तेसोई समूर है।
व्यालमुख विष ज्यौ पियूष ज्यौं पपीहा-मुख,
सीप-मुख मोती कदली-मुख कपूर है॥

भौन भरे सिगरे ब्रज सौंह,
सराहत तेरे ई सील-सुभाइन।
छाती सिरात सुनै सबकी,
चहुँ ओर तें चोप चढी चित-चाइन।
ए री बलाइ ल्यौं मेरी भटू,
सुनि तेरी हौ चेरी परौं इनि पायन।

सौतिहू की अखियाँ सुख पावति,
तो मुख देखि सखी-सुखदाइन ।।

तेई बधू जिनके द्दग-द्वार,
परी परदा प्रिय-प्रेम की पोढ़ी ।
देव पतिव्रत पौरिया के उर,
कीरति की सिर चादरि ओढ़ी ।
अन्तर अन्त रमै भरमै नहि,
कायर कूर कलंकी कि कोढ़ी ।
ना खिन डोलि सकै कुल-लाज ते,
आँखिन मे दिढ लाज की ड्योढ़ी ।।

भोरही भोरही श्री वृषभान के,
आयो अकेलोई केलि-भुलान्यो ।
देव जू सोवति ही उत भावती,
झीनो महा झलकै पट तान्यो ।
आरस ते उघरी इक बाँह,
भरी छबि हेरि हरी अकुलान्यो ।
मीडत हाथ फिरै उमडो-सो,
मडो ब्रज बीच फिरै मडरान्यो ।।

दूरि धरो दीपक झिलिमिलात झीनो तेज,
सेज के समीप छहरान्यो तमतोम सो ।
दूलहै दुराइ आली केलि के महल गई,
पेलि कै पठाई बधू सरद के सोम सो ।
अङ्क भरि लीन्ही गहि अंचल को छोरु देव,
जोरु कै जनावे नायो [illegible] म सो ।
लाल के अधर बाल अधरनि लागि-लागि,
उठी मैन-आगि पघिलानो मन मोम सो ।।

खरी दुपहरी हरीभरी फरी कुंज मंजु,
गुंज अलि-पुंजनि की देव हियो हरि जाति ।
सीरे नदनीर तरु सीतल गहीर छाँह,
सोवैं परे पथिक पुकारैं पिकी करि जाति ।
ऐसे मै किसोरी भोरी कोरी कुम्हिलाने मुख,
पंकज से पाँय धरा धीरज सौं धरि जाति ।
सोहै घामस्याम मग हेरति हथेरी ओट,
ऊँचे धाम बाम चढि आवति उतरि जाति ॥

पीछे परबीनैं बानैं संग की सहेली आगे,
भार डर भूषन डगर डारं छोरि छोरि ।
चौंकति चकोरनि त्यौं मोरै मुख मोरनि त्यौं,
भौरनि की ओर भीरु देखै मुख मोरि-मोरि ॥
एक कर आली-कर उपर ही धरे,
हरे-हरे पग धरे देव चले चित चोरि चोरि ।
दूजे हाथ साथनि सुनावति बचन,
राजहंसनि चुनावति मुकुत-माल तोरि तोरि ॥

पीत-रंग सारी गोरे अंग मिलि गई देव,
श्रीफल-उरोज-आभा आभासै अधिक सी ।
छूटी अलकनि छलकनि जलबूंदन की,
बिना बेंदी बंदन बदन सोभा बिकसी ।
तजि तजि कुंज पुंज ऊपर मधुप गुंज गूंजरत,
मंजु रव बोले बाल पिक-सी ।
नीबी उकसाइ नेकु नयन हँसाय हँसि,
ससिमुखी सकुचि सरोवर तै निकसी

आजु गई हुती कुंजनि लौं,
बरसै उत बूंद घने घन घोरत

देव कहै हरि भीजत देखि,
अचानक आय गए चित चोरत।
पोटि भट तट ओट कुटी कै,
लपेटि पटी सौं कटीपट छोरत।
चौगुनो रंगु चढयौ चित मे,
चुनरी के चुचात लला के निचोरत॥

टूटि परे चुनि लै गई हार,
निचारि के बारनि बार न हारे।
लै मुँह मूँदि मनाइ गई,
बिछिया गहि पाँय पुकारनहारे।
जानी न जात जे संग रमे,
रतिरङ्ग रमे के बिहारनहारे।
काम-कथा सब जानत दीपक
सेज-समीप निहारन हारे॥

आगे धरि अधर पयोधर सधर जानि,
जोरावर जघन सघन लरे लचि कै।
बारबार देती बकसीसे जेतवारनि कौं,
बारनि को बाँधे जे पिछारे दुरे बचि के।
उरुन दुकूल दै उरोजनि को फूलमाल,
ओठनि उठाये पान खाइ-खाइ पचि के।
देव कहै आजु मनौ जीत्यौ है अनग रिपु,
पी के संग सगर सुरति रंग रचि के॥

प्यारी सँकेत सिधारी सखी संग,
स्याम के काम सँदेसनि के मुख।
सूनो इतै रँगभौनु चितै,
चित मौन रही चकि चौक चहूँ र ।

एक ही बार रही जकि ज्यौं कि त्यों
भौहनि तानिकै मानि महा दुख।
देव कछू रद बीरी दबी सी,
सु हाथ को हाथ रही मुख की मुख ॥

बालम बिरह जिन जान्यो न जनम भरि,
बरि-बरि उठै ज्यौं ज्यौं बरसै बरफ राति।
बीजन डुलावत सखीजन सो सीत हू मे,
सौतिन-सराप तन-तापनि तरफराति।
देव कहै साँसनि सों अँसुवा सुखात,
मुख निकसै न बात ऐसी सिसकी सरफराति।
लोटि लौटि परति करौट खटपाटी लेलै,
सूखे जल सफरी लौं सेज पै फरफराति ॥

लाल बिदेस बियोगनि बाल,
बियोग की आगि जई झुरि झूरी।
पान सो पानी सों प्रेम कहानी सौं,
प्रान-ज्यौं प्राननि यों मत हूरी।
देव जू आजु हि ऐबे की औधि,
सुबीतति देखि बिसेखि बिसूरी।
हाथ उठायो उडाइबे को,
उडि काग गरे परी चारिक चूरी ॥

साँसन ही सौ समीर गयो अरु,
आँसुन ही सब नीर गयो ढरि।
तेज गयो गुन लै अपनो
अरु भूमि गई तन की तनुता करि।
देव जिये मिलिबेई की आस कै,
आस हू पास अकास रह्यो भरि।

गा दिन ते मुख फेरि हरे हँसि,
हेरि हियो जु लियो हरि जू हरि ॥

सहर-सहर सौंधो सीतल समीर डोलै,
घहर-घहर घन घेरि के घहरिया ।
झहर-झहर झुकि झीनी झरि लायो देव,
छहर-छहर छोटी बूंदन छहरिया ।
हहर-हहर हँसि हँसि के हिंडोरे चढी,
थहर-थहर तन कोमल थहरिया ।
फहर-फहर होत पीतम को पीतपट,
लहर-लहर होत प्यारी की लहरिया ॥

सूझत न गात बीति आई अधराति,
अरु सोए सब गुरजन जानिकै बगरके ।
छिपिकै छबीली अभिसार को केवार खोले,
खुलिगे खजाने चारु चदन अगर के ।
देव कहै भौंर गुंजि आए कुंज-कुंजनि तैं,
पूँछि पूँछि पीछे परे पाहरू डगरके ।
देवता कि दामिनी मसाल किधौं जोतिजाल,
झगरे मचत जागे सिगरे नगरके ॥

हँसत हँसत आई भावते के मन भाई,
देव कहै छबि छाई सोने से सरीर सों ।
तैसी चन्दमुखी के वा चद-मुख चन्द्रमा सों,
होड परी चाँदनी औ चाँदनी से चीर सों ।
सोधे की सुबास अंग बास औ उसास-बास,
आसपास बासि रही सुखद समीर सौं ।
कुञ्ज तजि गुंजत गभीर गिरि तीर-तीर,
रह्यौ रंगभौन भरि भौरनि की भीर सों ॥

धाई खोरि खोरि ते बधाई पिय-आवन की,
सुनि कोरि-कोरि रस भामिनि भरति है।
मोरि-मोरि बदन निहारती बिहार-भूमि,
घोरि-घोरि आनँद-घरी सी उघरति है।
देव कर जोरि जोरि बंदत सुरन,
गुरु-लोगनि के लोरि लोरि पॉयन परति है
तोरि-तोरि माल पूरे मोतिन को चौक,
निवछावरि को छोरि छोरि भूषन धरति है ॥

•

आगमन पीतम चले की सुनि चली स्वाम,
आगे आँसू चले ते छिपाये छल छंद ही।
सिसकी भरत मिसकी न बात बिसकी-सी
बेलि बाढी उत्पात हिये दुख कद ही।
देव लखि लौटि पिय दीनो पग आइबे को,
बास ही को स्वास मैं हुलास ह्वै अनंद ही।
निघट्यो न दुख, उघट्यो न सुख, घूँघट ही
ससक्यो सकान्यो मुसकान्यो मुख मंद ही ॥

सखी के सकोच गुरुसोच मृगलोचनि,
रिसानी पिय सों जु नेकु उन हँसि छुयो गात।
देव वे सुभाय मुसक्याय उठि गए,
यहि सिसिकि-सिसिकि निसि खोई रोय पायो प्रात।
कौन जान बीर बिन बिरही बिरह-बिथा,
हाय-हाय करि पछिताय न कछू सोहात।
बडे बडे नैननि ते आँसू भरि भरि ढरि,
गोरो-गोरो मुख आजु ओरो-सो बिलोनो जात ॥

[illegible] ते गिरत फूल पलटे दुकूल,
अनुराग अनुकूल भाग जाके बडभाग के

अंजन अधर बीच नख-रेख लाल,
लाल जावक तिलक भाल सघन सुहाग के।
भौहै अलसोहै पल सोहै पगे पीक-रस,
रगमगे नैन रैनि जागे लगे लाग के।
काहे को लजात जलजात से बदन,
मोहि महा सुख देत आए देत पैच पाग के॥

प्यारी हमारी सों आवो इतै,
कवि देव कुप्यारी ह्वै कैसे के ऐये।
प्यारी कहो मति मो सों अहो,
कहि प्यारी यों प्यार की प्यारी बुलैये।
कै वह प्यार कै एतो कुप्यार,
औ न्यारी ह्वै बैठि के बात बनैये।
प्यारे पराए सौं कौन परेखो,
गरे परि कौ लगि प्यारी कहैये॥

रावरे पाँयनि ओट लसै,
पग गूजरी बार महावरु ढारे।
सारी असावरी की झलकै,
छलकै छबि छोर महानि घुमारे।
आवो जू आवो दुराहु न मोहु सो,
देवजू चद दुरै न अँध्यारे।
देखौ हो कौनसी छैल छिपाय
तिरीछे हँसै वह पीछे तिहारे॥

हित की हितू री नहि तू री समुझावे आनि,
सुख दुख मुख सुखदानि को निहारनो।
लपने कहाँ लों बालपने की बिकल बातें,
अपने जनहि सपनेहू न बिसारनो।

देवजू दरस बिनु तरसि मर्यो है पग,
परसि जियैगो मनत्ररो अनमारनो।
पतिब्रत-व्रती ए उपासी प्यासी अँखियन,
प्रात उठि पीतम पिआयो रूप-पारनो॥

पीक-भरी पलकैं झलकै,
अलकै जु गडी सु लसै भुज खोज की।
छाय रही छबि छैल की छाती मै,
छाप बनी कहूँ ओछे उरोज की।
ताहि चितौति बडी अँखियान ते,
ती की चितौनि चली अति ओज की।
बालम ओर बिलोकि के बाल,
दई मनौ खैचि सनाल सरोज की॥

फूले अनारनि पाँडर डारनि,
देखत देव महाउर माचै।
माधुरी भौरनि अंब के बौरनि,
भौरनि के गन मंत्र से बाँचे।
लागि उठे बिरहागिनि की,
कचनारनि की सु अचानक आँचै
साँचै हँकारि पुकारि पिकी कहै,
नाचै बनैगी बसत की पाँचै॥

होरी को सोरु पर्यो ब्रज पौरि,
किसोरी को चित्त बिछोहनि छीज्यो।
देव दुरी फिरै देखिबे को,
न दुरै मन ओज मनोज को मींज्यो।
केसरिया चकचौंधत चीर ज्यौं,
केसरि-नीर सरूप लसी ज्यो।

लाल के रंग मै भीजि रही,
सो गुलाल के रग मै चाहति भीज्यो ॥

लोग-लोगाइन होरी लगाई,
मिला-मिली-चाउ न मेटत ही बन्यो ।
देवजू चंदन-चूर कपूर,
लिलारन लै लै लपेटत ही बन्यो ।
वे यही औसर आये इहाँ,
समुहाय हियो न समेटत ही बन्यो ।
कीनी अनाकिनियो मुख मोरि पै,
जोरि भुजा भटू भेटत ही बन्यो ॥

सुनि के धुनि चातक मोरनि की,
चहुँ ओरनि कोकिल कूकनि सों ।
अनुराग भरे हरि बागनि मे,
सखि रागत राग अचूकनि सों ।
कवि देव घटा उनई जु नई,
बनभूमि भई दल दूकनि सों ।
रँगराती हरी हहराती लता,
झुकि जाती समीर के झूकनि सों ॥

आली झुलावति झूँकनि सों,
झुकि जाति कटी झननाति झकोरे ।
चचल अंचल की चपला चल,
बेनी बडी सो गडी चित चोरे ।
या बिधि झूलत देखि गयो,
तब ते कवि देव सनेह के जोरे ।
झूलत है हियरा हरि को,
हिय माँह तिहारे हरा के हिडोरे ॥

राजत रजत सैल रच्यो केलि कयलास,
सोन-मनि सिखर सुमेरुहि समादरैं ।
रंग-रंग अगन अनग रंग-महल—
उदित रंग राधे रति-रभा को निरादरैं ।
भाँति भाँति कोरनि अमंद चद्रकांति-पाँति,
चंद को दरस देव बरसति बादरैं ।
बरनि सोपाननि ऊपर रह्यो भू पर को,
चारिहू तरफ फहराती रस चादरैं ॥

छीर की सी लहरि छहरि गई छिति माँह,
जामिनी की जोति भामिनी को मानु ऐंठयो है ।
ठौर-ठौर छूटत फुहारे मनौ मोतिन के,
देव बनु याको मनु का को न अमैठ्यो है ।
सुधा के सरोवर सों अंबर उदित ससि,
मुदित मराल मनु पैरिबे को पैठ्यो है ।
बेलि के बिमल फूल फूलत समूल मनौ,
गगन ते उडि उडगन गन बैठो है ॥

फटिक सिलानि सों सुधार्यौ सुधा-मंदिर,
उदधि दधि को सो अधिकाई उमगै अमद ।
बाहर ते भीतर लौं भीति न देखैये देव,
दूध को सो फेनु फैलो आँगन फरसबंद ।
तारा सी तरुनि तामै ठाढी झिलमिलि होति,
मोतिन की जोति मिली मल्लिका को मकरंद ।
आरसी-से अम्बर मे आभासी उज्यारी लागै,
प्यारी राधिका को प्रतिबिंब-सो लगत चद ॥

आसपास पुहुमि प्रकास के पगार सूझै,
बन न अगार डीठि गली औ निबर

पारावार पारद अपार दसो दिसि बूडी,
चड ब्रहमड उतरात बिधु-बर ते ।
सरद-ज्रोन्हाई जन्हुजाई धार सहस,
सु धाई सोभासिधु नभ सुभ्र गिरवर ते ।
उमडो परत जोति-मंडल अखंड,
सुधामंडल मही मै बिधु-मंडल बिबरते ॥

तेरो कह्यो करि-करि जीव रह्यो जरि-जरि,
हारी पॉय परि परि तऊ तै न की सँभार ।
ललन बिलोकि देव पल न लगाए तब,
यों कल न दीनी तै छलन उछलनहार ।
ऐसे निरमोही सों सनेह बॉधि हो बँधाई,
आपु बिधि बूडयो मॉझ बाधासिधु निरधार ।
ए रे मन मेरे तै घने रे दुख दीन्हे अब,
ए केवार दै कै तोहि मूँदि मारौ एक बार ॥

ऐसो जो हौं जानतो कि जैहै तू विषै के संग,
ए रे मन मेरे हाथ पॉय तेरे तोरतो ।
आजुलौं हौं कत नरनाहन की नाही सुनि,
नेह सों निहारि हारि बदन निहोरतो ।
चलन न देतो देव चंचल अचल करि,
चाबुक-चिताउनीनि मारि मुँह मोरतो ।
भारो प्रेम पाथर नगारौ दै गरे सों बॉधि,
राधाबर-बिरद के बारिधि मै बोरतो ॥

—:o:—

घन आनंद

तीछन ईछन बान बखान सो,
पैनी दसान लै सान चढावत।
प्रानन प्यारे, भरे अति पानिप,
मायल घायल चोप चटावत।
यौ घनआनँद छावत भावत,
जान-सजीवन-ओर तैं आवत।
लोग हैं लागि कबित्त बनावत,
मोहि तौ मेरे कबित्त बनावत॥

नेही महा ब्रजभाषा-प्रवीन औ
सुन्दरतानि के भेद कों जानै।
जोग-बियोग की रीति में कोविद,
भावना भेद-स्वरूप को ठानै।
चाह के रंग में भीज्यो हियो,
बिछुरें मिलै प्रीतम साति न मानै।
भाषा-प्रवीन, सुछंद सदा रहै,
सो घन जो के कवित्त बखाने॥

प्रेम सदा अति ऊंचो लहै सु,
कहै इहि भाँति की बात छकी।
सुनि कै सब के मन लालच दौरै,
पै बौरे लखैं सब बुद्धि-चकी।
जग की कविताई के धोखै रहै,
ह्याँ प्रबीनन की मति जाति जकी।

समझै कबिता घनआनँद की,
हिय-आँखिन नेह की पीर तकी ॥

निरखि सुजान प्यारे रावरो रुचिर रूप,
बावरो भयौ है मन मेरो न सिखै सुने ।
मति अति छाकी गति थाकी रतिरस भीजि,
रीझ की उझलि घनआनँद रह्यो उनै ।
नैन बैन चित-चैन है न मेरे बस, मेरी,
दसा अचिरज देखौ बूडति गहे गुनैं ।
नेह लाय कैसे अब रूखे ह्वूजियत हाय,
चद ही के चाय च्वै चकोर चिनगी चुनै ॥

हीन भएँ जल मीन अधीन,
कहा कछु मो अकुलानि समानै ।
नीर सनेही कौं लाय कलंक,
निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै ।
प्रीति की रीति सु क्यौ समझै जड,
मीत के पानि परे को प्रमानै ।
या मन की जु दसा घनआनँद,
जीव की जीवनि जान ही जानै ॥

पहलै घनआनँद सींच सुजान,
कहीं बतियाँ अति प्यार पगी ।
अब लाय बियोग की लाय बलाय,
बढाय बिसास-दगानि दगी ।
अँखियाँ दुखियानि कुबानि परी,
न कहूँ लगै कौन घरी सु लगी ।
मति दौरि थकी न लहै ठिक ठौर,
अमोही के मोह-मिठास ठगी ॥

मन-पारद कूप लौं रूप चहे,
उमहै सु रहै नहि जेतो गहौं।
गुन-गाडनि जाय परे अकुलाय,
मनोज के ओजनि सूल सहौं।
घनआनँद चेटक धूम मे प्रान घुटैं,
न छुटै गति कासों कहो।
उर आवत यौं छबि-छाँह ज्यौ हौ,
ब्रजछैल की गेल सदाई रहौं॥

रससागर नागर स्याम लखें,
अभिलापनि-धार-मँझार बहौं।
सु न सूझत धीर को तीर कहूँ,
पचि हारि कै लाज सिवार गहौं।
घनआनँद एक अचंभो बड़ो गुन,
हाथ हूँ बूडति कासौ कहौं।
उर आवत यों छबि-छाँह ज्यौ हों,
ब्रजछैल की गेल सदाई रहौं॥

तब तौ छबि पीवत जीवत हे,
अब सोचन लोचन जात जरे।
हित-पोषके तोष सु प्रान पले,
बिललात महादुख-दोष-भरे।
घनआनँद मीतसु जान बिना,
सबही सुख साज समाज टरे।
तब हार पहार से लागत हे,
अब आनि के बीच पहार परे॥

निरधार अधार दै धार-मँझार,
दई गहि बाँह न बोरिये जू।
घनआनद आपने चातक कौं,
गुन-बाँधिलै मोह न छोरिये जू।
रस प्याय कै ज्याय बढाय कै आस,
बिलास में यौं बिष घोरिये जू।

रावरे रूप की रीति अनूप,
नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारिये।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी
अघानि कहूँ नहि आन तिहारियै।
एक ही जीव हुतौ सु तौ वारयौ,
सुजान सकोच औ सोच सहारियै।
रोकि रहै न, दहै घनआनँद,
बावरी रीझ के हाथनि हारियै॥

तब तौ दुरि दूरहि तैं मुसकाय,
बचाय कै और कि दीठि हँसै।
दरसाय मनोज की मूरति ऐसी,
रचाय कै नैननि मै सरसै।
अब तौ उर माहि बसाय कै मारत,
ए जू बिसासि कहाँ धौं बसे।
कुछ नेह-निबाह न जानत हे तौ,
सनेह की धार मैं काहें धॅसे॥

रूप-चमूप सज्यौ दल देखि,
भज्यो तजि देसहि धीर-मवासी।
नैन मिलै उर के पुर पैठते,
लाज लुटी न छुटी तिनका सी।

प्रेम दुहाई फिरी घनआनँद,
बाँधि लिये कुल-नेम गुढासी।
रीझ सुजान सची पटरानी,
बची बुधि बापुरी ह्वै करि दासी॥

जोरि कै कोरिक प्रानिनि भावते,
सग लिये अँखियानि मै आवत।
भीजे कटाछन सो घनआनँद,
छाय महारस कौ बरसावत।
ओट भएँ फिरि या जिय की गति,
जानत जीवनि ह्वै जु जनावत।
मीत सुजान अनूठिये रीति,
जिवाय कै मारत मारि जिवावत॥

फैलि रही घर अंबर पूरि,
मरीचिनि-बीचिनि-संग हिलोरति।
भौंर-भरी उफनाति खरी सु,
उपाव की नाव तरेरनि तोरति।
क्यौ बचियै भजि हू घनआनँद,
बैठि रहै घर पैठि ढढोरति।
जोन्ह प्रलै के पयोनिधि लौं,
बढ़ि बैरिनि आज बियोगिनि बोरति॥

आई है दिवारी चीते काजनि जिवारी प्यारी,
खेलै मिलि जूवा पैज पूरे दाव पावहीं।
हारहि उतारि जीतैं मीत-धन लच्छनि सो,
चोप-चढे बैन चेन-चहल मचावहीं।
रंग सरसावे बरसावै घनआनद,
उमंग-ओपे अंगनि अनंग दरसावही।

ादयरा जगाय जागे पिय पाय तिय रागं,
हियरा जगाय हप जोगहि जगावही ।।

लाखनि भाँति भरे अभिलापनि,
कै पल पाँवडे पथ निहारे ।
लाडिली आवनि लालसा लागि,
न लागत है मन मै घन धार ।
यौ रस भीजे रहै घनआनंद,
रीभे सुजान सरूप िहार ।
चायनि-बावरे नेन कवै,
अँसुवान सों रावरे पाय पखारे

आ ह कहूँ मनमोहन मो गली,
पूरब-भागनि को ब्रत ऊजे ।
हाय कछू न बस्याय तबे,
दूरि देखिबो दूभर, छाँह क्यों छूजे ।
माँगति हौं बिधिना पै बडे खन,
जौ कबहूँ जिय आसहि पूजे ।
चौथि को चद लखे ब्रजचद सो,
लागे कलक तौ ऊजरे हूजे ।।

दरसन-लालसा-ललक-छलकनि पूरि,
पलकनि लागे लगि आवनि अरबरी ।
सुंदर सुजान मुखचंद को उदै बिलोकें,
लोचन-चकोर सेवै आरति-परब री ।
अंग-अंग अंतर उमंग-रंग भरि भारी,
बाढी चोप चुहल की हिय मै हरबरी ।
बूडि-बूडि तरैं औधि-थाह घनआनंद यौं
जीव सूक्यौ जाय ज्यौ ज्यौं भीजत सरबरी ।।

रावरे गुननि बाँधि लियौ हियो जान प्यारे,
इतै पै अचभा छोरि दीनी जु सुरति है।
उघरि नचाय आपु चाय मै रचाय हाय,
क्यौ करि बचाय दीठि यौ करि दुरति है।
तुम हूँ तें न्यारी है तिहारी प्रीति-रीति जानी,
ढीलै हू परे तै गरें गाँठि सी घुरति है।
कैसे घनआनँद अदोषनि लगैये खोरि,
लेखनि लिखार की परेखनि मुरति है॥

घेर्‌यो घट आय अंतराय-पटनि-पट पे,
ता मधि उजारे प्यारे पानस के दीप हौ।
लोचन पतंग संग तजे न तऊ सुजान,
प्रान-हस राखिबे कौ धरे ध्यान-सीप हौ।
ऐसें कहौ कैसे घनआनँद बताऊ दूरि,
मन-सिहासन बैठे सुरत महीप हौ।
दीठि-आगे डोलो जो न बोलौ कहा बस लागै,
मोहि तो बियोग हू मै दीसत समीप हौ॥

जब तैं निहारे इन आँखिन सुजान प्यारे,
तब तें गही है उर आन देखिबे की आन।
रस-भीजे बैननि लुभाय के रचे है तहाँ,
मधु-मकरंद सुधा नावौ न सुनत कान।
प्रानप्यारी ज्यारी घनआनँद गुननि कथा,
रसनो रसीली निसिबासर करत गान।
अंग-अंग मेरे उन ही के संग रग रँगे,
मन-सिहासन पै बिराजै तिन ही को ध्यान॥

ढिग बैठे हू पैठि रहै उर मै,
घर कै सुख को दुख दोहत है।

दृग-आगे तें बैरी टरै न कहूँ,
जगि जोहन-अंतर जोहत है।
घनआनँद मीत सुजान मिलै,
बसि बीच तऊ मन मोहत है।
यह कैसो सँजोग न बूझि परै,
जु बियोग न क्यौं हूँ बिछोहत है।

नैन कहै सुनि रे मन! कान दै,
क्यौं इतनो गुन मेटि दयौ है।
सुन्दर प्यारे सुजान को मंदिर,
बावरे तू हमही तें भयौ है।
लोभी तिन्हैं तनकौ न दिखावत,
ऐसो महा मद छाकि गयौ है।
कीजिये जू घनआनँद आय कै,
पाय परौ यह न्याय नयो है॥

लै ही रहे हौ सदा मन और को,
दैबो न जानत जान दुलारे।
देख्यो न है सपने हूँ कहूँ दुख,
त्यागे सकोच औ सोच सुखारे।
कैसो सँजोग वियोग धौ आहि!
फिरौ घनआनँद ह्वै मतवारे।
मो गति बूझि परै तब हो,
जब होहु घरीक हू आप तैं न्यारे॥

डगमगी डगनि-धरनि छबि ही के भार,
ढरनि छबीले उर आछी बनमाल की।
सुन्दर बदन पर कोरिक मदन वारौं,
चित चुभी चितवनि लोचन बिसाल की।

कालिह इहि गली अली निकस्यो अचानक ह्वै,
कहा कहौं अटक भटक तिहि काल की।
भिजई हो रोम रोम आनँद के घन छाय,
बसी मेरी आँखिन मै धावनि गुपाल क

मुख देखै गौहन लगेई फिरैं भौर भौर,
छूटे बार हेरि कै पपीहा-पुंज छावही।
गति-रीझे चायनि सों पावन-परस-काज,
रसलोभी बिबस मराल-जाल धावहीं।
याते मन होय प्रान-सपुट मै गोय राखौ,
ऐसे हूँ निगोडे नैन कैसैं चैन पावही।
सीचिये अनँदघन जान प्यारी जेसे जानौ,
दुसह दसा की बातें बरनी न आवही

मोर चन्द्रिका सी सब देखन कौं धरे रहै,
सूछम अगाध-रूप-साध उर आनहीं।
जाहि सूझ तिनहूँ सों देखि भूली ऐसी दमा,
ताहि ते बिचारे जड कैसें पहचानही।
जान प्रानप्यारे के बिलोके अबिलोकिबें कों,
हरष-विषाद-स्वाद-बाद अनुमानही।
चाह मीठी पीर जिन्हैं उठति अनंदघन,
तेई आँखें साखैं और पाखैं कहा जानही॥

रति-सुख स्वेद-ओप्यौ आनद बिलोकि प्यारे,
प्राननि सिहाय मोह-मादिक महा छकै।
पीतपट छोर लै ले ढोरत समीर धीर,
चुंबनि की चाडनि लुभाय रही नासकै।
परसि सरस बिधि रुचिर चिबुक त्यौं ही,
कंपति करनि केलि-भाव-दॉव ही तकै।

लाजनि लसौंही चितवनि चाहि जान प्यारी,
सींचति अनदघन हाँसी सो भरीन के॥

जौ उहि ओर घटा घनघोर सों,
चातक मोर उछाहनि फूलते।
त्यौं घनआनँद औसर साजि,
सँजोगिनि झुंड हिडोरनि झूलते।
ग्रीपम तें हतई जु लता,
द्रुम-अंकनि लागती ह्वे रसमूल ते।
तौ सजनी! जिय-ज्यावन जान सु,
क्यौं इत की हित की सुधि भूलते॥

अति सूधो सनेह को मारग है,
जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलें तजि आपुनपौ,
झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।
घनआनँद प्यारे सुजान सुनो,
यहाँ एक ते दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढे हौ कहौ,
मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं॥

चूर भयौ चित पूरि परेखिन,
एहो कठोर अजौं दुख पीसत।
साँस हियै न समाय सकोचनि,
हाय इते पर बान कसीसत!
ओटनि चोट करौ घनआनँद,
नीके रहौ निसद्यौस असीसत।
प्राननि बीच बसे हौ सुजान पै,
आँखिन दोष कहा जु न दीसत॥

ज्यो बहरें न कहूँ ठहरै मन,
देह सो आहि विदेह को ले[illegible] ।
दखति जो दुखिया अखियाँ नित,
बैरियौ की सूपने [illegible] खौ ।
हो तौ सुजान महा घनआनँद,
पे पहिचानि की राख न रेखौ ।
हाय दई वह कौन भई गति,
प्रीति मिटे हूँ मिटै न परैखौ ॥

द्रग-नीर सों दीठिहि देहुँ बहाय पे,
वा मुख को अभिलाषि रही ।
रसना विप बोरि गिराहि गसों,
वह नाम सुधानिधि भाखि रही
घनआनँद जान-सुबेननि त्यों,
रचि कान बचे रुचि साखि रही ।
निज जीवन पाय पले कबहूँ,
पिय कारन यौं जिय राखि रही ॥

जिनकों नित नीके निहारति हीं,
तिनकों अँखियाँ अब रोवति है ।
पल-पाँवडे पायनि चायनि सों,
अँसवान के धारनि धोवति है ।
धनआनँद जान सजीवनि कों
सपने बिन पाएँई खोवति है ।
न खुली मुदी जानि परै कछु ,
दखहाई जगे पर सोवति है ॥

पहिले पहिचानि जु मानि लई,
अब तो सु भई देख मूल महा ।

इत के हित बैर लियो उत ह्वै,
करि ज्यौहरि ब्यौहरि लोभ महा।
घनआनँद मीत सुनौ अरु ऊतर,
दूरतें देहु न देहु हहा।
तुम्हैं पाय अजू हम खोयौ सबै,
हमें खोय कहौ तुम पायौ कहा॥

सावन-आवन हेरि सखी।
मनभावन-आवन-चोप बिसेखी।
छाए कहूँ घनआनँद जान,
सम्हारि की ठौर लै भूलनि लेखी।
बूँदैं लगै सब अंग दगै,
उलटी गति आपने पापनि पेखी॥
पौन सौं जागति आगि सुनीही पै,
पानी तै लागति आँखिन देखी॥

एरे बीर पौन। तेरो सबै ओर गौन,
बीरी तो सो और कौन, मनै ढरकौं ही बानि दै।
जगत के प्रान, ओछे बडे सों समान,
घनआनद-निधान सुखदान दुखियानि दै।
जान उजियारे गुन-भारे अंत मोही प्यारे,
अब ह्वै अमोही बैठे, पीठि पहिचानि दै।
बिरह-बिथाहि मूरि, आँखिन मै राखौ पूरि,
धूरि तिनि पायनि की हा हा! नेकु आनि दै॥

परकाजहि देह को धारि फिरौ,
परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ।
निधि-नीर सुधा के समान करौ,
सब ही बिधि सज्जनता सरसौ।

घनआनँद जीवन-दायक हो,
कछू मेरियो पीर हिये परसौ।
कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगन,
मा अँसुवानहि लै बरसौ॥

राधा नव यौवन बिलास को बसत जहाँ,
अङ्ग अङ्ग रंगनि बिकास ही की भीर है।
प्यारी बनमाली घनआनँद सुजान सेवै,
जाहि देखि काम के हिये मै नाहि धीर है।
सुरनि समाज साज कोकिल कुहूक जाने,
साँसन अनेक सुख-सौरभ-समीर है।
स्वाद-मकरंद को मनोरथ मधुप-पुंज,
मंजु बृंदाबन देस जमुना के तीर है॥

चाहिये न कछू जाकी चाह तासौं फल पायौ,
यातै वाही बन के सरूप नैन कीनौ घरु।
जहाँ राधा-केलि-बेलि कुञ्ज की छ्रनि छायो,
लसत सदाई कूल कालिदी सुदेस थरु।
महा घनआनद फुहार सुख सार सीचे,
हित-उतसवनि लगाय रग-भरयो भरु।
प्रेम रस-मूल-फूल-मूरति बिराजौ,
मेरे मन-आलबाल कृस्न-कृपा को कलपतरु॥

एकै डोलै बेचत गुपालहि दहेडी लियें,
नैननि समायौ सोही बैनन जनात है।
और उठि बोलै आगें लावरी कहा है मोल,
कैसा धौ जम्यो है ज्यों सवादै ललचात है।
आनँद को घन छायौ रहत सदा ही ब्रज,
चोपन पपीहा लौ चहूँगा मँडरात है।

गोकुल बधून की बिकन पै बिकाय रह्यौ,
गली गली गोरस ह्वै मोहन बिकात हैं ॥

ब्रज बृंदाबन गिरि गोधन जमुन-तीर,
सुबस सुदेस पुर बन सुख-साधा को।
जाकी भूमि भागहि सिहात है गिरीस ईस,
धूरि रसमूरि हरै दुख सब बाधा को।
एक रह बिहरत दोऊ महारस भीजै,
आनँद पयोद प्रीति परम अराधा को।
स्याम के सरूप को कछुक निरधार होय,
तौ कछु कह्यो परै अगाध प्रेम राधा को।

झलकै अति सुन्दर आनन गौर,
छकै दृग राजत काननि ह्वै।
हसि बोलनि मै छबि-फूलन की,
बरषा उर-ऊपर जाति है ह्वै।
लट लोल कपोल कलोल करैं,
कल कंठ बनी जलजावलि द्वै।
अँग अँग तरंग उठै दुति की,
परिहै मनौ रूप अबै धर च्वै ॥

लाजनि लपेटी चितवनि भेद-भाय-भरी,
लसति ललित लोल-चख तिरछानि मै।
छवि को सदन गोरो बदन, रुचिर भाल,
रस निचुरत मीठी मृदु मुसक्यानि मैं।
दसन दमकि फैलि हियें मोती-माल होति,
पिय सों लडकि प्रेम पगी बतरानि मैं।
आनँद की निधि जगमगति छबीली बाल,
अंगनि अनंग रङ्ग ढुरि मुरि जानि मैं ॥

रस-आरस भोय उठी कछु सोय,
लगी लसैं पीक-पगी पलके।
घनआनँद ओप बढी मुख औरै सु,
फैलि भवी सुथरी अलकै।
अँगराति जम्हाति लसै सब अङ्ग,
अनगहि अंग दिपै झलकैं।
अधरानि मै आधिय बात धरै,
लडकानि की आनि परैं छलके॥

बक बिसाल रँगीले रसाल,
छबीलै कटाछ-कलानि मे पडित।
सॉवल सेत निकाई निकेत,
हियें हरि लेत है आरस मडित।
बेधि कै प्रान करैं फिरि दान,
सुजान खरे भरे नेह अखडित।
आनँद - आसव - घूमरे नैन,
मनोज के चोजनि ओज प्रचडित॥

जान नए नए नेह के भार,
बिधे उर ओर घनी बरुनी के।
आनँद मैं मुसक्यानि उदोत मैं,
होत हैं रोल तमोल अमी के।
भोर की आवनि प्रान अँकोर किये
तित ही चलि आए जही के।
ट रि : जू तिन तोरि कै,
लालन और दिनान ते लागत नीके॥

बिभाकर-कुँवरि तमालन की पॉति बीच,
बीचिनि मरीचै जागि लागति जगमगी।

भावना भरीने हिय, गहर भार परे,
एकरस राग भुनि रंगनि रँगमगी।
चातकी भई है चाहि आनँद के अंबुद को,
बन घन ढूढ गीझि डोलती डगमगी।
प्रेम की पसीजनि प्रवाह-रूप देखियत,
सदा स्याम के सिंगार सार सों सगमगी॥

सुन्दर सरस लौनो ललित रँगीलो मुख,
जोवन झलक क्यों हूँ कही न परति है।
लोचन चपल चितवनि चाय-चोज भरी,
भृकुटी सुठौन मंद-भायनि ढरति है।
नासिका रुचिर अधरनि लागी सहजै ही,
हसनि दसन-जोति हियरा हरति है।
नख-सिख आनँद उमंग की तरंग बढ़ि,
अङ्ग अङ्ग आली छवि छलक्यो करति है॥

खेलत खिलार गुन-आगर उदार,
राधा नागरि छबीली फाग राग सरसाति है।
भाग-भरे भावते सों औसर फब्यो है आनि,
आनँद के घन की घमड दरसाति है।
औचक निसंक अंक चाँपि खेल-चाँचरि मे,
सखिन त्यौं सैननि ही चैननि सिहाति है।
केसू-रंग बोरि गोरे करि स्याम सुन्दर को,
गोरी स्याम-रंग बीच बूडि-बूडि जाति है॥

सौंधे सनी अलकैं बगरीं मुख,
जोबन जोन्ह सों चंदहि चोरति।
अंगनि रंग-तरंग बढ़ी सु,
किती उपमानि के पानिप ढोरति।

मोहन सों रस फाग रची सु,
भजी भई हो कब ते ही निहोरति।
आनंद को घन रीझनि भीजि,
भिजे पठई कहा चीर निचोरति॥

रतिरंग रागे प्रीति पागे रैन-जागे नैन,
आवत लगेई घूमि झूमि छबि सों छके।
सहज बिलोल परे केलि की कलालन मैं,
कहूँ उमगि रहे कहूँ जके थके।
नीकी पलकनि पीक-लीक-झलकनि सोहै,
रस-बलकनि उनमदि न कहूँ सके।
सुखद सुजान घनआनँद पोखत प्रान,
आंचरजगनि उघरे हू लाज सों ढके॥

केलि की कलानिधानि सुन्दरि सुजान महा,
आन न समान छबि-छाँह पै छिपैये सौनि।
माधुरी-मुदित मुख उदित सुसील भाल,
चंचल बिसाल नैन लाज भीजिये चितौनि।
पिय-अंग-संग घनआनद उमंग हिय,
सुरति - तरंग रस - बिबस - उर - मिलौनि।
झूलनि अलक, आधी खुलनि पलक,
स्रम स्वेदहि झलक भरि ललक सिथिल हौनि॥

सीचे रस-रंग अंग फूलि फैलि छबि दबि,
देखि देखि मालती-लतानि उकसाति है।
आछे काछे मधुप कुमार कोटि ओटि कीजे,
अलक छबीली मन छूटियो कसति है।
कहा कहौं राधे घनआनँद पिया के हिय,
बसि रसि जैसी मेरी आँखिनि ससति है।

कौन धौं अनूठी अभी प्यावै जिय ज्यावे भावे,
एरी तेरी हँसनि बसंत कों हँसति है ॥

देखि धौं आरसी लै बलि नेकु,
लसी है गुराई मे कैसी ललाई ।
मानौ उदोत दिवाकर की दुति,
पूरन चंदहि भेंटन आई ।
फूलत कंज कुमोद लखें,
घनआनँद रूप अनूप निकाई ।
तो मुख लाल गुलालहि लाय कै,
सौतिन के हिय होरी लगाई ॥

रूप के भारन होति है सौहीं,
लजौहियै दीठि सुजानि यौं भूली ।
लागियै जाति, न लागि कहूँ निसि,
पागी तहाँ पलको गति भूलि ।
बैठियै जू हिय पैठत आजु,
कहा उपमा कजयै समतूली ।
आए हौ भोर भएँ घनआनँद,
आँखिन माँझ तौ साँझ-सी फूली ।

श्रीपति

घूँघट उदय गिरिवर तें निकसि रूप,
सुधा सौं कलित छबि-कीरति बगारो है।
हरिन डिठौना स्याम, सुख सील बरषत,
करषत सोक अति तिमिर बिदारो है।
श्रीपति बिलोकि सौति वारिज मलिन होत,
हरषि कुमुक फूलै नंद को दुलारो है।
रंजन मदन तन गजन बिरह, विवि-
खंजन सहित चंदबदन तहारो है॥

हारिजात बारिजात मालती बिदारि जात,
वारि जात पारिजात सोभन मै करी-सी।
माखन-सी मैन-सी मुरारी मखमल-सम,
कोमल सरस तन-फूलन की छरी-सी।
गहगही गरुवी गुराई गोरी गोरे गात,
श्रीपति बिलोर-सीसी ईंगुर सौं भरी-सी।
बिज्जु थिर घरी-सी कनक-रेख करी-सी,
प्रबाल-छवि हरी सी लसत लाल लरी-सी॥

कैसे रतिरानी के सिधारे कवि श्रीपति जू,
जसे कलधौत के सरोरुह सवारे हैं।
कैसे कलधौत के सरोरुह सवारे कहि,
जैसे रूपनट गे बटा से छवि ढारे हैं।
कैसे रूप नट के बटा से छवि ढारे कहु,
जैसे काम भूपति के उलटे नगारे हैं।
कैसे काम भूपति के उलटे नगारे कहु,
जैसे प्राणप्यारी ऊँचे उरज तिहारे हैं॥

अमल अटारी, चित्रसारी वारी रावटी मे,
बारहै दुवारी मे कनारी गंधसार की।
कमानल छाय रह्यो चाँदनी बिछौना पर,
छबि फबि रही छीर-सागर कुमार की।
श्रीपति गुलाब वारे छूटत फुहारे प्यारे,
लपटें चलत तर-अतर बयार की।
भूषन निवारी, घनसार भीजि सारी,
झरि, तऊ न बुझानि नेक ग्रीषम के झार की॥

ग्रीषम मै भीषम ह्वे तपत गहस कर,
बापी ताल नारे नदी नद सूखि जात है।
झंझा पोन झरपि-झराप झकझोरि कोरि,
धूरिधार धूसर दिगत ना दिखात है।
'श्रीपति' सुकवि कहै, आली बनमाली बिन,
खाली जग माहि ऐसे बासर बिहात है।
तावा सो अजिर लगे, लाना सो तपत घर,
भयौ गिरि आवा सो, पजावा सो धुखात है।

विकल सकल जल थलन के जीव होत,
जेठ की जलाकनि मे पुहुमी तपति है।
सरित सरोवर रसाल जलहीन भए,
सूखे तरु पात हू पखेरुन बिपति है।
ग्रीपम-तपनि, दूजे बिरह तपनि बाढी,
ता पै ये लपटि झपटि लपटति है।
सीरे उपचारन तै आरत अनग अग,
पिय बिन मान याको कैसे के रहति है॥

घन दरसावन है, बिज्जु तरपावन हैं,
चहुँ ओर धावन है, बेहर सगाढ की।

मानिनी मनावन है, मोर हरषावन है,
दादुर बोलावन है, अति आढ-आढ की।
श्रीपति सुहावन है, झिल्ली झनकावन है,
बिरही सतावन है, चिना चित बाढ की।
लगन लगावन है, मदन जगावन है,
चातक की गावन है, आवन असाढ की।

बैठि अटा पर औधि बिसूरति,
पाय सँदेस न श्रीपति पी के।
देखत छाती फटै निपटै,
उछटै जब बिज्जु-छटा छवि नीके।
कोकिल कूकैं लगैं मन लूकैं,
उठै हिय हूकै बियोगिन ती के।
बारि के बाहक, देह के दाहक,
आये बलाहक गाहक जी के॥

कंत बिन भावत सदन ना सजनि,
मोपै बिरह प्रबल मैनमंत कोप्यौ बाढ के।
श्रीपति कलोलै बोलै कोकिल अमोलै,
खोले मौन-गाँठ तोपे गौन राखे आढ आढ के।
हहरि हहरि हिय, कहरि कहरि करि,
थहरि थहरि दिन बीते जिय गाढ के।
लहरि लहरि बिज्जु फहरि फहरि आवै,
घहरि घहरि उठै बादर असाढ के॥

धूम से धुँधारे कहूँ काजर से कारे,
ये निपट बिकरारे, मोहि लागत सघन के।
श्रीपति सुहावन, सलिल बरसावन,
सरीर में लगावन, बियोगिनि तियन के।

दराज दरजि हिय, लरजि लरजि करि.
अरजि अरजि परें दूत ये मदन के।
बरजि बरजि अति, तरजि तरजि मोपे,
गरजि गरजि उठै बादर गगन के॥

तेरेई वे भमक लखिकै,
जुगुनून की जे तन लूके लगीं।
वर की सुधि कै दरकी छतियाँ,
जब सीरी बयारिकी भूके लगी।
भनै श्रीपति आप घटा घहरै,
हहरै हियरा अति ह्वै के लगीं।
अब कैसे बनाय बनैगौ पिया बिज,
पापिनी कोकिल कूकैं लगी॥

छायौ नभ-मंडल घुमडि घन श्रीपति जू,
आनँद अथोर चारो ओर उमँगत है।
पायौ मद मालती को, कुंज कुंज गुंजत है—
भौर दुख-पुंज गेह गेह ते भगत है।
धायौ देस देस तें बिदेसी सब कठ लायौ,
निज-निज ती कों, भरौ मोदहि जगत है।
आयौ सखी सावन, सोहावन सही,
पै मोहि बिन मनभावन भयावन लगत है॥

तम की जमक, बक-पाँति की चमक,
ज्योति-भींगन-भमक, चमकन चपलान की।
बैहर भकोरै, मोरै रोरै चहुँ ओरै सोरै,
प्रेम के हलोरै घोरै धुनि धुरवान की।
रतियाँ जमकि आईं, छतियाँ उमँगि आईं,
पतियाँ न आईं प्यारे श्रीपति सुजान की।

नेह तरजन बिरहा के सरजन सुनि,
मान मरदन, गरजन बदरान की ॥

पपिहा की पुकार परी है चहूँ,
बन मे गन मोरन गावन के।
कहि श्रीपति सागर से उमगे,
तरु तोरत तीर सुहावन के।
बिरहानल ज्वाल दहे तन को,
किन होत सखी पग बावन के।
दिन गे मनभावन आवन के,
घहरान लगे घन सावन के ॥

आढ आढ करत असाढ आयो मेरी आली,
डर सो लगति देखि तम के नभाक तें।
श्रीपति ये मेन माते मोरन के बेनु सुनि,
परत न चैन बुदियान के झनाक :
झिल्ली-गन झाँझ झनकारैं न सँभारैं नेक,
दादुर दपट बीज तरसे तमाक तैं।
भरकी बिरह आग, करकी कठिन छाती,
दरकी सजल जलधर की धमाक तैं ॥

जलभरें झूमे मनौ भूमै परसत आइ,
दस हू दिसान घूमै, दामिनी लए-लए।
धूमधारे धूसर से, धुरवा धुँधारे कारे,
धुरवान धारे धावैं छबि सौं छए-छए।
श्रीपति सुजान कहै घरी-घरी घहरात,
तापत अतन तन ताप सों तए तए।
लाल बिन कैसे लाज-चादर रहेगी बीर,
कादर करत मोहि बादर नए-नए।

ये घन घोर उठे चहुँ ओर
इन्हें लखि का करिहै रिस ह्वै तू।
सौति पै जाइ हैं जो कमलापति,
पाइ है छाँह छिनेक न छ्वै तू।
गानि लई अब ह सिगरी,
कलपैहै सु हाथ के हीर कों ख्वै तू।
पाँय परै हू न मानती री,
अब जा जनि। ऐसी मिजाजनि है तू॥

आवते गाढ असाढ के बादर,
मो तन मे अति आगि लगावते।
गावते चाव चढे पपिहा,
जिन मोसों अनंग सो बैर बंधावते।
धावते बारि भरे बदरा,
कवि श्रीपति जू हियरा डरपावते।
पावते मोहि न जीवते प्रीतम,
जो नहि पावस में घर आवते॥

धावनि धुँधारे धुधरान की निहारि जिय,
चातक मयूर पिक आनंद मगन भौ।
श्रीपति जू सावन सोहावन के आवन में,
विरह सुभट ते बियोगिनी कौ रन भौ।
जलमयी धरनि, तिमिरमयी देह दीसी,
घनमयी गगन, तडितमयी घन भौ।
छविमयी बन भौ, बिलासमयी तन भौ,
सनेहमयी जन भौ, मदनमयी मन भौ॥

मदमयी कोयल मगन ह्वै करत कूकैं,
जलमगी मही, पग परत न मग में।

बिज्जु नाचे घन मे, विरह हिय बीच नाचैं,
मीचु नॉचे ब्रज में, मयूर नॉचे नग में ।
श्रीपति सुकवि कहै सावन में आवन—
पाथिक लागे, आनँद भयौ है अँग-अंग में ।
देह छायौ मदन, अछेह तम छिति छायौ,
मेह छायौ गगन, सनेह छायौ जग में ॥

घॉघरे की घुमडि, उमड़ि चारु चूनरी की,
पाँयन मलूक मखमल बरजोरे की ।
भृकुटी बिकट, छूटी अलकैं कपोलन पै,
बडी बडी ऑखिन में छबि लाल डोरे की ।
तरवन तरल जडाऊ जरबीले जोर,
स्वेदकन-ललित-बलित मुख मोरे की ।
भूलत न भामिनी की गावन गुमान-भरी,
सावन में श्रीपति मँचावन हिडोरे की

फूले आस-पास कॉस, विमल विकास बास,
रही न निसानी कहूँ महि में गरद की ।
राजत कमल-दल ऊपर मधुप,
मैन छाप-सी दिखाई, छबि विरह-फरद की ।
श्रीपति रसिकलाल आली । बनमाली बिन,
कछू न जुगति मेरे जीय के दरद की ।
हरद समान तन भयौ है जरद अब,
करद-सी लागत है, चॉदनी सरद की ॥

तोऊ रह्यो न गयौ, छल सौं
दृग-कोरनि ह्वै दुरि देखन लागी ॥

रचि भूषन आइ अलीन के संग तें,
सासु के पास बिराजि गई।
मुख चंद मऊषनि सों ससिनाथ,
सबे घर मे छबि छाजि गई।
इनकौ पति ऐहै सबार सखी कह्यौ
यों सुनि के हिय लाजि गई।
सुख पाइकै, नार नबाइ तिया,
मुसक्याइ कै भौन मे भाजि गई ॥

सुबरन रग सुकुमारी सबै भामिन के,
अंगन उछाह की लहर लहरी रहति।
भूषन बसन चारु दसन हँसन अरु,
नैननि में प्रेम-रस प्यास गहरी रहति।
सोमनाथ प्यारे अलि भामरी भरति रहैं,
चहुँधा चकोरन की चौकी ठहरी रहति।
सरद कौ चंद कैसें कहौं मुख-चंद सम,
छहूँ रितु जाकी छवि छटा छहरी रहति ॥

मंदिर की दुति यों दरसी,
जनु रूप के पत्र अलेखन लागे।
हों गई चाँदनी हेरन कों,
तहँ क्यों हूँ घरीक निमेष न लागे।
डीठ पर्‌यौ नयौ कौतुक ह्वाँ,
ससिनाथ जू यातै बडे खन लागे।
पीठि दै चंद की ओर चकोर,
सबै मिलि मो मुख देखन लागे ॥

लाल दुकूल सजै रुचि सों
सब ही सो निसंक न लाज रही गहे ।
और की औरहि बात कहे,
ससिनाथ कितौ समुझाइ सखी कहै ।
पौछत स्वेदन अंगनि तैं,
सु अनंग-कला अति ही चित में चहै ।
जानि परै न कछू उर की,
निसि बासर बाम की भौह चढ़ी रहै ॥

न्हाइवे जाइ तौ संग सखी बनि,
पामरे पामरी के करिबौ करै ।
केसर लाइ सँवारि कै आड़,
निहारि कै नेह नदी-तारिबौ करै ।
जो ससिनाथ न डीठि परै,
कुल-कानि तैं नारि कछू डरिबौ करै ।
तौ निसि-बासर साँवरिया,
घर की नित भाँमरिया भरिबौ करै ।

सरसाए दुकूल सुगंध सों सानि,
सबै, रति-मँदिर बास रह्यौ ।
रँग-रंग के अंग अनूप सिगार,
सिगार निहारि कै मोद लह्यो ।
पुनि बीरी खबावत हू ससिनाथ,
सुजान सों प्यारी कछू न कह्यौ ।
जब लागन लागे महावर पाँइ,
तबैं मुसिक्याइ कै हाथ गह्यौ ॥

ठाडी बतरात इतरात ही परौसिन तें,
जैसी तिय दूसरी न पूरब पछाँह में ।

दीठि परि गए तहाँ सुन्दर सुजान कान्ह,
औचक ही प्रकट छिपति परछाँह मे।
सोमनाथ त्यों ही प्रानप्यारे कों सुनाइ कह्यो,
तिय नें सखीसों तरुनाई के उछाँह मे।
बंसीबट-निकट हमे तू मिलियो री काल्हि,
कातिक मे न्हाऊँगी नरैयन की छाँह मै॥

खेलि है लाल के संग चलौ,
कहिकै उर मे मति औरई ठानी।
यो बहकाइ के नेह बढाइ,
मयंकमुखी रति-मंदिर आनी।
ह्वाँ न लखे ससिनाथ सुजान,
कछूक तही ठठकी ठकुरानी।
है न सयान रती भर हू,
अलबेलो तऊ हिय मे अकुलानी॥

उज्जल सरद-चंद-चंद्रिका अनंद दुति,
त्रिबिध समीर की झकोर आनि फहरैं।
मुकता अनिद मकरंद के से बिंदु चारु,
बदनारबिंद की छबीली छटा छहरैं।
साजि रंग-रंगनि के सुंदर सिंगार प्यारी,
गई केलि धाम दूजी जामनी की पहरैं।
पेखि परजंक नंदनंद बिन सोमनाथ,
लागी अंग उठनि भुजंग की-ली लहरैं॥

निसि अंत ह्वै आए प्रभात भए,
गति पाँइन औरई पाइ लई।
ससिनाथ उनीदी झुकैं अँखियाँ,
पगिया उन फेरि बनाइ लई।

रति चिन्ह न पूछति जानि सुजान,
हँसी मिस बाल भुलाइ लई।
कर चाव अमोल कपोलन चूमि,
भुजा भार कठ लगाइ लई॥

उतै हे मन, यातें सूधे न परत पाग,
अंग अरसात भुरहरै उठि आए हौ।
रगमगी अँखियाँ अनूप रूप चोरै लेत,
सोमनाथ आछैं यहि रूप सखि पाए हौ।
हम सों तौ बिहसि बिलोकिबौ बिसारयो पिय,
सबै विधि उनई के हाथन बिकाए हौ।
काहे को नटत, बेई बैनन प्रकट होत,
अनुराग जिनकौ लिलार धरि आए हौ॥

हरि तौ मनुहार मनाइ गए,
जिनपै जियरा रति वारति है।
ससिनाथ मनोज की ज्वालनि सों,
अब कुंदन सौ तन जारति है।
उठि लेटनि सेज पै चद्रमुखी,
पछिताइ कै पौरि निहारति है।
न कहे मुख तें दुख अंतर कौ,
अँसुआनि सों आँखि पखारति है॥

सासु के बास बिसारे सबै,
उपसाहन हू तें निसंकिन हौं भई।
लीक अलीक न जानी कछू,
ठकुरानी कहाइ सु रकिन हौं भई।
जा ससिनाथ सुजान के काज,
तजे सुख-साज अलकिन हौं भई।

री, तिन सो हित तोरि कै हाय !
बृथा ब्रज माँहि कलकनि हौं भई ॥

चारु निहार तरेयन की दुति,
लाग्यौ महा बिरहा तन तावन ।
हे ससिनाथ कहा कहिए,
जिन सौं लगि नैन ही कंज से पावन ।
बीच दुदून के फूलन लै,
अलबेली के, प्रेम को सिंधु बढावन ।
कान्ह दिवारी की रेन चले,
बरसाने मनोज कौ मंत्र जगावन ॥

आली, ! बहु बासर बिताए ध्यान धरि धीर,
तिनकौ सुफल नैन दरसन पावेंगे ।
होत है री सगुन सुहावने प्रभात ही तें,
अंगन में अधिक बिनोद सरसावेंगे ।
सोमनाथ हरें हरैं बतियाँ अनूठी कहि,
गूढ बिरहानल की तपनि बुझावेंगे ।
सबही तें प्यारे प्रान, प्रानन ते प्यारे पति,
पति हू तें प्यारे ब्रजपति आज आवेंगे ॥

दिसि बिदिसनि ते उमडि मढि लीन्हौं नभ,
छेडि दीनौं धुरवा जवासे जूथ झरिगे ।
डहडहे भए द्रुम रंचक हवा के गुन,
कहूँ कहूँ मुरवा पुकारि मोद भरिगे ।
रहि गये चातक जहाँ के तहाँ देखत ही,
सोमनाथ कहै बूँदाबूँदी हू न करिगे ।
सोर भयौ घोर, चहूं ओर महि-मंडल में,
आए घन, आए घन, आइ क उघरिगे ॥

बादर उतंत अंग डोलत अनंग भरे,
बगन कतार दंत दीरघ सँवारे हैं।
चरखी चमक, तरकत औ गरज गूंज,
बरषे मदन निसि नीर के पनारे हैं॥
सोमनाथ प्यारे नंद नंद के बिरह जानि,
ब्रज मे कुमंगन करोर हनकारे हैं।
आए घन भारे मे बिचार उर धारे अरी!
कारे रंग बारे ए मतंग मतवारे हैं॥

रसलीन

(रस-प्रबोध से)

चित चाहत अलि अंग तुव लहि दीपक परिमान।
लै लै जनम पतंग को सदा वारिये प्रान॥

नैन चहैं मुख देखिये मन सो कछू दुराइ।
मन चाहत दृग मूंदि के लीजै हिये लगाइ॥

गिरजा सिव तन मै रही कमला हरि हिय पाय।
तू तन हरि पिय हिय बसी, हिय हरि प्रानन जाय॥

मुख ससि निरखि चकोर अरु, तन-पानिप लखि मीन।
पद-पंकज देखत भवर, होत नयन रस-लीन॥

सौतिन मुख निसि-कमल भो पिय-चख भये चकोर।
गुरुजन मन-सागर भये लखि दुलहिन मुख ओर॥

जब तें आई तड़ित लौं नीलांबर मै कौंधि।
तब ते हरि चकृत भये लगी चखनि चक चौंधि॥

मोहन लखि यह सबन ते ह्वै उदास दिन रात।
उमहति हंसति जकति डरति विगचति बिलखि रिसाति॥

यों बाला-जोबन झलक झलकति उर मे आइ।
ज्यों प्रगटत मन को बचन बिंब पुतरिन दरसाइ॥

तियै सैसब-जोबन मिले भेद न जान्यो जात।
प्रात समै निसि द्यौस के दोउ भाव दरसात॥

ज्यौं वय-तिथि बाढति कला जौबन ससि अधिकात।
त्यौं सिसुता-निसि-तिमिर घट छवि कर ठेलति जात॥

सखी गुनति जौ तिय-गुनन रुच तकि बिहँसि लजात।
मानहु कमल कलीन बिच अली बिहँसि रहि जात॥

पिय चितवत तिय मुरि गई कुल-हित पट मुख लाइ।
अमी चकोरन के पियत घन लीनो ससि छाइ॥

दीपक लौ झाँपति हुती ललन होति यह बात।
ताहि चलत अब फूल लौ बिगसन लाग्यो गात॥

कहूँ ठगे कतहूँ खगे अति सगबगे सनेह।
लाज-पगे दृग रगमगे जगे कौन के गेह॥

तुम अवसेरत मो दृगन गई नींद जु हिराइ।
सोई लाल लगी मनो दृगन तिहरे आइ॥

लाल एक-दृग-अग्नि ते जारि दियो सिव मैन।
करि ल्याये मो दहन कों तुम द्वै पावक नैन॥

राधा-तन फूलन मिलो पातन हरि को गात।
नूपुर-धुनि खग धुनि मिली भले बने सब सात॥

नैन-चकोरन चंद्रिका प्यारो आजु निसंक।
आस-बास आवत नखत लीने बीच ससंक॥

पिय के रंग भये बिना मिलन होत नहि वाम।
याते तू रँग स्याम ह्वै मिलन चली है स्याम॥

अंग छुपावति सुरति सो चली जाति यों नारि।
खोलति बिज्जुछटा चितै ढाँपति घटा निहारि॥

स्वेत-बसन-जुत जोन्ह मैं यौं तिय-दुति दरसाइ।
मनो चली छीरधि-सुता छीर-सिंधु मैं जाइ॥

पिय बिनती करि फिरि गये सो कलेस सरसाइ।
तिय-मुख-अंबुज तैं निकसि मधुप रीति दुरिजाइ॥

बाम नेन फरकत भयो बामा आनद आइ।
खिनि उभरति खिनि मुदति है बादर-धूप सुभाइ ॥

लाजवती परदेस तै पिय आयो सुधि पाइ।
निसि-दिन मधु के कमल लौ निकसत सकुचत जाइ ॥

कहाँ गये वे जलद जे नित उठि जारत जाइ।
गाइ मलार बुलाइए तऊ न परत लखाइ ॥

कविंद उदयनाथ

तिय तन अरुन दिनेस उदयौ है आनि,
सॉझ सिसुताई के तिमिर सब भागे है।
फैलि रही अंबर मैं चहुँ ओर अरुनाई,
फूले नैन-कंज मकरंद रस-पागे हैं।
उदैनाथ कंत के मनोरथ ह्व पथै चले,
चित चतुराई तजि आरस को जागे है।
रूप के सरोवर मे नाह-नैन न्हान लाग,
सौतिन के मान तेऊ दान होन लागे हे॥

चद सौ बदन, चद्रिका सी चारु सेत सारी,
तैसिए गुराई गसी उरज उतंग की।
हेरि के हिए कौ हार हारिनी हरिन नैनी,
हेरै हिए हरषै सखी त्यों सेन संग की।
भनत कविंद सोहै बासक नवेली नारि,
बाढी चित चाह, जाक आगम उमंग की।
जगर-मगर बैठी सेज पे नगर-बाल,
आली लाल मोहिबे को बाला ज्यों अनंग की।

अरसौंहे नन करि, सरसौंहैं मुसकाति,
त्यौ त्यौ अकुलाति ज्यो ज्यो होत आली प्रात री।
दाऊ वे परसपर पीवत अधर रस,
चूमि चूमि चटकीलौ मुख जलजात री।
भनत कविंद भरि भरि अक ह्वै निसंक,
नेह-भरे फिरि फिरि दोऊ बतरात री।
बिछुरन करत दुहूँ के गात ही तें दुवौ—
लपटि-लपटि जात, नैकु न अघात री॥

गहरी गुराई त प्रथम चूर चामीकर,
चंपक कें ऊपरि बगुरि पाम रौप्यौ है।
तीसरे अखिल अरविंद आभा बस करि,
हसे छडिना कों हाइ तो पद मे ताप्यौ है।
भनत कविंद तेरे मान समै सौतैं कहा,
सुर बनितान कौ गुमान जात लोप्यो है।
आली ! आज मेरे जानि, ऐंठ भरो मुख—
भौहै तान, सौहैं री, करुनानिधि पै कोप्यौ है॥

गुंजरत भौरन के पुंजक निकुंजन तै,
आए हो, भयौ है स्रम आवत औ जात को।
अँखिन ते उलटी ललाई परे आलस की,
अंगन तें उमगै थके-लौं अँगरात कौ।
भनत कबिंद घाम ग्रीपम दुपहरी की,
तीखन लग्यौ है तन परिमित बात कौ।
पंकज क पातन की पौन करौ प्रानप्यारे,
पौढौ परजंक पे, पसीना मिटे गात कौ॥

कैसी ही लगत, जामै लगन लगाई तुम,
प्रेम की पगनि के परेखे हिऐं कसके।
केतिकौ छिपाइ के उपाय उपजाइ प्यारे,
तुम तें मिलाप के बढाए चोप चसके।
भनत कबिंद हमै कुंज मे बुलाइ करि,
बसे कित जाय, दुख देकर अनस के।
पगन मे छाले परे नाघिबे को नाले परे,
तऊ लाल ! लाले परे, राउरे दरस के॥

गाजे रसमै री तैसी बरषा रमै री चटी,
चंचला नचै री चकचौंधा कौंधा बारैं री।

बनी बन हारे हिए परत फुहारे,
कछू छोरे कछू धार जलधर जलधारे री।
भनत कविंद कुंजभौन पौन सौरभ सों,
काके न कपाय प्रान परहथ पारे री।
काम-कदुका से फूल डोलि डोलि डारे,
मन औरै किए डारें ये कदबन की डारैं री॥

दास

वारे दास दया वह बानी सदा,
छवि आनन कौल जु बेठी लसै।
महिमा जग छाई नयो रस की,
तन पोषक नाम धरैं छै रसै।
जग जाके प्रसाद लता पर शैल,
ससी पर पंकज-पत्र बसै।
करि भाँति अनेकन यो रचना,
जो बिरंचिहु की रचना को हँसै॥

है रति को सुखदायक मोहन,
यों मकराकृत कुडल साजै।
चित्रित फूलन को घनुबान,
तन्यों गुन भौंरकी पाँति को भ्राजै।
सुभ्र स्वरूपन में गनौ एक,
विवेक हनै तिय सैन समाजै।
दास जू आज बने ब्रज में,
ब्रजराज सदेह अदेह बिराजै॥

सखि वामैं जगै छनजोति छटा,
इत पीट पटा दिन रैन मडो।
वह नीर कहूँ बरसै सरसै,
यह तो रस जाल सदाही अडो।
वह सेत ह्वै जातो अपानिप ह्वै,
एहि रंग अलौलिक रूप गडो।
कह दास बराबरि कौन करै,
घन सों घनस्याम सों बीच बडो॥

आनन में मुसुकानि सुहावनि,
बकता नैनन्ह मांझ छई है।
बन खुले मुकुलें उरजात,
जकी-बिथकी गति ठौने ठई है।
दास प्रभा उछलै सब अंग,
सुरंग सुबासता फैलि गई है।
चन्दमुखी तन पाइ नवीनो,
भई तरुनाई अनन्द मई है॥

आनन है अरबिंद न फूलै,
अलीगन भूले कहा मंडरात हौ।
कीर तुम्हैं कहा बाय लगी,
भ्रम बिम्ब के ओठन को ललचात हौ।
दास जू ब्याली न बेनी-बनाव है,
पापी कलापी कहा इतरात हौ।
बोलती बाल न बाजती बीन,
कहा सिगरे मृग घेरत जात हौ॥

कंज के सम्पुट हैं ये खरे,
हिय मैं गडिजात ज्यो कुंत की कोर हैं।
मेरु है पै हरि हाथ में आवत,
चक्रवती पे बडेई कठोर है।
भावती तेरे उरोजनि मे गुन—
दास लख्यो सब औरई और है।
संभु है पै उपजावें मनोज,
सुवृत्त है पै पर चित के चोर हैं॥

भावी भूत वर्तमान मानवी न होइ ऐसी,
देवी दानवीन हूँ सो न्यारो एक औरई।

या विधि की बनिता जो बिधना बनायो चहै,
दास तौ समुझिये प्रकासै निज बौरई।
कैसे लिखे चित्र को चितेरो चकिजात लखि,
दिन द्वैक बीते दुति औरै और दौरई।
आज भोर औरई पहर होत औरई है,
दुपहर औरई रजनि होत औरई॥

आरज आइबो आली कह्यो,
भजि सामुहे तें गई ओट मै प्यारी।
एकहि गोडी महावर दै श्रम,
तै दुहुँ फैली खरी अरुनारी।
दास न जाने धौं कौन है दीबो,
चितै दुहुँ पायन नाइनि हारी।
आप कह्यो अरी दाहिने दै,
मोहि जानि परै पग बाम है भारी॥

भावतो आवतो जानि नवेली,
चमेली के कुंज जो बेठत जाइ कै।
दास प्रसूनन सोनजुही करै,
कंचन सी तन जोति मिलाइ कै।
चोकि मनोरथ हू हँसि लेन,
चले पगु लाल प्रभा महि छाइ कै।
बीर करै करबीर झरै
निरखै हरखै छबि आपनि पाइ कै॥

पन्ना संग पन्ना ह्वै प्रकासत छनक,
लै कनक रग पुनि पै कुरंगन पलत है।
अधर ललाई लावै लाल की ललक पाये,
अलक झलक भरकत सों हलत है।

इदौ अरुनौहै पीत पाटल हरौहै ह्वै कै,
दुति लै दुहूँधा दास नेनन छुवत है।
समरथ नीके बहुरूपिया लौं थानही मे,
मोती नथुनी के बर बानो बदलत है॥

आरसी को आँगन सुहायो मनभायो,
नहरन मे भरायो जल उज्ज्वल सुमन माल।
चाँदनी विचित्र लखि चाँदनी बिछौने पर,
दूरि के सहेलिन को विलसै अकेली बाल।
दास आस पास बहु भाँतिन बिराजे घरे,
पन्ना पुखराज मोती मानिक पदिक लाल।
चन्द्र-प्रतिबिम्ब तें न न्यारो होत मुख, औ न
तारे-प्रतिबिम्बन तें न्यारो होत नगजाल॥

बातें स्यामा-स्याम की न कैसी अब आली,
स्याम स्यामा तकि भाजे स्यामा स्याम सो जकी रहै।
अब तो लखोई करैं स्यामा को बदन स्याम,
स्याम के बदन लागी स्यामा की टकी रहे।
दास अब स्यामा के सुभाय मद छाके स्याम,
स्यामा-स्याम सोभन के आसव छकी रहै।
स्यामा के बिलोचन के है री स्याम तारे अरु,
स्यामा स्याम-लोचन की लोहित लकीर है॥

कोन सिगार है मोरपखा यह,
लाल छुटे कच काँति की जोटी।
गुज के माल कहा यह तो,
अनुराग गरे पर्यो लै निज खोटी।
दास बडी बडी बातें कहा करौ,
आपने अग की देखो करोटी।

जानो नहीं यह कंचन से,
तिय के तन के कसिबे की कसोटी।

नैनन को तरसैये कहाँ लौं,
कहाँ लौं हिये बिरहागि मै तैये।
एक घरी न कहूँ कल पैये,
कहाँ लगि प्रानन को कलपैये।
आवै यही अब जी में विचार,
सखी चल सौतिहुँ के घर जैये।
मान घटे ते कहा घटिहै जु पै,
प्रानपियारे को देखन पैये॥

चन्द चढि देखै चारु आनन प्रवीन.
गति लीन होत माते गजराजनि को ठिलि-ठिलि।
बारिधर-धारन तैं बारन पै ह्वै रहै,
पयोधरन छ्वै रहै पहारनि को पिलि-पिलि।
दई निरदई दास दीन्हों है विदेस तऊ,
करौं न अँदेस तुव ध्यान ही में हिलि-हिलि।
एक दुख तेरे हौं दुखारी न तु प्रानप्यारी,
मेरो मन तोसो नित आवत है मिलि-मिलि॥

बार अँध्यारनि में भटक्यो सु,
निकार्यो मै नीठि सु बुद्धिनि सो घिरि।
बूडत आनन पानिप - नीर,
पटीर की आड सो तीर लग्यो तिरि।
मो मन बावरो योही हुत्यो,
अधरा-मधु पानवै मूढ छक्यो फिरि।
दास मनै अब कैसे कढै,
निज चाह सो ठोढी की गाड पड्यो गिरि॥

भाल मे बाम के ह्वै कै बली,
बिधो बाँकी भुवै बरुनीन मे आइ के ।
ह्वै के अचेत कपोलन छ्वे,
बिछुरे अधरा की सुधा पियो धाइ के ।
दास जू हास छटा मन चौंकि,
धरीक लौं ठोढ़ी के बीच बिकाइ कै ।
जाइ उरोज-सिरे चढ़ि कूद्यो,
गयो कटि सो त्रिबली मै नहाइ कै ।।

देखे दुरजन संग गुरुजन-मर्कानि सों,
हियो अकुलात दृग होत । दुखित हे ।
अनदेखे हू ते मुसुकानि बतरानि मृदु,
बानिए तिहारी दुखदानि बिमुखित हे ।
दास धनि ते हे जे वियोग ही मे दुख पावे,
देखे प्रान पीके होत जिय मे सुखित है ।
हमै तो तिहारे नेह एकहू न सुख लाहु,
देखेहू दुखित अनदेखेहू दुखित हे ।।

अँखिया हमारी दईमारी सुधि बुधि हारी,
मोहू ते नियारी दास रहे सब काल मे ।
कौन गहै ज्ञान काहि सौपत सयानै कौन,
लोक ओक जानै ये नही है निज हाल मे ।
प्रेम पगि रही महामोह मे उमगि रही,
ठीक ठगि रही लागि रहीं बनमाल मे ।
लाज को अचै के कुल-धरम पचै के,
बिथा-बन्धन सचै के भई मगन गोपाल मे ।।

मिस सोइबो लाल को पानि सही,
हरुए उठि मौन महा धरिकै ।

पट टारि रसीली निहारि रही,
मुख की रुचि को रुचि की करिकै ।
पुलकावलि पेखि कपोलन में,
खिसिआई लजाई मुरि अरिकै ।
लखि प्यारे विनोद सों गोद गह्यो,
उमह्यो सुख-मोद हियो भरिकै ॥

चद मे ओप अनूप बढ़ै लगी,
रागन की उमडी अधिकाई ।
सोती कलिन्दजा की कछु होति है,
कोकन के दरम्यान लखाई ।
दास जू कैसी चमेली खिलै लगी,
फैली सुबासहु की रुचिराई ।
खंजन कानन ओर चले,
अवलोकत ही हरि साँझ सोहाई ॥

जेहि मोहिबे काज सिगार सज्यो,
तेहि देखत मोह मे आय गई ।
न चितौनि चलाय सकी,
उनही की चितौनि के भाय अघाय गई ।
बृषभानलली की दसा यह दास जू,
देत ठगौरी ठगाय गई ।
बरसाने गई दधि बेचन को,
तहँ आपुहि आपु बिकाय गई ॥

नैन बहैं जल कज्जल संयुत
पी अधरामृत की अरुनाई ।
दास गई सुधि-बुद्धि हरी,
लखि केसरिया पट सोभ सोहाई ।

कौन अचम्भो कहूँ अनुरागी,
भयो हियरो जस उज्जलताई।
साँवरे रावरे नेह पगे ही,
परी तिय अंगन मे पियराई ॥

हुती बाग में लेत प्रसून अली,
मनमोहनऊ तहँ आइ परयो।
मनभाया घरीक भयो पुनि गेह,
चवाइन मे मन जाइ परयो।
द्रुत दारि गई गृह दास,
तहाँ न बनाइबे नेकु उपाइ परयो।
धक स्वेद उसास खरोटन का,
कछु भेद न काहू लखाइ परय

जाति हो जौ गोकुल गोपाल हू पे जैयो नेकु,
आपनी जो चेरी मोहि जानती तू सही है।
पाय परि आपुही सों बूझियो कुशल-छेम,
मो पै निज ओर ते न जात कछु कही हे।
दासजू बसन्त हू के आगमन आयो तौ न,
तिनसों सँदेसन्ह की बात कहा रही है।
एतो सखी कीबी यह अम्ब-बौर दीबी,
अरु कहिबी वा अमरैया राम राम कही है ॥

तेरी खीझबे की रुचि रीझ मनमोहन की,
यातैं वहै स्वाँग सजि-सजि नित आवते।
आपुही तैं कुंकुम की छाप नखछत गात,
अंजन अधर भाल जावक लगावते।
ज्यों ज्यों त अयानी अनखानी दरसावै त्यों त्यों।
स्याम छत आपने लहे को सुख पावते।

उन्हें खिसिआवै दास हास जो सुनावे तुम्है,
वाहू मन-भावते हमारे मन भावते ॥

लाल ये लोचन काहे प्रिया हैं,
दिये ह्वै हैं मोहन-रंग मजीठी।
मोते उठी है जु बैठी अरौनि की,
सीठी क्यो बोलै मिलाइ ल्यौ मीठी।
चूकि कहौ किमि चूकति सो,
जिन्हैं लागी रहै उपदेस बसीठी।
झूठी सबै तुम साँचे लला,
यह झूठी तिहारेउ पाग की चीठी ॥

लाहु कहा कर बैदी दिये,
औ कहा है तरौना के बाहु गडाये।
कंकन पीठि हिये ससिरेख की,
बात बने बलि मोहि बताये।
दास कहा गुन ओठ मै अंजन,
भाल मे जावक-लीक लगाये।
कान्ह सुभायही बूझत हौं मै,
कहा फल नेनन्ह पान खवाये ॥

फूलन के सँग फूलि है रोम,
परागन के सँग लाज उडाइहै।
पल्लव-पुंज के संग अली,
हियरो अनुराग के रंग रँगाइ है।
आयो बसंत न कंत हितू,
अब बीर बदौगी जो धीर धराइहै।
साथ तरून के पातन के,
तरुनीन को कोप निपात ह्वै जाइहै ॥

तेरे हास बेसन ज्यों सुन्दर सुकेसन लौं,
छीनि छवि लीन्ही दास चपला घनन की।
जानि कै कलापी की कुचाली तें मिलापी मोहि,
लागे बैर लेन क्रोध मेटन मनन की।
कहियो सँदेसो चन्द्रबदनी सों चंद्रावलि,
अजहूँ मिलै तौ बात जानिये बनन की।
ता बिनु बिलोके खीन बलहीन साजै सब,
बरषा समाजै ये इलाजै मो हनन की॥

अबतो बिहारी के वे बानक गये री,
तेरी तनदुति केसरि को नैन कसमीर भो।
श्रौन तुव बानो स्वातिबुन्दन को चातक भो,
स्वासन को मारिबो द्रुपदजा को चीर भो।
हिय को हरष मरु-धरनि को नीर भो री,
जियरो मदन-तीर-गन को तुनीर भो।
एरी बेगि करिकै मिलाप थिर थापु नतु,
आप अब चाहत अतन को सरीर भो॥

काहू कह्यो आय कंसराय के मिलाइबे को,
लेन आयो कान्ह कोऊ मथुरा अलंग तें।
त्योंही कह्यो आली सो तो गयो वह अब, देव,
मिलै हम कहाँ ऐसो मूढ बिन ढंग तैं।
दास कहै ता समै सोहागिन को कर भयो,
बलयाबिगत दुहूँ बातन प्रसंग तें।
अधिक दरकि गई बिरह की छामता तें,
अधिक तरकि गई आनँद-उमंग तें॥

जानि-जानि आयो प्यारो प्रीतम बिहार-भूमि,
मानि मानि मंगल सिगारन सिगारती।

१६५

दास दृग-तोरन को द्वारन मैं तानि-तानि,

छानि-छानि फूले-फूले सेजहि सवारतो।

ध्यान ही में आनि-आनि पीको गहि पानि-पानि,

ऐंचि पट तानि-तानि मैंद-मद गारती।

प्रेम-गुन गानि-गानि अमृतन सानि-सानि,

बानि-बानि खानि-खानि बैनन बिचारती॥

—:॥❀॥:—

तोष

(सुधानिधि)

नैननि ह्वै श्रुतिकुंडल छ्वै,
　　　　कल कंठनि ह्वै भुज-मूलनि धावत।
गुंज की माल ते, काछनी ते,
　　　　कहि तोष सुपायन मे सुख पावत।
मो मन मोहन के तन मै,
　　　　मन मै मिनतान की फेरी लगावत।
पावरी तै चढ़ि पाग लौं जात,
　　　　औ पाग ते पावरी लो फिरि आवत।

ते धनि तोष जो मोहन को,
　　　　सरबग धरें धरि धीर लोगाई।
मै नख ते सिख लौं भरि साध,
　　　　कबों इनते सखि देख न पाई।
जोनहि अंग परे पहिले,
　　　　नरे ट तिनसों अँखियाँ दुख होई।
मै जकि जाति तकी लगि जाति,
　　　　दोऊ अखियाँ थकि जाति बनाई॥

द्वै पग देत अमन्द भई
　　　　गति मन्द गयन्द की होति है पाछै।
बैननि मे रस च्वै निकसै,
　　　　कहि तोष हँसे मुसकाहट काछे।
दीपति देह मनोज कियो,
　　　　गुफनौट को दीप ज्यौ राजत आछे।

ज्यों ज्यों लखे हरिनाह्न ते तिय,
त्यौं त्यौं खरी तिरछाति कटाछै ॥

लोचन लोल लसें अँसुवाकन,
जाइ सो धाइ सौं जाइ पुकारे।
या रतिया ते भई छतिया मँह,
पीर नहीं, पे लगे अति भारे।
ऊतर ताहि दियो कहि तोष,
सो बाजि उठ्यौ मनमोद नगारे।
तूँ जनि नेकु डेराइ इन्है,
बलि पीर सहैगे बिलोकनवारे ॥

लाज बिलोकन देति नही,
रतिराज बिलोकनही की दई मति।
लाज कहै मिलिये न कबौं,
रतिराज कहै हित सों मिलिये पति।
लाजहुँ की रतिराजहुँ की कहि,
तोष नही कहि जाति सछू गति।
लाल तिहारिये सौह कहौं,
वह बाल भई है दुराज की रैयति ॥

मोर गहै अलकें अहि के भ्रम,
बोलत कोकिल सोर मचावें।
नाक ते कीर कुरार करैं
कहि तोष छपाइ के मोहि छपावें।
खेलत जा बनकुंजनि को हरि
घेरि हमे खग-पुंज खिझावैं।
मोती की माल मराल चुगै,
मुखचन्द का चोच चकोर चलावै ॥

आनन पेखि कलंकित भो ससि,
मो दृग देखि मृगी बन लीनी।
कोकिल स्याम भये बतिया सुनि,
बेनी चितै विष ब्यालिनी भीनी।
कुन्दनऊ दुति देखि तजै,
उर लागति तोष दया परबीनी।
हौं पछितात‌ि हहा सजनी,
रचि मोहि कहा बिधि पापिनि कीनी॥

जाइ तमाल लतानि के अन्तर
पीहित चचल के दृग फेरे।
जैसी भई कहि तोष महा छवि,
तैसी कहा उपमा कवि हेरे।
खंजन मीन मृगा से कहूँ,
कहु कंजन मोर चकोर सँघेरे।
एक ते होत अनेक भटू,
करैं केते सरूप बिलोचन तेरे॥

घाँघरो सिरिफ मुसुरूको सो हरित रंग,
अँगियाँ उरोज ओज हीरन के हार को।
सिर सो अन्हाइ छबि छाइ ठाढी चौकी पर,
चेत ना रहत चितवत नोखीदार को।
कवि तोष कहैं मुख मोराते मुरुकि नेकु,
प्यारी चित चोरति निचोरति है बार को।
जान्यौ प्रेम ससि को प्रकार करि तोरयौ बैर,
मानौ कंज पकरि मरोरयौ अंधकार को॥

हीरा है दसन अरु विद्रुम अधर तेरे,
नख मनि जाहिर गुपुति क्यौं करति ना।

कहै कवितोष कलधौन के कलस कुच,
हाथ पाव लाल सों छ्पाइ क्यों धरति ना।
गनति न काहू कूर के गरूर दौलति को,
तौलों है कुसल जौलों पाले तूं परति ना।
एतो धन लीन्हे काहे गाफिल फिरत दौरी,
करति कहा रे कारे चोर सों डरति ना॥

मोह न पाइ सकै सुरराज सु,
है रतिराज कला मै जमी तूं।
क्यों करि जान्यौ मिलैगी हमै,
कहि तोष सक्यौ करि प्रेम रसी तूं।
मोहि परी मिलिबे की प्रतीति,
वही दिन ते मन मॉह बसी तूं।
सील सो गीली परी अँखियाँ
लखि ढीली चितौनि चितै कै हंसी तूं॥

चोप की चतुरता की चातुरि चितौनि ताकी
रीझिबे रिझाइबे की रुचि जो चहत है।
बैयन की नैयन की सैन की की सुसीलता की,
भूषन सिगार अंग-अंग जो गहत है।
कहै कबि तोष मन ती को तोष पावे सुनि,
पीकी बैन रैनि दिन सखियाँ कहत है।
प्यारी निज श्रौननि को नैन करि मान्यौ,
मानो प्यारे को स्वरूप सदा देखत रहत है॥

कान्हर की छबि देखिबे को,
यह गोपकुमारि महाछबि आई।
सीस धरे मटुकी लट छूटी,
छजै दधि बेंचन के मिसि आई।

नन्दलला को लख्यो कहि तोष,
हिये उनमाद दशा अधिकाई ।
भूलि गयो दधि नाम सो बामहि,
लेहु रे लहु रे माई कन्हाई ॥

ये अहीरबारे तोसों जोरि कर कोरि कोरि,
बिनय सुनाऊँ बलि बाँसुरी बजावै जिनि ।
बाँसुरी बजावै तौ बजावै मो बलाइ जानै,
बडे बडे नैननि ते मोहि टक लावै जिनि ।
लावै है तो लाउ टक तोष मोसों काज कहा,
परिनाम मेरी पौरि दौरि दौरि आवै जिनि ।
आवै ह तो आउ हम आइबो कबूलैं,
पर मेरे गोरे गात मै असित गात लावै जिनि ॥

ठोकत को पट ? हौं घनस्याम,
तौ दामिनि कौं तुम जाइ निहारो ।
आली, हूँ मै बनमाली, खरे
कहुँ बेचिये फूलन को रचि हारो ।
बंसीधरें हम, तो झख मारिये,
हौं हरि, तौ बन कुंज सिधारो ।
खोलहि देहु खिझावत क्यौं
कहि तोष मै कान्हर दास तिहारो ॥

वारक श्रीवृषभान - बधू ,
गहि कान्ह को माखन चोर कै ल्याई ।
आँसुनि पौंछि कह्यो जसुदा,
तुम केतौ लियौ जननी बलि जाई ।
दौरि गह्यो कुच राधिका को,
इतनोई लियो हम नन्द दोहाई ।

गोपिन के उर आनन मे,
सुख हास भरो हरि की लरिकाई ॥

साँकरी गेल अचानक राधिका,
पाय भयो मनमोद अनूठो ।
हा हा कै आगुरी दन्तनि दै,
तब राधे कही हरि को कछू भूठौ ।
पीछे जसोमति आवति है,
कहि तोष तबै हरि जू डरि ऊठौ ।
ऐसे उपाइ गई निबुकाइ,
चितै मुसकाइ दिखाइ अ गूठो ॥

काम-कला करि भाँति भली,
पिछिली निसि आइ गई अलसाई ।
जानु सो जानु भुजानि भुजानि सों,
औ अधरा अधराहि मिलाई ।
अंक भरे कहि तोष दोऊ,
परजक मे पौढि रहे छबि छाई ।
सोवैं सनेह-सने सुख सों,
जनु साचो सिगार औ सुन्दरताई ॥

तोरि डारै हार कुच बोरि डारे सुख-सिधु,
छोरि घुघरीयौ चीर कबधौं हरत पी ।
रद-छद अधर कपोलनि मैं, नैन पीक,
उरज करज लीक कबधौं हरत पी ।
तेरी आनि जानती जो तोष तौ बरजती मै.
जानती हौ. मेरो कही प्रान में धरत पी ।
तब लों तौ तन की रहति सुधि संग मोहि,
जब लौं प्रजक मै न अंक मे भरत पी ॥

एक समे हरि राधे खरे,
कर काँधे दुहूनि के दोऊ धरे हे।
जोहि मुखै लखै आरसी ले,
हिय मे सुख तोप अनोखो भरे हे।
आपनी छाँह को आन ती जानि,
कियो जिय नाह सो मान खरे है।
बाल की बक भई भृकुटी,
औ बिसाल बिलोचन लाल करे है।

•

छूटि छूटि छटा त्योही भूमि भूमि घटा त्योही,
त्रिबिधि बयारि हारी करिकै सहाय सो।
कहै कवि तोप त्यौही केकिन की केका,
कल-कंटनि की कूजै चहुँधा ते रही छाय सो।
हौहूँ कहि कहि थाकी काम केलि की कथानि,
पाहन से कठिन न केहूँ पघिलाय सो।
मारि मारि बान पंचबान हू बिलान्यौ मूढ़,
मान अडि रह्यो प्रान अंगद के पाय सो॥

जोन्ह ते खाली छपाकर भो,
छन मै छनदा अब चाहति चाली।
कूजि उठे चटकाली चहूँ दिसि,
फैलि गई नभ ऊपर लाली।
साली मनोज बिथा उरमै,
निपटे निठुराई धरे बनमाली।
आली कहा कहिये कहि तोष,
कहूँ पिय प्रीति नई प्रतिपाली॥

•

मेरियो लाल भई अँखियाँ,
अँखियाँ लखि रावरी जावक जानो।

मेरे बियोग जगे कहुँ रैनि सु,
हौहूँ कियो निसि जागि बिहानो।
हैं हम तो तुम एकई प्रान,
रच्यौ बिधि द्वै तन साँचु मै मानो।
रावरे के हिय हार गडयौ,
लखि साँवरे जू हिय मेरो पिरानो ॥

फूल गुलाब से फूलि रहे,
दृग किंसुक से अधरा अधकारे।
झारिके लाज पतोवन की,
किसलै-सम जावक है अरुनारे।
तोष लसै मृग के मद की तन,
लीक अली अवली मतवारे।
मोद अनन्त भयो उर अन्तर,
आये बसन्त ह्वै कन्त हमारे ॥

पैजनी गढाइ चोंच सोन मै मढाइ देहौं,
कर पर लाइ पर रुचि सो सुधरिहौं।
कहै कवि तोष छिन अटक न लैहौं कबौं,
कंचन कटोरे अटा खीर भरि धरिहौं।
एरे कारे काग तेरे सगुन सँजोग आजु,
मेरे पति आवै तौ बचन ते न टरिहौं।
कोती करार तौन पहिले करौंगी सब,
आपने पिया को फिरि पीछे अंक भरिहौं ॥

ज्यौं ज्यौं गरजत घन सपात जातै रैनि,
चपाबरनी को लखि त्यों त्यों लरजत हीउ।
ज्यौं ज्यौं चहुँ ओर घोर सोर मोर दादुर को,
पौन को झकोर जोर त्यौं त्यौं डरपत जीउ।

कहै तोष ज्यौं ज्यौं बारिधारा को निहारै दार,
मार के प्रकार ते पुकारती हेरायो सीउ।
ज्यौं ज्यौं पीउ-पीउ करै पातकी पपीहा त्यौं त्यौं,
तीय ताहि बूझति किते है रे किते हैं पीउ ॥

तीखी सिखी सर-सी किरिचै करि,
मोहि हनै फिरि पै पछितैहै।
लालच जान अपान यहै,
यहि को मन आनि हमै मिल जैहै।
बद करे कहि तोष महा,
मतिमंद रे चद न देखन पैहै।
सो मन जो तन छोडिहै तौ,
नँदनंद के आनन-चंद समैहै ॥

पीवो करैं दिन रैनि सुधाकर,
भूख तृषा न सताइ सकै जू।
अंक सो अंक लगाये रहै,
गुर लोग की सक न आइ सकै जू।
तोष कबौं तन न्यारोई होत,
नहीं ते कहूँ अब जाइ सकै जू।
साँचो सँयोग वियोगही मै,
हम ऊधौ विभूति न लाइ सकै जू ॥

———

रघुनाथ

(काव्य-कलाधर)

गोरे है नन्द यशोमति गोरी है,
गोरे महा सब ते बलभाई।
साँवरे जो हरि है रघुनाथ सो,
क्यों यह बात भई है न पाई।
मूरति नैननि में बृजबालनि.
बालक बैस ते लैकै बसाई।
संग रहेते लगी झलकै,
पुतरीन के रंग की अग लोनाई॥

कौतुक है एक चलै तोहूँ तौ देखाऊँ तोहि,
आवति हों देव अबै देखिबो को दाँवरी।
सौंह कीन्हे कहति हों समै ना मिलैगो फरि,
बिन्द्राबन बसि बरसन दीन्हे भाँवरी।
कदम की छाँहीं दोऊ दीन्हे गलबाहीं खडे,
यमुना मै फूलत सरोज जेहि ठाँवरी।
भाषत हैं ऐसे बृजबोधा एहो रघुनाथ
आधे हरि गोरे आप आधी राधा साँवरी॥

मेघ जहाँ तहाँ दामिनि है,
अरु दीप जहाँ तहाँ जोति है माते।
केश जहाँ तहाँ माँग सुवेश है,
है गिरि गेरु तहाँ रँगराते।
मोहन सों मिलिबे को बलाइ ल्यौं,
मै रघुनाथ कहौ हठ याते।

होत नयो नहि, आयो चल्यो,
रँग साँवरे गारे को सग सदा ते ॥

हार सवारि अनेकन फूल के,
ल्याइ लै मालिनि भौन भरे मे।
काहू कों श्वेत दियो वहि,
काहूको पीरो दियो रघुनाथ अरे मे।
नीरज नील को लै कर मे कही,
राधे सो यौं चतुराइ भरे मे।
लीजिये हेत तिहारे मे ल्याई हों,
या रग को लगै प्यारो गरे मे ॥

पायी ही जावक एक मै देन,
सो आइ गये रघुनाथ सुभाइनि।
वेगि दुरी, जब जात रहे,
तब आइके बैठी दवैबे कों चाइनि।
दीन्है हे कौन मे दीबेहै कौन-सौ,
देख्यो की देखि जकी यह नाइनि।
बोझिल सो यह पॉउ लगै,
तब यो मुसक्याइ कहा ठकुराइनि ॥

आपने हाथनि सौं करतार,
करे अतिही जग बीच उज्यारे।
देखत ही रहिऔ रघनाथ,
जुदे नहि कीजे लगे अति प्यारे।
सौरभ सों परिपूरण पुष्ट,
पवित्र भरे रस आनंद धारे।
वारि विना उपजे अति सुन्दर,
प्यारी के लोचन-वारिज न्यारे ॥

फरकन लागी आँखि ढरकन कान'न लौं
हरकन लागी लाज पलकें सुधेनी की।
भार लाग्यो परन उरोजनि मे रघुनाथ,
राजी रोमराजी भाँति कल अलिसैनी की।
कटि लागी घटन, पटन लागी मुख सोभा,
अटन सुवास आसपास स्वास पैनी की।
अंगनि में दुति चारु सोने की जगन लागी,
एडिन लगन लागी बैनी मृगनैनी की॥

अलवैं बिसाल ह्वै कै बंक लहरान लागी,
लक तै परान लागी दुतियन बाल की।
लाली महरेटी के अधर सरसान लागी,
अधरन बान लागी बतियाँ रसाल की।
रघुनाथ छाती कुच रुचि दरसान लागी,
छाती छहरान लागी छबि मनि माल की।
रीझि अँखिआन लागी आखें बढि कान लागीं,
कानन सोहान लागी चरचा गोपाल की॥

देखि री देखि ये ग्वालि गँवारिन,
नैक नहीं थिरता गहती है।
आनँद सों रघुनाथ पगी,
पग रगन सों फिरती रहती है।
छोर सौं छोर तरौना कों छ्वै करि,
ऐसी बडी छवि कौं लहती है।
जोबन आइबे की महिमा,
अँखिया मनो कानन सौं कहती है॥

आजु हरि पकरि कदम की ललित डार,
खड़े यमुना पै कलानिधि ऐसे वै रहे।

रघुनाथ न्हाइवे को अलिन के साथ आईं,
वृषभान-लली पंथ सौरभ सौं म्वै रहे।
देखा-देखी होत भयो कौतुक उदोत भटू,
राधे के नयन के ऐसी भाँति घरी ह्वै रहे।
कंजन से ह्वै कै फेरि खंजन से ह्वै के.
फेरि मीन ऐसे ह्वै कै री चकोर ऐसे ह्वै रहे॥

नित बोल अमीरस पान करैं,
यह कान की बान दुझावे री को।
शुभ अंग सुगंध जो सूँघति नाक,
सो सूँघनि ऐसे बुझावे री को।
रघुनाथ लग्यो मन पाइनि रीझि,
उचाटन खीझि सुझावे री को।
अनियारी गोपाल की आँखिन ते,
उरझी अखियाँ सुरझावे री को॥

मैं तुम सों कहै राखति हौं
रघुनाथ लखो हित के अवगाहे।
प्यारी अनूप दसा तन की,
भई है अति नेह को पंथ निबाहे।
देखत ही उठि ठाढे भये,
बलि मो सों दुरावति हौ अब काहे।
लागन को पिय के हिय सौं
पहले तन ते इन रोमन चाहे॥

जहाँ जहाँ सुनै तहाँ तहाँ को पठावै मोहि,
देखि आई अब धौं सो रूप कैसौ धरे हैं।
देखि आई जहाँ तहीं फूलि-फूलि भूलि-भूलि,
बूझति बनक ऐसे नित नेम करें हैं।

कहा कहौं तोहि कहि आई जो तूं हरि कथा,
रघुनाथ मोहि ये अँदेसे आनि अरे है।
आँखिन परेंगे आनि जौ तौ कौन दसा ह्वै है,
कान परे प्राण राखिबे के लाले परे हैं ॥

जो सुनि कै धुनि ऐसी भई,
तौ तू काहे को और उपाइ को धावै।
ने कहौ जो करि सो, रघुनाथ की सौंह,
तिया यह तू सुख पावै।
सांप डसे मैं जो फेरि डसे,
उतरे विष प्रान शरीर में आवे।
ताते सखी कहि मोहन सों,
ओहि टेर सों बाँसुरी फेर बजावे ॥

हो अभिलाष भरो अति ही,
नित चाहे सनाथ भयो तनको ध्वै।
आनि मिल्यो बड भागनि सों,
रघुनाथ समै सोइ आनँद को ध्वै।
हेरत ही हरि कों उमग्यो,
गति पारद की भई रोमनि को स्वै।
नेह भट्ट जिय के मन को,
झलको हिय पै जल को किनको ह्वै ॥

मणिमय भूषण पहिरि नख-सिख प्यारी,
बैठी पीठि पाछैं आसरो कै परयंक को।
कहै रघुनाथ पिय प्यारे की बिलोके गैल,
ही मै कछू-कछू ऐल सौतिहि के संक को।
तानिबे कों निशि दिशि ऊरध को देख्यो ज्योहि,
त्योंहि फैल्यो आनन प्रकाश ऐसे अङ्क को।

देखिबे को द्युति पून्यो के चंद्र की,
हे रघुनाथ श्रीराधिका रानी।
आई बोलाइ के चोंतरा ऊपर
ठाढी भई, सुख सौरभ-सानी।
ऐसी गई मिलि जोन्ह की जोति मै,
रूप की रासि न जाति बखानी।
बारन ते कछू भौहन ते कछू,
नेनन की छबि ते पहिचानी॥

मृगमद लाय मृगमद रँग अंग कीन्हे,
ढाँपि नख-सिख दीन्हे सारी श्याम भाँति है।
इंदीबर कमल के दलकी गरे में माल,
पहिरे बिसाल ना बनक कही जात है।
केश बगराय लीन्हे आनन छपाय,
मति कोंई लखि जाय रघुनाथ यो सकाति है।
भावतें सो मिलिबे को ऐसे बनि चली प्यारी,
मानो देह धारी भारी भादंवकी राति है॥

रैन चैन लहत में महत बिनोदपागे,
रघुनाथ दंपति ए रहे सूम भरिकै।
जागे बहु दिनके औसरके ह्वै बीते पै ये,
सोये नहि बाकी राति गई जब ढरिकै।
यह जौ बूझति हौ सो ताको यह हेतु सुनो,
निहचै हिये मैं पूरि दूरि भ्रम करिकै।
भावती की सखी नींद लाज पाइ द्वारि गई,
भावते की नींद गई सौति भाव धरिकै।

भोर उठी अँगिरात जंभात,
सदी जलतै भरि भाजन आनो।
धोवन लागी तिया मुख-मंडल,
देखि हियो रघुनाथ लोभानो।
मींजन आँखि लसी अँगुरी,
सम आरसी के उपमा यह जानो।
कंजन के दल सौं निसि-रजन,
खंजन के पर पोंछत मानो॥

मान सुनि भावती को तुम जो मनाइबे को,
आये प्यारे रघुनाथ जीमे आपु तरसे।
सो सब राहज ही मै बनि आयो बलि गई,
चलिकै मनाइ लीजै बिना पाँइ परसे।
आवती हौं उतही सों उनकी बिलोकि दसा,
बिरह तिहारे अंग-अंग सब झरसे।
चातिक के बैन सुनै बैन भये चातिक से,
देखि जलधर भये नैन जलधर से॥

प्यारो बिदेस चल्यो हठ कै,
सबसों तजि मोह-महातम ही को।
हे रघुनाथ भरी दुख सोचति,
एते में काहू अचानक छींको॥
का मैं कहौं धुनि सो सुनिकै,
सुख सों भयो शोभित यों मुख ती को।
कैतो रह्यो अति फीको भटू,
भयो कैतो उदैत मयंक तैंवा नीको॥

आये कहूँ रतिमानि लख्यौ,
तियके अँसुवान की धार चली द्वै।

दाखे कह्यो रघुनाथ कहो तो,
कही सकुचै डमि चातुरता छ्वै ।
रावरे को मुख-चंद चितै,
ए कुमोदिन आखैं अनंद महा म्वै ।
ही में न बंद सकी करि, फूलते
ऊपर ह्वै मकरंद चलै च्वै ॥

साँझ ही सों खेलत रसिक रसभीने फागु,
भर्यो अनुराग गावैं रीझि-रीझि पगि पगि ।
केसरि गुलाल सों लपटि रह्यो रघुनाथ,
रूप की ठगोरी निज डारि-डारि ठगि-ठगि ।
भोडर के किनका ये लाल के बदन पर,
निरखि जोन्हाई बीच ऐसे लसैं जगि-जगि ।
मानो फूलो बारिज बिलोकि कलानिधि आली,
किरनैं चलाईं ते लोनाई रही लगि-लगि ॥

फागु मचो बरसाने की बागमें,
पूरि रह्यो थल तान तरंग सों ।
गोप बधू इत, ठाढो गोपाल उतै,
रघनाथ बढे सब सग सों ।
घूँघट टारि सखीन की ओट ह्वै,
प्यारी चलाई ज्यो प्रेम उमंग सों ।
लागी तौ मूठि अबीर की आड़ पै,
प्यारो अन्हाइ गयो ओहि रंग सों ॥

खेलत फागु सोहाग भरी,
ब्रषभान-लली भली भाँति उमंग सों ।
घूँघट ओट किये रघनाथ,
गई हरि पै सखि छूटि के संग सों ।

चौंकि तिरीछे चितै मुसक्याइ,
फिरी पिचकारी लगाइ के अंग सों ।
रीझि रहे वह भाव चितै,
अरु भीजि रहे वा रँगीली के रंग सों ॥

दूलह

सारी की सरौटैं सब सारी में मिलाय दीन्हीं,
भूषन की जेब जैसे जेब जहियत है।
कहै कवि दूलह छिपाव रद-छद मुख—
नेह देखे सौतिन की देह दहियत है।
बाला चित्रसाला तें निकरि गुरुजन आगे,
कान्ही चतुराई सो लखाई लहियत है।
सारिका पुकारें 'हम नाहीं हम नाहीं', एजू—
'राम राम' कहो 'नाहीं' नाही कहियत है॥

धरी जब बाहीं तब करी तुम नाहीं,
पाँइ दियौ पलिकाही नाही नाही कै सुहाई हौ।
बोलत मै नाहीं पट खोलत मैं नाहीं,
कवि दूलह उछाही लाख भाँतिन लहाई हौ।
चुम्बन मै नाही परिरम्भन मै नाहीं,
सब आसन-विलासन मै नाहीं ठीक ठाई हौ।
मेलि गलबाहीं केलि कीन्ही चित-चाही,
यह हाँ तैं भली नाहीं सो कहाँ ते सीखि आई हौ॥

उरज उरज धसे, बसे उर आडे लसे,
बिन गुन माल गरे धरे छबि छाए हौ।
नैन कवि दूलह हैं राते, तुतराते बैन,
देखे सुने सुख के समूह सरसाए हौ।
जावक सौं लाल माल, पलकन पीक-लीक,
प्यारे ब्रजचंद सुचि सूरज सुहाए हौ।
होत उरुनोद यहि काद मति बसी आजु,
कौन उरबसी उरवसी करि आए हौ॥

बेनी प्रवीन

चपक सो तनु नैन सरोज से,
इन्दुसी आनन जोति सवाई।
बिम्ब-से ओठ लसै तिल फूल सी,
नासिका स्वास सुवास सुहाई।
बाँहैं मृनाल-सी बेनी प्रवीन,
उरोज उतंग नयी छवि छाई।
ज्यो ज्यों बिलोकिये जू प्रति अंगन,
त्यो त्यों लगै अति सुन्दरताई॥

कालिह ही गूँदी बबा की सौं मै,
गजमोतिन की पहिरी अति आला।
आई कहाँ ते इहाँ पुषराग की,
संग यई जमुना तट बाला।
न्हात उतारि मैं बेनी प्रवीन,
हँसे सुनि बेननि नैन बिसाला।
जानति ना अँग की बदली,
सब सौं बदला-बदली कहै माला॥

वहि अंगन माह सखी कोउ संग न,
खेलति जोबन जोति पसारे।
वह तो नवला कमला कै सुभाय,
उतै ते इतै करे कौतुक भारे।
उतसाह भरी उचकै अचकै गहकै,
भुज बेनी प्रवीन निहारे।
कर कंजन ते गिरि कन्दुक गो,
दृग-खंजनि ते अँसुवा भरि ढारे॥

न्हात सरोवर पंकज पेखि,
भई पिय के मुख की निसि की सुधि।
सोहै चहूँ दिसि में अवली,
अवलोकनि मालनि मैं जु रही रुधि।
चूमिबे को चित चाह सो बेनी प्रवीन,
उमाह भरी उमगी बुधि।
जत बने न तितै कंपे गात,
इतै पर नैननि लाज रही गुधि॥

बैठी तिया गुरु नारिन मैं,
रति तें रमनीय स्वरूप सोहाई।
आयो तहाँ मनमोहन त्यों,
सबकी अँखियान महा छबि छाई।
कैसे लखे पिय बेनी प्रवीन,
नवीन सनेह सकोच सवाई।
पीठि दै मानते को सजनी,
सजनीन को डीठि मैं डीठि लगाई॥

खेलिबे के मिस सखी केलिके सदन लैके,
नवलबधू को चली सुगति करिद है।
बोलति हँसति मृगनैनी पिकबैनी तहाँ,
देख्यो ना प्रवीन बेनी जदुकुल चद है।
चुपि रही चहुँधा चितै कै चकई सी चकी,
नैनन में झलक अचल जल-बिंद है।
छकित थकित मानौ कमल के ऊपर ह्वै,
मुख-मकरंद आली अबली अलिंद है॥

बैठी यह सोच करि सुन्दरि सकाच भरि,
कैसे कै बिलाकौं हरि करों कौन छलछंद।

दूबरी गई ह्वै देह कल न परत गेह,
सहित सनेह तौ लौं बोली यों जेठानी नंद।
आजु दधि बेचन तू जाइ नंदगाउँ मधि,
सुनत प्रवीन बेनी उमगो अनंदकंद।
कसि आई कचुकी उकसि आये दाउ कुच,
गसि आई बलया सो फसि आये भुजबंद॥

भृकुटी धनु बेसरि मोर मनौ,
मनि मानिक इंद्रबधू-जितु है।
दुति दामिनि कोर हरी बन-बेलि,
घटाघन घूँघट सो हितु है।
उमगो रस बेनीप्रवीन रसाल,
भयो अब चाजक सों चितु है।
हित रावरे नौलकिसोर लला,
अबला भई पावस की रितु है॥

सकल सिंगार साजि राजिकै प्रवीन बेनी,
आगमन जानि पिय प्रेम-प्रति-पालिका।
दमकत रदन मदन की उमंग अंग,
केलि के सदन बैठी बदन विलासिका।
नग जगमगत जगत जोति जोबन की,
सारी जरतारी अंग कैसी संग आलिका।
झलक मलक झलकति झाँई झाँझरीन,
मानौ मनिमहल समानी दीप-मालिका॥

ठाढे भये आनि ढिग बिहँसि प्रवीन बेनी,
देखिबे को आतुर बदन नँदलाल है।
कीन्हे मनुहारि मुरि पीतम त्यों बीरी जब
दैन लागी लाजन लपेटी बर बाल है।

डोरिया की चादरि सौं झाँपिति पहूँचन लौं,
ऐसी ततकाल कर कपति बिसाल है।
नीर की लहरि मानौ थहरि छहरि रही,
लागत समीर बीच कमल सनाल है॥

आई रति मंदिर ते रति ले रसीली अति,
रति ते रसीली अति उपमा अपंग है।
मन्द-मन्द गति मे मरू कै मग पग परै,
उमँगी प्रवीन बेनी उर मे उमग है।
कम्पत रदन छवि बदन कढ़ै न बेन,
मदन छकाई छाई छवि की उतग है।
सारी जरतारी मृगमदज अतर बूडी,
पीक बूडी पलक प्रसेद बूडे अग है॥

रूठिके सोइ रहे अँगना पिय,
चौपारि चूकि तिया गहरानी।
सानत बन्दन बेंदी दई गुंदि,
बेनी प्रवीन सखी बहरानी।
भोरही आये उठे अलसात वै,
आरसी सामुहैं लै ठहरानी।
कान्ह कछू सकुचे मुसकाय,
हँसी लखि मदिर मे महरानी॥

घेरी अँधेरी घनी बदरी अब,
आवन चाहत है अति पानी।
पौन की ऐसी झकार चली मग,
ह्वै है रहे कहुँ छप्पर छानी।
प्रान लै धाई निकुंज, अली,
तै भली भई आइ गई सुखदानी।

बेलि के धोखे गह्यो इन मोहि,
तमाल के धोखे इन्है लपटानी ॥

तन की सुबासु बासु बहति समीर तहाँ,
अलिन की भीर न अलक छवि ह्वै रही।
नये नये नीके लगे किसलै लगन आली,
पगन की लाली द्रुमजालिन सम्वै रही।
सुधा सुध सींची मुखचन्दकी मरीचिनते,
बीथिन प्रवीन बेनी चाँदनीसी ह्वै रही।
उमँगे अनग मन कन्त को मिलन जाति,
आगे आगे बन में बसन्त-रितु ह्वै रही ॥

गेह ते सनेह में सिधारी स्याम सारी सजि,
रजनि अँधेरा न सजनि कोऊ साथ में।
बैठी जाइ सुन्दरि सहेट पिय भेंट हेत,
मदन अनूप सर लीन्हें जहाँ हाथ मे।
बहति समीर सीर सुरभि प्रवीन बेनी,
यह मृगनैनी की कहाँ लौ कहौ गाथ मे।
तनु तिन कुजनि मै दृग मग-पुजनि मै,
मनु गल-गुंजनि मै प्रान प्राननाथ मे।

काहू रूपवती मै रमे हैं लोभी लालची हैं,
ललकत डोलै बोलैं तजत सुभाये ना।
कहूँ संग सखनि मैं रंग मडि रहे कैधौं,
कैधौं उर उमड़ि अनंग-बान लाये ना।
कौन असमंजस प्रवीन बेनी याते और,
भोर होत आली नभलाली तैं बताये ना।
अथवत इन्दु अरविंद बन बिकसत,
गुंजत मलिंद हैं गोविंद गेह आये ना ॥

भोर ही न्यौति गई ती तुम्हें वह,
गोकुल गॉउ की ग्वालिनि गोरी।
आधिक राति लौं बेनी प्रवीन,
कहा ढिग राखि कियो बरजोरी।
आवै हँ सी हमै देखत लालन,
भाल में दीन्ही महावर घोरी।
एते बडे ब्रज मंडल मै न,
मिली कहूँ मागे हू रंचक रोरी॥

मालिन ह्वै हरवा गुहि देत,
चुरी पहिरावै बने चुरि हेरी।
नायनि ह्वै कै निखारत केस,
हमेस करैं बनि जोगिनि फेरी।
बेनी प्रवीन बनाइ बिरी,
बरईनि बने रहैं राधिका केरी।
नन्दकिसोर सदा वृषभान की,
पौरि पै ठाढे बिकै बने चेरी॥

—ः॥*॥ः—

बोधा

(इश्कनामा)

अति छीन मृनाल के तारहु ते,
तेहि ऊपर पाव दै आवनो है।
सुई बेह ते द्वार सकी न तहा,
परतीति को टाडो लदावनो है।
कवि बोधा अनी घनी नेजहूँ ते,
चढ़ि तापै न चित्त डरावनो है।
यह प्रेम को पन्थ कराल महा,
तरवार की धार पै धावनो है।

लोक की लाज औ सोच प्रलोक को,
वारिये प्रीति के ऊपर दोऊ।
गाँव को गेह को देह को नातो,
स्नेह में हातो करै पुनि सोऊ।
बोधा सुनीति निबाह करे,
घर ऊपर जाके नहीं सिर होऊ।
लोक की भीति डेरात जो मीत,
तो प्रीत के पैडे परै जनि कोऊ ॥

यह प्रेम को पन्थ हलाहल है,
सु तो बेद पुरानउ गावत हैं।
पुनि आखिन देखौ सरोजन लै,
नर सभु के सीस चढ़ावत हैं।
बरही पर माथे चढे हरि के,
फल जोग ते एते न पावत हैं।
तुम्है नीकी लगै ना लगै तौ भले,
हम जान अजान जनावत हैं ॥

कबहूं मिलिबो कबहू मिलिबो,
यह धीरज ही मै धरैबो करै।
उर ते कढ़ि आवै गरै ते फिरै,
मन की मन ही मै सिरैबो करै।
कवि बोधा न चाउ सरी कबहूं,
नित हीं हरवा से हिरैबो करै।
सहते ही बने कहते न बनै,
मन ही मन पीर पिरैबो करै॥

बोधा किसू सों कहा कहिये,
सो बिथा सुनि पूरि रहै अरगाइ के।
याते भले मुख मौन धरै,
उपचार करै कहूँ औसर पाइ कै।
ऐसो न कोऊ मिल्यो कबहूँ,
जो कहे कछु रंच दया उर लाइ कै।
आवतु है मुख लौं बढि कै,
फिरि पीर रहै या सरीर समाइ कै॥

दहिये बिरहानल दाहन सों,
निज पापन तापन कों सहिये।
चहियै सुख तौलों रहै दुख कै,
दृग वारियै बोधन कै चहिये।
कवि बोधा इते पै हितू न मिलै,
मन की मन ही मै पचै रहिये।
गहिये मुख मौन भई सो भई,
अपनी करि काहू सों का कहिये॥

ऐसीय नाथ घरी वह कौन,
बजाइ के बाँसुरी मोहन ही हरौ।
ता दिन ते हौं जकी सी थकी
चकचौंधी फिरौं नहि धीरज ही धरौ।

बाधा न मीत सों प्रीत सखी करि,
लाज निगोड़िनि बन्धन जी अरौ।
प्रेम ते नेम कहा निबहै,
अब तौ यह नेह निबाहिबे ही परौ॥

छाड़ि सखीन की सीख सबै,
कुलकानि निगोड़ी बहाइबेही है।
ह्वै कै लट्टू लपटाइ हिए हरि,
हाथ ते बंसी छुटाइबेही है।
बोधा जरैलनु के उपहास,
अंगेजुके कुंजनि जाइबेही है।
लाज सो काज कहा बनिहै,
ब्रजराज सो काज बनाइबेही है॥

छुटि जाँइगे चेत के नेत सबै,
जो कहूँ मुरली अधरा धरि है।
मुसकाइ के बोले तो बाट परै
नखहू शिख लौ विष सों भरिहै।
कवि बोधा तिहारे सयान सबै,
सु तौ सूधेई हेरनि मै हरि है।
तुम्हैं भावते जानि मनै को करै,
वह जादूगरी बजि कै करिहै॥

कोटिक देखि फिरौ छबि मैं,
पै न कोऊ छबै सम वा छबि जूझै।
आँखिन देखी जो बान तिन्है बिन,
आखिन सो नोजुवाँ हय बूझै।
बोधा सुभान को आनन छोड़ि,
न आनन मो मन आनि अरूझै।
जैसे भये लखि सावन के अंधरे
नर को सु हरो हरो सूझै॥

दूरि है मूरि अपूरब सो ससि,
सूरज हूँ कबहूँक निहारी।
आदर बेली नबेली अबै कहु,
कैसे मिलै बर जोग दिवारी।
बोधा सुनै हे सुभान हितू,
करि कोटि उपाइ थके उपचारी।
पीर हमारी दिलन्दर की
हम जानत है वह जाननहारी॥

बोधा सुभान हितू सों कही,
या दिलन्दर की को सही करि मानत।
ता मृगनैनी की चाह चितौनि
चुभी चित मै चित सो पहिचानत।
तासों वियोग दई न दयौ तौ
कहौ अब कैसे मै धीरज आनत।
जानत है सबही समुझाइये,
भावती के गुन को नहि जानत॥

हार में प्यारो खरो कब को,
लखती हियरे सों लगाइ न लीजै।
तू तौ सयानी अनोखी करी,
अब फेरि कै ऐसी न चित्त धरीजै।
बोधा सोहाग औ सोभा सबै
उडिजैबे के पन्थ पै पाउ न दीजै।
मानि ले मेरी कही तू लली अहे,
नाह के नेह मथाह न कीजै॥

खरी सासु घरी न छमा करिहै,
निसिबासर त्रासन हीं मरबी।
सदा भौहै चढ़ाये रहै ननदी यों,
जेठानी की तीखी सुनै जरबी।

कवि बोधा न सग तिहारो चहै,
यह नाहक नेह फँदा परबी।
बड़ी आखै तिहारी लगै ये लला,
लगि जैहै कहूं तौ कहा करबी॥

त्याग कों जोग जहान कहै,
हम तो तब हीं चुकी त्यागि जहानै।
मौत कलेस को लेस नहीं,
कवि बोधा गोपाल मै चित्त समानै।
खैचती पौन को मौन गहे,
अरु नींद अहार नहीं उर आनै।
ऊधो जू जोग की रीति कहो,
हम जोग ना दूजो वियोग ते जानै॥

बिन स्वाद पुरानी लता सिगरी,
तिनहूँ मै कछू गुन ज्ञान नतो।
लखि केतकी और नेवारी जुही,
मनमानै न सेवती बीच रतो।
कवि बोधा न प्रापति आदर को,
दरकार करी करि येक मतो।
यहि आसरे या बगिया बिलम्यौ,
वा चमेली नबेली सों नेह हतो॥

बटपारन बैठि रसालन मै
यह क्वैलिया जाइ खरे ररि है।
बन फूलि है पुंज पलासन के,
तिनको लखि धीरज को धरि है।
कवि बोधा मनोज के ओजनि सों,
बिरही तन तूल भयो जरि है।
घर कंत नहीं बिरतन्त भटू,
अब कैधों बसन्त कहा करि है॥

ठाकुर

झूम देइ झूला मे झुलावती जसोदा माय,
चूम चूम बदन बलैया लेत प्यारे की।
झीनी सोहै झगुली औ झालर झंडूली लसै,
अँखियाँ रसीली नीकी कज सी सुखारे की।
ठाकुर कहत चित-चोर चितवन चारु,
रूप मे मिलत त्यों किलोलै किलकारे की।
कंजहू ते कोरीं जिन्हे बंदत महेस अज,
लागै सबै पैया या गोविंद गभुवारे की ॥

मेहदी लपेटे लाल लाल बस कीन्हे निज,
छीगुनी अनौटा नगजटित सँवारे है।
दीपति के दीप तरवान को बखाने कौन,
पाँचों अगुरिन मैन सर पाँचौ पारे है।
ठाकुर कहत ठकुराई के निकेत,
रस-रूप के भँडार निरधार निरधारे है।
पकज-बरण अशरण के शरण राधे,
रावरे चरण सुख-करन हमारे है ॥

मोतिन कैसी मनोहर माल गुहै,
तुक अच्छर जोरि बनावै।
प्रेम को पथ कथा हरिनाम की,
बात अनूठी बनाइ सुनावै।
ठाकुर सो कवि भावत मोहि जो,
राज राजसभा में बड़प्पन पावै।
पंडित लोक प्रवीनन को,
जोई चित्त हरै सो कवित्त कहावै ॥

वा निरमोहिनि रूप की रासि,
जऊ उर हेतु न ठानति ह्वै है।
बार हूं बार बिलोकि घरी घरी,
सूरत तो पहिचानति ह्वै है।
ठाकुर या मन की परतीत है,
जो पै सनेह न मानति ह्वै है।
आवत है नित मेरे लिये,
इतनो तो विशेष कै जानति ह्वै है॥

घरही घर घैरु करै घरिहाइनै,
नाॅव धरैं सब गाॅवरी री।
तब ढोल दै दै बदनाम कियौ,
अब कौन की लाज लजावरी री।
कवि ठाकुर नैन सों नैन लगे अब,
प्रेम सों क्यों न अघाॅवरी री।
अब होन दै बीस बिसे री हॅसी,
हिरदै बसी मूरति साॅवरी री॥

जब तै दरसे मनमोहन जू,
तब तै अँखियाॅ ये लगीं सो लगीं।
कुलकानि गई भगि वाही घरी,
ब्रजराज के प्रेम पगी सो पगीं।
कवि ठाकुर नेह के नेजन की
उर मै अनी आन खगीं सो खगीं।
अब गाॅव रे नाॅव रे कोई धरौ,
हम साॅवरे रंग रगीं सो रगीं॥

ठाढ़े रहे घनश्याम उतै,
इत मैं पुनि आनि अटा चढ़ि झाॅकी।
जानति हौ तुम हू ब्रज-रीति,
न प्रीति रहै कब हूॅ पल ढाॅकी॥

ठाकुर कैसहुँ भूलत नाहिनै,
ऐसी अरी वाबिलोकनि बाँको।
भावत ना छिन भौन को बैठिबो,
घूघट कौन को लाज कहाँ को॥

लगी अन्तर में करै बाहिर को,
बिन जाहिर कोउ न मानत है।
दुख औ सुख हानि औ लाभ सबै,
घर की कोऊ बाहर भानतु है।
कवि ठाकुर आपनि चातुरि सों,
सब ही सब भाँति बखानतु हे।
पर बीर मिले बिछुरे की बिथा,
मिलिकै बिछुरे सोई जानतु है॥

का कहिये परी नेह अधीन,
रिसान दे लोग रिसानो ई सो है।
और कहा कहिहै कहि लैन दै,
नाम बुरो तौ बखानो ई सो है।
ठाकुर याकी है मोहि प्रतीत सो,
बैर सबै रिस मानो ई सो है।
वा घनश्याम अकेले बिना,
सिगरो ब्रज बीर बिरानो ई सो है॥

आइ अगीत पछीत दई निसि,
टेरत मोहि सनेह के कूकन।
जानत है कि न जानत है,
कोई यों न जरै नर नारि सरूकन।
ठाकुर हौ न सकौं कहिकै,
अब का कहिये हरि सों यह चूकन।
देखि उन्हैं न दिखाइ कछू,
ब्रज पूरि रह्यौ चहुँ ओर चहूँकन॥

काहे अरे मन साहस छाँडत,
काहे उदास ह्वै देह तजे है।
वे सुख वे दुख आये चले गये,
एक सी रीति रही नहि रैहे।
ठाकुर का को भरोस करै हम,
या जगजालन भूल न गेहै।
जानै संयोग में दीन्हों बियोग,
बियोग मे सो का संयोग न देहै॥

का कहिए कोई पीरक नाहिनै,
तातै हिये की जतेयत नाहीं।
भागन भेट भई कबहूँ सु,
घरीकु बिलोके अघेयत नाहीं।
ठाकुर या घर चौचंद को डर,
तातैं घरी घरी ऐयत नाही।
भैंटन पैयत कैसे तिन्है,
जिन्हे आँखिन देखन पेयत नाहीं॥

सापने हों फुलवाई गई,
हरि अक भरी भुज कंठन मेली।
हो सकुची कोउ सुन्दरी देखत,
ले जिन बाह सो बांह पछेली।
ठाकुर भोर भये गये नींद के,
देखहुँ तौ घर माझ अकेली।
आँख खुलो तब पास न साँवरो,
बाग न बावरो वृक्ष न बेली॥

का कहिये कहिबे की नही
मग जोवते जोवत जोगयौ है।
उन तोरत बार न लाई कछू,
तन तैं बृथा जोबन भ खोगयौ है।

कवि ठाकुर कूबरी के बस ह्वै,
रस मै बिस बावरो बो गयौ हे।
मनमोहन को हिलिबो मिलिबो,
दिन चारिक चाँदनी हो गयौ है॥

धिक कान जो दूसरी बात सुनै,
अब एक ही रंग रहो मिलि डारो।
दूसरो नाम कजात कढ़ै
रसना जो कहूँ तो हलाहल बोरो।
ठाकुर यों कहतीं ब्रजबाल,
सा ह्या बनितान को भाव है भोरो।
ऊधो जू वे अखियाँ जरि जाँय
जो साँवरो छाँड़ि तकै तन गोरो॥

मोही में रहत रहै मोही सों उदास सदा,
सीखत न सीख तन सीख निरधारो है।
चौको सो चको सो कहूँ जक सो जको सो कहूँ,
पाइन थको सो भाँति भाँतिन निहारो है।
ठाकुर अचेत चित चोजवारी बातन में,
जानत न हरि सों कहा धौं बोल हारो है।
ऐसो चित्त चतुर सयानो सावधान मेरो,
ये री इन आँखिन अजान करि डारो है॥

एतो ब्रजमंडल बसत तासों काम कौन,
आनँद के भौन तुम्हैं देखि जीजियतु है।
सोऊ तुम इतै उते अनत पनत हेरौ,
याही दुःख दाहन सरीर छीजियतु है।
ठाकुर कहत मेरी चाह की अचाह करौ,
चाहते की चाह को निबाह कीजियतु है।
प्रीति बिनु प्यारे कोऊ काहे को परेखो देइ,
प्रीति की प्रतीति को परेखो दीजियतु है॥

को हौ ? जौतिषी है । कछू जोतिषै बिचारत हौ ?
येही शुभ धाम काम जाहिर हमारौ तो ।
आओ बैठ जाओ पानी पिओ पान खावौ फेर,
होय के सुचित्त नैक गणित निकारौ तो ।
ठाकुर कहत प्रेम नेम को परेखो देखि,
इच्छा की परिच्छा भली भाँति निरधारौ तो ।
मेरो मन मोहन सों लागत है भाँति भाँति,
मोहन को मन मोसों लागि है बिचारौ तो ॥

अपने अपने निज गेहन में,
चढ़े दोऊ सनेह की नाँव पै री ।
अँगनान में भीजत प्रेम भरे,
समयौ लखि मैं बलि जाँव पै री ।
कह ठाकुर दोउन की रुचि सौं,
रँग ह्वै उमड़े दोउ ठाँव पै री ।
सखी कारी घटा बरसै बरसाने पै,
गोरी घटा नन्दगाँव पै री ॥

आजु यहि कौतुक छको हे नंद-नंद बीर,
बरनौ न जात सो विचित्र चित्र मो पै री ।
चलु बलि तोहि यों दिखाय लाऊं बन घनो,
पायो हे निहार बलिहार भयो सो पै री ।
ठाकुर कहत कहाँ नीलमणि सोनबेलि,
सुखमा सकेलि कै न उपमा अरोपै री ।
घन को निहारै तब वारै होत आपुन पै,
बीजुरी निहारै तब वारै होत तो पै री ॥

येई हैं वे बृषभानुसुता
जिनसों मन मोहन मोह करै है ।
कामिनि तो उन सी नहिं दूसरि,
दामिनि की दुति को निदरै है ।

ठाकुर कै हम हीं यह जानतीं,
कै उनहूं को जनाइ परै हैं।
छोटी नथूनी बड़े मुतियान,
बड़ी अँखियान बड़ी सुघरै है॥

सुरझी नहिं केतो उपाइ कियौ,
उरझी हुती घूंघट खोलन पै।
अधरान पै नेक खगी ही हुती,
अटकी हुती माधुरी बोलन पै।
कवि ठाकुर लोचन नासिका पै,
मड़राइ रहो हुती डोलन पै।
ठहरे नहि डीठि फिरै ठटकी,
इन गोरे कपोलन गोलन पै॥

जब तें बिलोकि गई रावरो बदन बाल,
तब तें अचेत सी बियोग झार झुरई।
हेम की लता सी चपला सी चारु चाँदनी सी,
मदन सताई पै न मै जनाई भुरई।
ठाकुर कहत भूमि विकल बिहाल परी,
देखिये गोपाल ताहि उपमा न जुरई।
रति के भँडार ते दुराय कै चोराय मानो,
काहू आनि मदिर मे रूप रासि कुरई॥

गावै पिकबैनी मृगनैनी हू बजावे बीन,
नाचै चन्द्रमुखी चारु चाउ की चटक पै।
कीरतिकुमारी वृषभानु की दुलारी राधे,
अटकी विलोकि लोक-लाज की अटक पै।
ठाकुर कहत चीर केसर के रंग रंगो,
अतर पगो सो मन मोहै पीत पट पै।
देख तो देखात कैसो राजत रसीलो आजु,
आली री बसत बनमाली के मुकुट पै॥

आग सी घॅधाती ताती लपटें सिराय गईं,
पौन पुरवाई लागी सीतल सुहान री।
मृदुल अनूप चारु चाँदनी मलीन भई,
तापै छाँह छाई छूटौ मानिनी को मान री।
ठाकुर कहत आलो ग्रीषम गवन कीनौ,
पावस प्रवेस बेस छवि सरसान री।
सावन सुहावन को आवन निरखि आली,
मेघ बरसन लागे हिय हुलसान री॥

कारे लाल पीरे धौरे धावत धुवाँ के रंग,
कितने सुरंग किते रंग मटमाढे हैं।
कितने मही के रूप माधुरी करत घोर,
सारे चहुँ ओर होत गहगहे गाढ़े हैं।
ठाकुर कहत कवि बरनि बरनि थाके,
बरने न जात यों बहसि बार बाढ़े है।
मोहे लेत मनन जु ऐसी बने बनन जू,
आजु देखो घनन घनेरे रंग काढ़े है॥

दौरि दौरि दमकि दमकि दुरि दामिनि यों,
दुन्द देत दसहू दिसान दरसतु है।
घूमि घूमि घहरि घहरि घन घहरात,
घेरि घेरि घोर घनो सोर सरसतु है।
ठाकुर कहत पिक पीकि पीकि पी कों रटे,
प्यारो परदेस पापी प्रान तरसतु है।
भूमि भूमि झुकि झुकि झमकि झमकि आली,
रिमझिम झिमकि असाढ़ बरसतु है॥

पावस में परदेस ते आनि मिले पिय,
औ मनभाई भई है।
दादुर मोर पपीहरा बोलत,
तापर आनि घटा उनई है।

ठाकुर वा सुखकारी सुहावनि,
दामिनि कौध किते धौं गई है।
री अब तो घनघोर घटा,
गरजौ बरसौ तुम्हैं धूरि दई है॥

—•*॥०॥*—

पद्माकर

प्रीतम के संग ही उमगि उडि जैबे कोन,
एती अंग - अंगनि परन्द पखियाँ दईं।
कहै पदमाकर जे आरती उतारैं, चौर—
ढारैं श्रम हारै पै न ऐसी सखियाँ दईं।
देखि दृग द्वै हो सों न नेकुहीं अघैये इन,
ऐसे भुकाभुक मे भपाक भँखियाँ दईं।
कीजै कहा राम स्याम-आनन बिलोकिबे कों,
बिरचि बिरचि न अनत अँखियाँ दईं॥

ए ब्रजचंद गोबिंद गोपाल
सुन्यो न, कितेक कलाम किये मै।
त्यों पदमाकर आँनद के नद हौ
नँदनन्दन जानि लिये मै।
माखन चोरि कै खोरिन ह्वै चले
भागि कछू भय मानि जिये मै।
दूरि ही दौरि दुरे जो चहौ तौ
दुरौ किन मेरे अँधेरे हिये मै॥

प्रानन के प्यारे तन ताप के हरन हारे,
नंद के दुलारे ब्रजबारे उमहत है।
कहै पदमाकर उरूझे उर-अंतर यों,
अंतर चहे हूँ जे न अतर चहत है।
नैननि बसे हैं अङ्ग-अङ्ग हुलसैं हैं,
रोम-रोमनि रसे है निकसे है को कहत है।
ऊधो वे गोविन्द कोऊ और मथुरा मैं,
यहाँ मेरे तो गोविन्द मोहि मोहि में रहत है॥

घर ना सुहात ना सुहात बन-बाहर हूँ,
बाग ना सुहात जे खुशाल खुशबोही सों।
कहै पदमाकर घनेरे धन धाम त्यों ही,
चद ना सुहात चाँदनी हूँ जोग जोही सों।
साँझ ना सुहात ना सुहात दिन माँझ कछू,
व्यापी यह बात सो बखानत हो तोही सों।
राति ना सुहात ना सुहात परभात आली,
जब मन लागि जात काहू निरमोही सों ॥

गोकुल के कुल के गली के गोप-गाँवन के,
जौ लगि कछू को कछू भारत भने नहीं।
कहे पदमाकर परोस पिछवारनि ते,
द्वारन ते दौरि गुन औगुन गनै नहीं।
तौ लौ चलि चतुर सहेली आई कोऊ कहूँ,
नीके कै निचोरे ताहि करते मनै नहीं।
हौ तो तो श्याम-रंग मे चुराइ चित्त चोरा-चोरी,
बोरत तो बोर्यौ पै निचोरत बनै नही ॥

मोहि तजि मोहनै मिल्यो है मन मेरो दौरि,
नैन हूँ मिले है देखि देखि साँवरो शरीर।
कहे पदमाकर त्यों कान मय कान भये,
हौ तौ रही जकि थकि भूली-सी भ्रमी-सी बीर।
ये तौ निरदई दई इनको दया न दई,
ऐसी दशा भई मेरी कैसे धरौ तन धीर।
हो तो मन हूँ के मन नैनन के नैन जो पै,
प्रानन के प्रान तो पै जानते पराई पीर ॥

ईश की दुहाई शीशफूल तै लटकि लट,
लट तैं लटकि लट कंध पै ठहरिगो।
कहै पदमाकर सुमंद चलि कंध हूँ तै,
भूमि भ्रमि भाई-सी भुजा मे त्यों भभरिगो।

भाई-सी भुजा तै भ्रमि आयो गोरी-गोरी बाँह,
गोरी बाँहहू तैं चापि चूरिन में अरिगो।
हेरेउ हरे हरैं हर चूरिन तै चाहौ जौलौ,
तौलौ मन मेरो दौरि तेरे हाथ परिगो॥

चाह भर्‌यो चंचल हमारो चित्त नौल बधू,
तेरी चल चचल चितौनि मे बसत है।
कहै पदमाकर सु चंचल चितौनि हूँ ते,
औझकि उझकि झझकनि में फँसत है।
औझकि उझकि झझकनि तै सुरझि बेश,
बाँहीं की गहनि माहि आइ बिलसत है।
बाँहीं की गहनि तै गुनाहीं की कहनि आयो,
नाहीं की कहनि तै सु नाहीं निकसत है॥

धारत ही बन्यो ये ही भतो,
गुरु लोगन को डर डारत ही बन्यो।
हारत ही बन्यो हेरि हियो,
पदमाकर प्रेम पसारत ही बन्यो।
बारत ही बन्यो काज सबै,
अब यों मुखचंद उघारत ही बन्यो।
टारत ही बन्यो घूंघट को पट,
नंदकुमार निहारत ही बन्यो॥

भेद बिन जाने एती वेदन बिसाहिबे को,
आज हौ गई ही बाट बसीवट वारे की।
कहै पदमाकर लटू ह्वै लोट-पोट भई,
चित्त में चुभी जो चोट चाय चटवारे की।
बावरी लौं बूझति बिलोकति कहा तू बीर,
जानै कहा कोऊ पीर प्रेम-हटवारे की।
उमड़ि उमड़ि बहै बरसै सु आँखिन ह्वै,
घट में बसी जो घटा पीत-पटवारे की॥

जाहिरै जागत सी जमुना,
जब बूड़ै बहै उमहे वह बेनी।
त्यों पदमाकर हीर के हारन,
गग तरंगन को सुख देनी।
पोयन के रँग सों रँगि जात सी,
भाँति ही भाँति सरस्वति सेनी।
पैरै जहाँई जहाँ वह बाल,
तहाँ तहँ ताल मै होत त्रिबेनी॥

शोभित स्वकीयगन गुनगनती मै जहाँ,
तेरे नाम ही की एक रेखा रेखियतु है।
कहै पदमाकर पगी यों पति-प्रेम ही मे,
पदमिनि तोसी तिया तूही पेखियतु है।
सुबरन रूप जैसो तैसो शील सौरभ है,
यार्हा ते तिहारो तनु धनि लेखियतु है।
सोने में सुगन्ध नाहि गंध में सुन्यो न सोनो,
सोनो औ सुगंध तोमें दोनों देखियतु है॥

ये अलि या बलि के अधरानि मैं,
आनि चढ़ी कछु माधुरई सी।
ज्यों पदमाकर माधुरी त्यों,
कुच दोउन की चढ़ती उनई सी।
ज्यों कुच त्यों हीं नितंब चढे कछु,
ज्योंहीं नितब त्यों चातुरई सी।
जानि न ऐसी चढ़ाचढि मै,
किहि धों कटि बीच ही लूटि लई सी॥

ये अलि हमे तो बात गात की न जानि परै,
बूझति न काहे यामे कौन कठिनाई है।
कहै पदमाकर क्यों अग ना समात आँगी,
लागी काह तोंहिं जागी उर में ऊँचाई है।

तुव तजि पाँयन चली है चंचलाई कित,
बावरी बिलोकै क्यों न आँखिन में आई है।
मेरी कटि मेरी भटू कौन धौ चुराई,
तेरे कुचन चुराई कै नितंबन चुराई है॥

स्वेद को भेद न कोऊ कहै,
व्रत आँखिन हू अँसुवान को धारो।
त्यौ पदमाकर देखती हौ,
तन को तन कंप न जात सँभारो।
है धो कहा को कहा गयो यौं,
दिन द्वैक ही ते कछु ख्याल हमारो।
कानन में बसी बाँसुरी की धुनि,
आनन में बसो बाँसुरीवारो॥

जाहि न चाह कहूँ रति की,
सु कछू पति को पतियान लगी है।
त्यों पदमाकर आनन मै रुचि,
कानन भौह कमान लगी है।
देति पिया न छुवै छतियाँ,
बतियाँन मैं तो मुसकान लगी है।
पीतमै पान खवाइबे को,
परजंक के पास लों जान लगी है॥

आरत सों आरत सम्हारत न सीस-पट,
गजब गुजारत गरीबन की धार पर।
कहै पदमाकर सुगंध सरसावै सुचि,
बिथुरि बिराजैं बार हीरन के हार पर।
छाजत छबीली छिति छहरि छरा की छोर,
भोर उठि आई केलि-मंदिर के द्वार पर।
एक पग भीतर सु एक देहरी पै धरै,
एक कर कंज एक कर है किवार पर॥

निशि अँधियारी तऊ, प्यारी परबीन,
चढ़ि मान के मनोरथ के रथ पै चली गई।
कहै पदमाकर तहाँ न मन मोहन सों,
भेट भई सटकि सहेत तै अली गई।
चंदन सों चाँदनी सों चद सों चमेलिन सो,
और बन बेलिन के दलनि दली गई।
आई हुती छैल के छलै कों छल छंदनि सों,
छैल तो छल्यो न आपु छैल सों छली गई॥

कौन हे तू कित जाति चली,
बलि बीती निशा अधराति प्रमानै।
हौं पदमाकर भावति हौ,
निज भावते पै अब हीं मोहि जानै।
तो अलबेली अकेली डरै किन,
क्यों डरौ मेरी सहाय के लानै।
है सखि संग मनोभव-सौ भट,
कान लौं बान-शरासन तानै॥

दोऊ छबि छाजतीं छबीली मिलि आसन पै,
जिनहि बिलोकि रह्यो जात न जितै जितै।
कहै पदमाकर पिछौहै आइ आदर सों,
छलिया छबीलो छैल बासर बितै बितै।
मूंदै तहाँ एक अलबेली के अनोखे दृग,
सुदृग मिचावनी के ख्यालनि हितै हितै।
नैसुक नवाइ ग्रीवा धन्य धन्य दूसरी को,
औचक अचूक मुख चूमत चितै चितै॥

ख्याल मन-भाये कहूँ करिकै गोपाल,
घरै आये अति आलस मढेई बडे तरके।
कहै पदमाकर निहारि गजगामिनी के
गजमुकतान के हिये पै हार दरके।

येते पै न आनन ह्वै निकसे बधू वे बैन,
अधर उरहने सु दीबे काज फरके।
कन्धन ते कंचुकी भुजानि ते सु बाजूबद,
पोचन ते कंगन हरे ही हरे सरके॥

'बोलति न काहे' एरी, 'पूछे बिन बोलौं कहा',
पूछति हौ 'कहा भई भेद अधिकाई हे'।
कहै पदमाकर 'सु मारग के गये आये',
'साँची कहु मोसों कहाँ आज गई-आई हे'।
'गई-आई हौ तौ साँवर के पास' 'कौन काज',
'तेरे काज ल्यावन सु तेरी ही दुहाई है'।
'काहे ते न ल्याई फिरि मोहन बिहारी जू को',
'कैसे वाकों ल्याऊं!' 'जैसे वाको मन ल्याई है'॥

सौ दिन को मारग तहाँ को बेगि माँ गिबिदा,
प्यारी पदमाकर प्रभात राति बीते पर।
सो सुनि पियारी पिय गमन बराइबे को,
आँसुन अन्हाइ बैठी आसन सु तीते पर।
बालम बिदेस तुम जात हौ तो जाउ पर,
साँची कहि जाउ कब ऐहौ भौन रीते पर।
पहर के भीतर कै दो पहर भीतर ही,
तीसरे पहर कै धौ साँझ ही बितीते पर॥

रूप रचि गोपी को गोबिन्द गो तहाँई जहाँ,
कान्ह बनि बैठी कोऊ गोप की कुमारी है।
कहै पदमाकर यों उलट कहै को कहा,
कसकै कन्हैया कर मसकै जु प्यारी है।
नारी ते न होत नर नर ते न होत नारी,
बिधि के करे हू कहूँ काहू ना निहारी है।
काम करता की करतूत या निहारी जहाँ
नारी नर होत नर होत लख्यो नारी है॥

दोऊ अटान चढ़े पदमाकर,
देखैं दुहूँ को दुवौ छवि छाई।
त्यों ब्रजबाल गोपाल तहाँ
बनमाल तमालहि की दरशाई।
चंद्रमुखी चतुराई करी तब,
ऐसी कछू अपने मन भाई।
अचल ऐंचि उरोजन तै
नंदलाल को मालती-माल दिखाई॥

कूलन में केलि मे कछारन में कुंजन मे,
क्यारिन मे कलिन कलीन किलकन्त है।
कहे पदमाकर परागन में पौन हू में,
पानन में पीक में पलाशन पगन्त है।
द्वार मे दिशान में दुनी मे देश-देशन मे,
देखौ दीप-दीपन मे दिपत दिगन्त है।
बीथिन में ब्रज मे नबेलिन मे बेलिन में,
बनन में बागन में बगरो वसन्त है॥

औरै भाँति कुंजन में गुंजरत भौंर-भीर,
औरै डौर झौरन मे बौरन के ह्वै गये।
कहे पदमाकर सु औरै भाँति गलियान,
छलिया छबीले छैल औरै छवि छ्वै गये।
औरै भाँति विहग-समाज में अवाज होत,
ऐसे ऋतुराज के न आज दिन द्वै गये।
औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रंग,
औरै तन औरै मन औरै बन ह्वै गये॥

चालौ सुनि चदमुखी चित में सुचैन करि,
तित बन बागन घनेरे अलि घूमि रहे।
कहै पदमाकर मयूर मंजु नाचत है,
चाइ सों चकोरिन चकोर चूमि-चूमि रहे।

कदम अनार आम अगर अशोक थोक,
लतन समेत लोने-लोने लगि भूमि रहे ॥
फूलि रहे फलि रहे फैलि रहे फबि रहे,
झपि रहे झूलि रहे झुकि रहे झूमि रहे ॥

सॉझ के सलौने घन सबुज सुरङ्गन सों,
कैसे कै अनग अग-अंगनि सताउतो ।
कहै पदमाकर झकोर झिल्ली सोरन कों,
मोरन कों महत न कोऊ मन ल्याउतो ॥
काहू बिरही की कही मानि लेतो जो पै दई,
जग मै दई तो दयासागर कहाउतो ।
एरी बिधि बौरी गुनसार घनो होतो, जो पै
बिरह बनायो तौ न पावस बनाउतो ॥

लागत बसत के सु पाती लिखी प्रीतम कों,
प्यारी परबीन है हमारी सुधि आनबी ।
कहै पदमाकर इहॉ को यो हवाल,
बिरहानल को ज्वाल सो दवानल ते मानबी ।
ऊब को उसासन को पूरो परगास सो तौ,
निपट उसास पौन हू ते पहिचानबी ।
नैनन को ढंग सो अनंग-पिचकारिन तें,
गातन को रंग पीरे पातन तें जानबी ॥

चंचला चमंकै कहूँ ओरन ते चाह भरी,
चरज गई थीं फेर चरजन लागीं री ।
कहै पदमाकर लवंगन की लोनी लता,
लरज गई थीं फेर लरजन लागीं री ।
कैसे धरौं धीर बीर त्रिबिध समीरैं
तन तरज गई थीं फेर तरजन लागीं री ।
घुमड़ि घमंड घटा घन की घनेरी अबै,
गरज गई थीं फेरि गरजन लागीं री ॥

मल्लिकान मंजुल मलिन्द मतवारे मिले,
मन्द-मन्द मारुत मुहीम मन साकी है।
कहै पदमाकर त्यों नदन नदीन नित,
नागर नवेलिन की नजर नसा की है।
दौरत दरेरो देत दादुर सु दूंदै दीह,
दामिनी दमकत निशान में दसा की है।
बद्दलनि बुन्दनि बिलोकि बगुलान बाग,
बॅगला नवेलिन बहार बरसा की है॥

चार हूँ ओर ते पौन झकोर,
झकोरनि घोर घटा घहरानी।
ऐसे समय पदमाकर काहु की,
आवत पीत पटी फहरानी।
गुंज की माल गोपाल गरे,
ब्रजबाल बिलोकि थकी थहरानी।
नीरज ते कढ़ि नीर-नदी,
छबि छीजत छीरज पै छहरानी॥

लालन पै ताल पै तमालन पै मालन पै,
बृन्दावन बीथिन बहार बंशीबट पै।
कहै पदमाकर अखड रासमडल पै,
मंडित उमंडि महा कालिन्दी के तट पै।
क्षिति पर छान पर छाजत छतान पर,
ललित लतान पर लाड़िली के लट पै।
आई भली छाई यह शरद जुन्हाई, जेहि
पाई छबि आजु ही कन्हाई के मुकुट पै॥

खनक चुरीन की त्यों घनक मृदंगन की,
रुनुक-झुनुक सुर नूपुर के जाल को।
कहै पदमाकर त्यों बाँसुरी की धुनि मिलि,
रह्यो बँधि सरस सनाको एक ताल को।

देखत बनत पै न कहत बनै री कछू,
बिबिध बिलास यों हुलास गह ख्याल को ॥
चंद - छबि - रास चाँदनी को परगास,
राधिका को मद हास रास-मंडल गोपाल को ॥

फाग के भीर अभीरन मै गहि,
गोबिंदै लै गई भीतर गोरी ॥
भाई करी मनकी पदमाकर,
ऊपर नाय अबीर की झोरी ॥
छीनि पितंबर कंवर तें सु,
बिदा दई मीड़ि कपोलन रोरी ।
नैन नचाय कही मुराकाय,
लला फिरि आइयो खेलन होरी ॥

गोकुल मे गोपिन गोबिन्द संग खेली फाग,
राति भरी आलस में ऐसी छबि छलकै ।
देह भरी आलस कपोल रस रोरी भरे,
नींद भरे नयन कछूक जपैं जलकै ।
लाली भरे अधर बहाली भरे मुखबर,
कबि पदमाकर बिलोकैं कौन सलकै ।
भाग भरे लाल औ सुहाग भरे सब अंग,
पीक-भरी पलकै अबीर भरी अलकैं ॥

अधखुली कंचुकी उरोज अध-आधे खुले,
अधखुले बेस नख-रेखन की झलकैं ।
कहै पदमाकर नवीन अध-नीवी खुली,
अधखुले छहरि छराके छोर छलकैं ।
भोर जगि प्यारी अध-ऊरध इतै की ओर,
झाँकी झिखि झिरखि उघारि अध पलकैं ।
आँखैं अधखुली अधखुली खिरकी है खुली,
अधखुले आनन पै अधखुली अलकैं ॥

एकै संग धाए नदलाल औ गुलाल दोऊ,
दृगनि गये जु भरि आनँद मढै नहीं।
धोय धोय हारी पदमाकर तिहारी सौंह,
अब तो उपाय एकौ चित्त पै चढै नहीं।
कैसी करों कहाँ जाउ कासों कहौ कौन सुनै,
कोऊ तो निकासो जा सों दरद बढ़ै नहीं।
ये री मेरी बीर जैसे तैसे इन आँखिन ते,
कढ़िगो अबीर पै अहीर को कढै नहीं॥

फागुन मे कागुन बिचारि न दिखाई देत,
एती बेर लाई उन कानन मे नाइ आव।
कहे पदमाकर हितू जो है हमारी तौ,
हमारे कहै बीर वहि धाम लगि धाइ आव।
जोरि जो धरी है बेदरद दुआरे होरी,
मेरी बिरहागि की उलूकनि लौ लाइ आव।
एरी इन नयनन के नीर मे अबीर घोरि,
बोरि पिचकारी चित्तचोर पै चलाइ आव॥

भाल पै लाल गुलाल गुलाब सों,
गेरि गरे गजरा अलबेलो।
यों बनि बानिक सों पदमाकर,
आये जु खेलन फाग तौ खेलो।
पै इक या छबि देखिबे के लिये,
मो बिनती कै न झोरिन झेलो।
राउर रंग रंगी अंखियान में,
ए बलबीर अबीर न मेलो॥

—-*॥०॥*—

होत प्रभात अन्हायवे काज,
सखीन के साथ तहाँ पग धारे।
मंजन कै पहिरे पट सुन्दर,
भूषन अगन अंग सँवारे।
तीर ह्वै नीर भरी गगरी,
सुबिलोकि नए तहँ कौतुक भारे।
आजु सरोवर मे सजनी जल,
भीतर पकज फूल निहारे॥

चाँदनी महल फैल्यो चाँदनी फरस,
सेज-चाँदनी बिछाय छवि चाँदनी रितै रही।
बैठी सजि सुन्दरि सहेलिनि समाज वीच,
वदन पै चारुता चिराक की बितै रही।
कहै परताप आये मोहन रँगीले श्याम,
नख-सिख देखि करि आनन छितै रही।
सुघर बिचारि कलानिधि को निहारि,
मनुहारि करि फेरि मुख पीतम चितै रही॥

कोटि उपाय किये हिय को,
रचि बातन सों न सनेह दुर्यो परै।
सूधे सुभाय बिना बनितान को,
क्यों करि कै मन मान मुर्यो परै।
चाखिये तो बिख भाखिये साँच,
जो राखिये नेम तो प्रेम पुर्यो परै।
आजु प्रभात समै लखिये,
अरबिन्दन ते मकरन्द घुर्यो परै॥

खेल न खेलिये ऐसो भटू,
सु परोसिनि कोऊ कहूँ लखि लैहै।
मानहु ना बरजी हमरी,
अब काहै को कोऊ सिखावन दैहै।

नद कुमार महा सुकुमार,
बिचारि के फेरि हिये पछितैहे।
घालिये ना इन फूलन की पँखुरी
कहूँ अगनि में गड़ि जैहे॥

ननद जिठानी अनखानी रहै आठौ जाम,
बरबस बातन बनाय आय अरतीं।
रचि-रचि बचन अलीक बहु भाँतिन के,
करि-करि अनख पिया के कान भरतीं।
कहै परताप कैसे बसिये निकसिये क्यों,
मौन गहि रहिये तऊ न नेक टरतीं।
निज निज मदिर मे साँझ ते सवेरे दीप,
मेरे केलिमंदिर मे दीपकौ न धरतीं॥

रग घने पति-प्रेम सने,
सब रैनि गने मन मैन हिलोरन।
अगनि मोरति भोर उठी,
छिति पूरति अंग-सुगंध झकोरन।
रूप अनूप निहारि-निहारि,
गुमान जनाय कह्यो दृग-कोरन।
नन्दकिशोर अहो चित-चोर,
न जाहुँ मै न्हान सरोवर ओरन॥

कौन सुभाव री तेरो पर्यो,
नहि भूषन चित्र विचित्र बनावै।
चन्दन चूर कपूर मिलै,
घिसि के अँगराग न अग लगावै।
तोसों दुरावति हौं न कछू,
जिहि तै न सुहागिल सौति कहावै।
बेलि चमेलिनि कौं तजि कै,
अलि काहे कों कंज-कली नित ल्यावै॥

कानि करै गुरु लोगन की न,
सखीन की सीख नहीं मन आवति।
गेंड भरी अँगिराति खरी कत,
घूँघट में नये नैन नचावति।
मंजन कै द्दग अजन आँजति,
अग-अनग उमंग बढ़ावति।
कौन सुभाव री तेरो पर्यो,
खिन आँगन मे खिन पौरि मे आवति ॥

आजु सखी ननदी करि प्यार,
विभूषन भूषन दै पठए हैं।
मगल - मूल बनाय विचित्र,
सुफूल दुकूल निहारि नए है।
आँनद की सुघरी उघरी,
सिगरे मन वाँछित काज भए है।
बूझति तो कहँ वासर के,
कहुरी अब कैतिक जाम गए है ॥

मनिमय मंदिर के आँगन अनौखी बाल,
बैठी गुरु लोगन मे सोभा सरसाइ कै।
गरक गुलाब नीर, अरक उसीरन के,
राखे उन औरन सुगध बगराइ कै।
कहै परताप पिय नैन के इसारतनि,
सारति जनाई मुख मृदु मुसक्याइ कै।
बोली नहि बोल कछु सुन्दरि सुजान रही,
पुण्डरीक - सुमन सोहायौ दिखराइ कै ॥

लै करि सुबास बारि विमल सुबासित कै,
मंजन कियौ है तन अधिक उमाहे तै।
केसर, कपूर, कसतूरी औ अतर लै कै,
अंगराग, अंगन लगायौ चित्त चाहे तै।

कहे परताप साजि सकल सिंगार तन,
भूषन - विभूषन सकल अवगाहे तै।
कच की निहारति हा नैननि सों कंज-नैनि,
बेसरि बनै न आज पहरति काहे तै॥

अङ्ग - अङ्ग भूषन - विभूषन बिरचि,
जोति जोबन - जवाहिर की जाहिर जगाई तै।
चहचहे चोबा चारु चदन अरगजा औ,
अङ्गराग हेत कल केसर मँगाई तै।
कहे परताप दुति देह की दुरङ्ग होत,
सुरंग कुसुंभी ऐसी चुनरि रँगाई तै।
रीझिवारी एरी सुनि सुन्दरि सुजान वारी,
भाल क्यों न बैदी मृगमद की लगाई तै॥

केलि के रङ्ग प्रसङ्गन में,
निशि पीतम सङ्ग सबै निशि जागी।
भोर भये अरखाति जम्हाति,
उठी अँगराति बिथा उर पागी।
बोली न बोल कछू सखियान सों,
नीर भरें अँखिया बड़भागी।
सुन्दरि बैठि अगार के द्वार,
सुनीर निचोल निचोवन लागी॥

मोचति ही नैनजल रैन दिन सोचति ही,
समुझि सकोचन सों मौन मुख धरिबो।
छूटिगो सुमन संग छूटिगो सहेलिन को,
भूलि गयो औरै बनितान को निदरिबो।
कहै परताप कौन जानत पराई पीर,
एरी मेरी बीर रह्यो जी को एक जरिबो।
का सों कहौं ही को दुख प्यारे निज पीको मोहि—
लागत न नीको नित मिलिबो बिछुरिबो॥

कहाँ जैये कौन भाँति कैसे समुझैये मन,
काहि दरसैये कहि काज निज लेखे को।
आप मनमानै निज हित सोई जानै सब,
कोऊ नहि जानै प्रेम पूरन परेखे को।
कहै परताप कैसे चित्त बहरैयें,
सुख पैये किमि चित्त माहि एक हू निमेखे को।
झूँठो सब जानि पर्यो कह्यो मुख बेननि को,
साँचो सब जानि पर्यो नैननि के देखे को॥

बीति गयी सिगरी रजनी,
चहुँ ओर ते फैलि गयी नभ लाली।
कोक-वियोग मिट्यो, परिपूर—
उदै भयो सूर महा छबि साली।
बोलि उठी बन बागन मे,
अनुरागन सों चहुधा चटकाली।
सुन्दर स्वच्छ सुगन्ध सन्यो—
मकरन्द झरै अरबिन्द तें आली॥

नाहक चित्त उदास करैं,
मुख मौन धरैं मन ही मन सूखतीं।
प्रेम-प्रसंगन को तजि कै,
निज अंगन में नहि भूषन भूषतीं।
तापन सों तचती बिरमै,
बिन काज बृथा मन माहि बिदूखतीं।
का कहिये इन सों सजनी,
मकरन्दहि लेत मलिन्दहि दूखतीं॥

तड़पै तड़िता चहुँ ओरन तें,
छिति छाई समीरन की लहरैं।
मदमाते महा गिरिशृंगन पै,
गन मंजु मयूरन के कहरैं।

इनकी करनी बरनी न परै,
मगरूर गुमानन सों गहरैं।
घन ये नभ-मडल मे छहरैं,
घहरैं कहूँ जाय, कहूं ठहरैं॥

चचल चपला चारु चमकत चारों ओर,
भूमि - भूमि धुरवा धरनि परसत है।
सीतल समीर लगै दुखद वियोगिन्ह,
संयोगिन्ह - समाज सुखसाज सरसत है।
कहै परताप अति निबिड़ अँधेरी माँह,
मारग चलत नाहि नेकु दरसत है।
झुमड़ि झलानि चहुं कोद तें उमडि आज,
धाराधर धारन अपार बरसत है॥

घोर घटा घहरैं नभ-मंडल,
तैसिय दामिनि की दुति जागत।
धावत धूरि भरें धुरवा,
गिरि - शृंगन पै अनुरागत।
फैली नयी मुरवा हरियाई निहारि,
संजोगिनि के हियरे अनुरागत।
रीति नई रितु पावस में,
ब्रजराज लखें रितुराज सो लागत॥

मोतिन हार लसै बकुला,
घन मे चकवारन की छबि छाई।
इन्द्र - बधू बगरीं बन में,
तन चूनरी चारु मनो पहिराई।
दामिनि की दुति यों दरसै,
सु भरी घनी बन्दन माग सुहाई।
आजु पिया बनि बानक सों,
सु नवीन बनी बरषा बनि आई॥

आई रितु पावस प्रताप घनघोर भारी,
सघन हरी री बन मंडन बढ़ाए री।
कोकिल कपोत सुक चातक चकोर मोर,
ठौर ठौर कुंजन मे पछी सब छाए री।
जमुना के कूल, औ कदंबन की डारन पै,
चारों ओर घोर सोर मोरन मचाए री।
एरी मेरी बीर! अब कैसे कै मै धीर धरौ,
आए घन स्याम, घनस्याम नहि आए री॥

स्वेत स्वेत बक के निसान फहरान लागे,
ऐंचि ऐंचि चपल कृपान चमकाए री।
घहर भुसुंडी को अवाज-सी करन लागे,
बुंदन के झरनन झीने झरि लाए री।
भनत प्रताप रतिनायक नरेस जू ने,
धीर गढ़ तोरिबे को पावस पठाए री।
ए री मेरी बीर! अब कैसे कै मै धीर धरौ,
आए घन स्याम, घनस्याम नहि आए री॥

बदली दुगुन दुति कदली कदम्बन की,
अदली अतन कर सदली कतन मे।
बिटपन डोलै करि बिबिधि कलोलै,
बोलै कीर कुल कोकिल गुमान भरे मन में।
कहै परताप सब लखियत औरै और,
गति को गुमान गजराजन के गन मे।
सुखनि अतूलै फिरैं प्रेम-रस भूलै फिरैं,
फूले फिरैं आज मृगराज मधुबन मे॥

पल्लव फूल दुकूल रचे,
दृग अञ्जन भृङ्ग सरूप सुहायो।
केसर अङ्ग पराग लसै,
मृदु हास त्यों कुन्दकली छबि छायो।

२२६

साजि गुलाब की सेज रची,
कल कोकिल कंठ सुबोल सुनायो।
जाय इकन्त ह्वै कन्त निहारि,
बनाय बसंत नयो दिखरायो॥

—:*||०||*:—

ग्वाल

नखशिख रूप की झलाझली है सघनाई,
जघ केल नाभि कूप आवै दरशन मै।
हाथ मै न अचै कटि केहरी दुबीच तहाँ,
उदर—सरोवर अपार है तरन मै।
'ग्वाल' कवि कुच-कोक दुरे कर बासन तें,
नैन ये न मृग भरैं चौकड़ी चलन मै।
जो पै तुम्हें सौख है सिकार ही सों प्यारे लाल,
तौ पै क्यों न खेलौ तरुनी के तन-बन मै॥

बाल-ताल तीर मै तमाल की तराईं तरैं,
तन तनजेब सों दुरावै गुन गाँसे मै।
न्हाय के नवेली कढ़ी नाइ कै नुकीले नैन,
चैन की चलन मढ़ी मैन-प्रेम-पासे मै।
'ग्वाल' कवि ऊंचे वे उरोज की अगारिनि पै,
लिपटी अलक ताके ललित तमासे मै।
कंचन के कलस सुधा के भरे जानि,
ससि खैचि रह्यौ मानो नली रेसम के फाँसे में॥

बैठी सास पास चंदबदनी बिकास रास,
देखि दुति दंतन की दाड़िम दरकि परे।
न्योति गई आय कें जसोमति की आली तहां,
औचक अरुन ओंठ प्यरी के फरकि परे।
'ग्वाल' कवि तरकि परे री कंचुकी के बंद,
अधिक उमंगन तै अंगहू मरकि परे।
नीर कन नैनन तें ढरकि परे री मंजु,
मानौ दल कंज के तै मुकता सरकि परे॥

गरकि - गरकि प्रेम पारी परजंक पर,
घरकि - घरकि हिय हौल सो भभरि जात।
ढरकि-ढरकि जुग जघन जुटन देइ,
तरकि-तरकि बंद कंचुकी के करि जात।
'ग्वाल' कवि अरकि-अरकि पिय थामै तऊ,
थरकि-थरकि अंग पारे लों बिखरि जात।
सरकि-सरकि जाय सेज पै सरोजनैनी,
फरकि-फरकि केलि फंद ते उछरि जात॥

मीन मृग खंजन खिसान-भरे मैन बान,
अधिक गिलान-भरे कंज कल ताल के।
राधिका छबीली की छहर छबि-छाक भरे,
छेलता के छोर भरे भरे छबि-जाल के।
'ग्वाल' कवि आन-भरे, सान-भरे, स्यान भर,
स्यान-भरे कछु अलसान-भरे माल के।
लाज-भरे, लाग-भरे, लोभ-भरे, लाभ-भरे,
लाली-भरे लाड़-भरे लोचन है लाल के॥

कहिबे कौ हम तो बियोगिनि विदित नित,
रे पर सँजोग हू ते सुमति सुधारी है।
ऊधो तोहिं वह इहा कहूँ न लखाई पर्यो,
साँचे ही अलख तोहि भयो गिरधारी है।
'ग्वाल' कवि ह्यां तौ वही जाम-जाम धाम-धाम,
मूरति मनोहर न नैको होत न्यारी है।
कानन मै कानन मै प्रानन मै आखिन मै,
अंगन मे रोम-रोम रसिक-बिहारी है॥

सामन की तीजै पिय भीजै बारि-बूंदन सौं,
अंग-अंग ओढ़नी सुरंग-रंग बोरे की।
गावत मलारें सुनि मुख की पुकारें जोर,
झिल्ली झनकारे घन करें सहजोरे की।

'ग्वाल' कवि करत बिहार है उदारता में,
पौन हूं चलत जहाँ सीतल झकोरे की।
घमक घटान की चमक चपलान की,
सु झमक जरी की तामै रमक हिडोरे की ॥

मान की न बेर सनमान की है बेर प्यारी,
मान कह्यो मेरो झुक झकि तौ झमाके सों।
लहलही बेलें डार-डार पर खेले हेलें,
मेले बाह बाले लालै छबि के छमाके सों।
'ग्वाल' कवि बूंदें दूंदें रूदे बिरहीन हीन,
नेह की न मूंदे ये न मूंदे है गमाके सों।
घूम आये झूम आये लूम आये भूमि आये,
चूमि चूमि आये घन चचलें चमाके सों ॥

सीरे सीरे नीर भये नदिन के तीर तीर,
सीरे भये चीर धरा सीरी सब परि गई।
दसहू दिशा तें दिन रात लागी कुहरान,
पौन सरसान साफ तीर सी निकरि गई।
'ग्वाल' कवि ऐसे या हिमत मे न आये कंत,
सो तुम्हे न दोष सलसंत औरैं ढरि गई।
सूख गये फूल भौर झौर उड़ि गये मानों
काम की कमान की कमान सी उतरि गई ॥

आई एक ओर तें अलीन लै किशोरी गोरी,
आयो एक ओर ते किशोर वाम हाल पै।
भाजि चल्यौ छैल छरी छोड़ पै, छबीलन ने—
छरी को उठाय धाय मारी उर माल पै।
'ग्वाल' कवि हो हो कहि चोर कहि चेरो कहि,
बीच मै नचायौ थेई तत् थेई ताल पै।
ताल पै तमाल पै गुलाल उड़ि छायो ऐसो,
भयो एक और नँदलाल नँदलाल पै ॥

चन्द्रशेखर बाजपेयी—"शेखर"

थोरी-थोरी बैस की किसोरी तन गोरी-गोरी,
भोरी-भोरी बातन सों हियरो हरति है।
केतकी तै सरस कही न परै कुन्दन-सी,
चंचला तै चौगुनी मरीचिका धरति है।
जगर-मगर होति इन्दु-बदनी की दुति,
सेखर अबास कों प्रकासित करति है।
मानो मॅज्यो मंजु मैन-मुकर-महल तामैं,
अमल अधूम महताब-सी बरति है॥

आनन अनूप कर चरन सरोज ओज,
कुचन कटाछन कपूर तरसत है।
जपा-की-सी अधर गुलाब-सी चिबुक चारु,
कुन्द-की-सी रदन रदन दरसत है।
मंजु मृगमद-सी सरीर सब सुन्दरी के,
केतकी के पत्र की प्रभा को परसत है।
रूप-गुन - जोबन अनूप गति-दूतिका सी,
अङ्ग अङ्ग अमित सुगन्ध सरसत है॥

रूप को - सो सागर उजागर अनूप सोहै,
जोहै दृग दूरि हीं ते करन बसी को है।
मोदभरो उदित अमंद दुति आठो जाम,
सौतिन को करत सरोजमुख फीको है।
सेखर सरस रस पानिप अमोल डोल,
मंजु मन खंजन मलिन्द बर जी को है।
चन्द हू ते नीको मनमोहन धनी को,
सबही को सुखदैन मुख-चन्द भावती को है॥

गोरे-गोरे गोल अंग अमल अमोल रंग,
चोरे लेत चित रस बोरे परसत है।
आबदार लसत गुलाब के सुमन सुचि,
बिसद बँधूक ज्यों सुगन्ध बरसत है।
सेखर अरुन रुचि आसन रुचिर राजें,
जोबन-नरेस के जलूस सरसत है।
नैन सुखदैन छबि-ऐन मृगनैनी तेरे,
मैन के से मुकुर कपोल दरसत हैं॥

सुन्दर सरस सोहै मोहै दरसत मन,
परसि प्रमोद को प्रकास होत तन मै।
बैठो उड़ि अम्बुज के ऊपर अनूप अलि,
चलत न चित्त चुभ्यो सौरभ सघन मै।
सेखर सुरुचि रस की-सी छींट छबि देत,
छैल को सुमन आयो सोभा के सदन मैं।
भावती के बदन बिराजै स्यामबिन्दु मनो,
गरक गोविन्द भो गुलाब के सुमन मै॥

प्रात प्रभाकर की रुचि रंजित,
पंकज की पखुरी छबि-जाली।
कै अनुराग प्रभा प्रगटी सब,
रागिनी रागन की परनाली।
सेखर नैनन कों सुखदेन किधों
रति की रुचि नैनन घाली।
पूरित राग रजोगुन-सी
मनभावती के मुख पान की लाली॥

सीलभरे सरस सरोज छबि छीने लेत,
मीन-मृग-खज-मान-गंजन मरोरदार।
नेह सरसीले अरसीले भाव-दरसीले,
परसीले परम रसीले रंग बोरदार।

चोरदार चित के चलाक हित जोरदार,
कोरदार सेखर अरुन बर डोरदार ।
दौरदार दीरघ दिमाकभरे, प्रानप्यारी,
ताकि दै री तनक तिहारे नैन तोरदार ॥

कारे सटकारे चारु चीकने चमकदार,
चित चकचौंधत निहारि चख थहरैं ।
कोमल बिमल रुचि सरस रुचिर राजै,
सहज सुभायन सुगन्धन की लहरै ।
सेखर छजत छूटे केस कजलोचनी के,
गोरे-गोरे गातन अनूप छबि छहरैं ।
दच्छ बिधि प्रगट प्रतच्छ करि दीने मनो,
सावन के स्वच्छ उभै पच्छ एक ठहरैं ॥

कैधौ धर्यो आपही उतारि रङ्गभूमि तामै,
मैन की कमान को अनूप गुन-ओज सों ।
कैधौ मिल्यो मन मे उमाह करि राहु ताहि,
लाइ लीन्यो उर सों मयंक मन मौज सों ।
रेख तम-सार की, कुमार चारु पन्नगी को
पीवत सुधा को सार सेखर सरोज सों ।
गोरे मुख भावती के अलक अरूभी किधौं,
छलकै सिंगाररस-धार हेम हौज सों ॥

पन्नन के पात मे प्रबालन की पाँति ता पै,
पदिक की पाँति की प्रभा-सी अभिलाषी है ।
कैधों कालिंदी में बह्यौ बानी को प्रबाह चाहि,
ता में भली कुन्द की कली-सी गहि नाखी है ।
पाटी पारि प्यारी की सँवारि माँग सेंदुर सों,
तामै मंजु मुकतावली यों रचि राखी है ।
तमोगुन रासि में रजोगुन की रेख मानो,
तामै लिखो सुरुचि सतोगुन की साखी है ॥

भूतन की प्रीति है कि नीति अविवेकिन की,
कायर की जीत है की भीति असिधारी की।
गनिका को नेह किधौ दामिनि की देह कैधों,
कामिनी को मान बानि काम-उर-बारी की।
सेखर पलास के प्रसून को सुगन्ध कैधौ,
सील कुलटानि को कि सत्य व्यभिचारी की।
पाहन को पंक है कि अक को अकार किधों,
रंकन को दान है कि लक प्रानप्यरी की॥

जावक दिये ते और अरुन लखे मै,
ये तो सहज स्वभाव हीं अलौकिक अरुन है।
कोमल बिमल मजु कंज-से कहत नीके,
फीके से लगत मुख उपमा बरन है।
पल्लव पुनीत टटके से बटके से कहै,
सेखर न तेऊ रस-रंचक धरन है।
रसभरे रंगभरे सरस उमंगभरे,
भावती के मृदुल मनोहर चरन है॥

सहज सुभाइन सों भामती सहेलिन मे,
सोहत सरूप रासि कंचन-सो गात है।
सकल सिगार साज, सहित उमंग भरी,
जोबन-तरंग सील-सोभा सरसात है।
गुरुजन गेह के सोवाय कै सिधारी तहॉ,
बैठो जहॅ सेखर पियारो सुखदात है।
बाढ़ौ अति प्रेम को पयोनिधि अथाह,
तामें लाज-भरो मदन-जहाज चलो जात है॥

प्रान-प्यारी आलिनि, प्रधान प्यारी प्रीतम की,
ठानि न्यारी मिलन निकुंज-गेह मन में।
साज सोहै सील में समाज सोहै सजी संग,
लाज सोहै सरस, बिलास सोहै तन मे।

आस-भरी सेखर हुलास भरी देखी तहाँ,
सेज परी सूनी ह्वै अचेत परी छन मे।
नीर छायो नैनन, अधीर छायो बेनन मे,
पीर छायी अंगन, समीर छायो बन मे॥

रस मे बिबस ह्वै के सेखर बिताई रात,
लागे रति-चिन्ह, चारु अंगन अछेह सों।
परत न सूधे पग, आलस-बलित बेस,
आवत बिलोकि और भामतो के गेह सों।
आदर सों उठि कै सहेलिन सों आगे जाइ,
लागे उर दागन दुराए निज देह सों।
धूर-भरे प्रीतम के चरन सरोज प्यारी
पोंछे निज अंचल के छोरन सनेह सों॥

अरुन उदोत आयो करिकै बिहार हेरि,
उपट्यौ हिए मे हार, हारे रंग रति के।
मान ठानि बैठी, तानि भृकुटी कमान चारु,
लाल भए लोचन लजीले बंक गति के।
सेखर समीप जाइ सकुचि सँभारे स्याम,
रंग भरे बसन लली के प्रीति अति के।
उमगि अनंद अनुरागी अति प्रेम भरी,
लागी उर ललकि सलोनी प्रानपति के॥

—:*॥०॥*:—

पजनेस

नवला सरूप रूप रावरे रुचिर रूप,
रचना विरंचि कीन सकुचन लागी है।
भन पजनेस लोल लोयन की लीकै गोल,
गुलफ गोराई लाज सकुचन लागी है।
सुन्दर सुजान सुखदान प्रीत प्रीतम की,
एकौ ना परेख अबै सकुचन लागी है।
औचक उचन लागी कचुकी रुचन लागी,
सकुचन लागी आली सकुचन लागी है॥

चितवत जाकी ओर चख चकिचोंधे कोंधे,
भनि पजनेस भानु - किरन खरी-सी है।
छबि प्रतिबिम्ब छूट्यो छित ह्वै छपाकर ते,
छाजत छबीली राजै कनक - छरी-सी है।
कीन्ह्यो डर लुरुक गुलाब को प्रसून ग्रास,
झुकि-झुकि झूमि-झूमि झाँकत परी-सी है।
आनन अमल अरविन्द ते अमन्द अति,
अद्भुत अभूत आभा उफनि परी-सी है॥

कोटि मारतंड चंड मंडित मुकुट क्रीट,
कुंडल कलित अलकावली भुजै गई।
पजन प्रतच्छ मुकताहल त्रिभग रंग,
रंगित जरीकी पीति पटकन लै गई।
झलक झलामली सी झाँकी-सी झपाके चित्त,
चित्त ते निकरि मेरे द्दग मै हितै गई।
द्दगन ते दौरि मन, मन ते तमाम तन,
तन ते ततच्छ रोम-रोम छबि छै गई॥

कैधों भोर पर्यो है प्रिया के रूप-सागर मे,
कैधों तन पजनेस भासत गोपाल को।
कैधों शशि-अंक मै कलंक शशिता के संग,
कैधों मुख-पंकज पै बैठो अलि-बालको।
कैधौ शुक्लपक्ष के समीप परिवा को जान,
कैधों ऋतुराज आज पायो जस काल को।
दरकि सुमेर फेरि पूरन खसौ ना सीधो,
मोहनी को टोना कै डिठौना बाल-भाल को॥

संपुट सरोज कैधों सोभा के सरोवर में,
लसत सिगार के निशान अधिकारी कें।
कवि पजनेस लोल चित्त-वित्त चोरिबे को,
चोर इक ठौर नारि पीव वर कारी के।
मदिर मनोज के ललित कुम्भ कंचन के,
ललित फलित कैधों श्रीफल बिहारी के।
उरज उठौना चक्रवाहन के छौना कैधों,
मदन-खिलौना ई सलौना प्रान-प्यारी के॥

किरनि सी कढ़ि आई अंगना उघरि गात,
कवि पजनेस छैल छिति पै छहार गो।
उझकि झपाक मुख फेरि प्यारे रुख ओर,
हेरि हरि हरखि हिमंचल पै अरि गो।
आधो मुख मलत अबीर ते मुकेस हाय,
नखरेख-चिह्नित उरोजन पै झरि गो।
मानो अर्ध-चन्द्र को प्रकास अर्ध-चन्द्रिका पै,
चन्द्र-चूर ह्वै कै चन्द्रचूर पै बगरिगो॥

चौंकि चकी उझकी सी छकी जकी,
छीजि निरीछनि लागी छपावन।
पूरी विथा विधि आधी उसास लै,
चेत कियो चित चेत सोहावन।

यों मन में कहि कै पजनेस,
हमै उन्हैं केतो चहैं मनभावन ।
हा सुथरी पुतरी सी परी,
उतरी चुरी चूमि लगी चटकावन ॥

प्यारी रतिरंग सफजंग जीति बैठी प्रात,
अग सुभटन को इनाम बकसत है।
आँगी दई कुचन भुजन बाजूबन्द दई,
नूपुर पगन बेनी भाल सरसत है।
कवि पजनेस नैन अजन अधर बीरा,
जघन दुकूल कर्नफूल बरसत है।
पीछे परे जान तान मोहन कटाछन तै
बार-बार बन्धन तै बारन कसत है ॥

बिधु कैसी कला बधू गैलन मै,
गसी ठाढ़ो गोपाल जहाँ जुरिगो।
पजनेस प्रभाभरी भामिनि पै,
घने फाग के फैलनि सों फुरिगो।
मुरकी रुकी बंक बिलोकत लाल
गुलाल मै बेंदा सबै पुरिगो।
दिग में दरस्यो है दिनेस मनो,
दिगदाह की दीपति मे दुरिगो ॥

—*॥०॥*—

द्विजदेव

डोलि रहे बिकसे तरु एकै,
सु एकै रहे है नवाइ कै सीसहि ।
त्यौ 'द्विजदेव' मरंद के व्याज सों,
एके अनद के आँसू बरीसहि ।
कौन कहै उपमा तिनकी,
जे लहैई सबै विधि संपति दीसहि ।
तैसेई ह्वै अनुराग भरे,
कर-पल्लव जोरि कै एकै असीसहि ॥

औरैं भाँति कोकिल, चकोर ठौर-ठौर बोले,
औरैं भाँति सबद पपीहन के बै गए ।
औरैं भाँति पल्लव लिए है बृन्द-बृन्द तरु,
औरैं छवि-पुंज कुंज-कुंजन उनै गए ।
औरैं भाँति सीतल, सुगंध मंद डोलैं पौन,
'द्विजदेव' देखत न ऐसैं पल द्वै गए ।
औरैं रति, औरैं रंग, औरैं साज औरैं संग,
औरैं बन, औरैं छन, औरैं मन ह्वै गए ॥

सुर ही के भार सूधे-सबद सु कीरन के,
मंदिरन त्यागि करैं अनत कहूँ न गौन ।
'द्विजदेव' त्यौं हीं मधु-भारन अपारन सौं,
नैकु झुकि-झूमि रहे मोंगरे मरुअदौन ।
खोलि इन नैननि निहारौं-तौं-निहारौ कहा,
सुखमा अभूत छाइ रही प्रति भौनै भौन ।
चाँदनी के भारन दिखात उनयौ सौ चंद,
गंध ही के भारन बहत मंद-मंद पौन ॥

गुंजरन लागी भौर-भीरें केलिकुंजन मे,
क्वैलिया के मुख तै कुहूकनि कढ़ै लगी।
'द्विजदेव' तैसैं कछु गहब गुलाबन तै,
चहकि चहूँधाँ चटकाहट बढ़ै लगी।
लाग्यौ सरसावन मनोज निज ओज,
रति बिरही सतावन की बतियाँ गढ़ै लगी।
होन लागी प्रीति-रीति बहुरि नई सी,
नव-नेह उनई सी मति मोह सौ मढ़ै लगी॥

होते हरे नव अकुर की छबि,
छार कछारन मे अनियारी।
त्यों 'द्विजदेव' कदबन गुच्छ,
नए-ई-नए उनए सुखकारी।
कीजिये बेगि सनाथ उन्हे,
चलिऐ बन-कुंजन कुंजबिहारी।
पावस-काल के मेघ नए,
नव नेह नई बृषभानु कुमारी॥

चूनरी सुरंग सजि सोही अग अंगनि,
उमगनि अनंग-अंगना लौं उमहति है।
झुकि झुकि झाँकति झरोखन तै कारी घटा,
चौहरे अटा पै बिज्जु-छटा-सी जगति है।
'द्विजदेव' सुनि सुनि सबद पपीहरा के,
पुनि पुनि-आँनद पियूष में पगति है।
चावन-चुभी-सीं मन-भावन के अक तिन्हैं,
सावन की बूंदै ए सुहावनी लगति है॥

गावौ किन कोकिल, बजावौ किन बैनु-बेनु,
नचौ किन झूँमरि लतागन बने ठने।
फैकि फैकि मारौ किन निज कर-पल्लव सौ,
ललित लवंग फूल पातन घने घने।

फूल-माल धारौ किन, सौरभ सँवारौ किन,
एहो परिचारक समीर सुख सों सने।
मौर-धरि बैठौ किन चतुर रसाल! आज,
आवत बसत ऋतुराज तुम्हे देखने॥

सॉवन के दिवस सुहावने सलौने स्याम,
जीति रति समर बिराजे स्यामा-स्याम सग।
'द्विजदेव' की सौ तन उघटि चॅहूधॉ रह्यौ,
चुंबन कौ चहल चुचात चूनरी कौ रंग।
पीत पट ताते हरखाने लपटाने लख,
उमहि-उमहि घनस्याम-दामिनी कौ ढंग।
रति-रन मीजे पै न मेन-मद छीजे, अति
रस-बस भीजे तन पुलकि पसीजे अंग॥

फेरि वैसै सुरभि-समीर सरसान लागे,
फेरि वैसै बेलि मधु-भारन उनै गई।
फेरि वैसै चाह कै चकोर चहुँ बोले फेरि,
फेरि वैसी क्वैलिया की कूकनि चहूँ भई।
'द्विजदेव' फेरि वैसै गुनी भोर-भीरैं फेरि,
वैसौ ही समय आयौ आनँद सुधामयी।
फेरि वैसै अंगन उमंग अधिकाने,
फेरि, वैसै ही कछूक मति मेरी भोरी ह्वै गई॥

बहि हारे सीतल सुगंधित समीर धीर,
कहि हारे कोकिल सँदेसे पँच बान के।
साधन अगाधन बिसानी ना कछूक जोपै,
कौन गनैं भेद पग-सीस-दान-मान के।
'द्विजदेव' की सौं कछु मित्र के बिछोहै-काल,
देखि सकुचॉने दृग-अंबुज अयान के।
भाजौई भमरि सो तो मान-मधुकर आली,
आज ब्याज-कज्जल-कलित-अँसुवान के॥

धूँधुरित धूरि धुरवॉन की सु छाई नभ,
जलधर - धारा धरा परसन लागी री।
'द्विजदेव' हरी-भरी ललित कछारैं त्यौं,
कदंबन की डारैं रस बरसन लागी री।
कालि ही तै देखि बन - बेलिन की बनक,
नवेलिन की मति अति - अरसन लागी री।
बेगि लिखि पाती वा सँघाती मनमोहन कौ,
पावस अवाती ब्रज - दरसन लागी री॥

उँमड़ि घुँमडि घन छडत अखड धार,
अति ही प्रचड पौन भूँकन बहतु है।
'द्विजदेव' सपा कौ कुलाहल चहूँधाँ नभ,
सैल तै जलाहल कौ जोग उमहतु है।
बुधि बल थाकौ सोई प्रलैनिसा कौ मेघ,
जानि करि सूनौ बैर आपनौ गहतु है।
ए हो गिरिधारी! राखौ, सरन तिहारी अब,
फेरि इहि बारी ब्रज बूडन चहतु है॥

'द्विजदेव' जू नैक न मानी तबै,
बिनती करी बार हजारन की।
इक माखनचोर के जोर लई,
छबि-छीनि सिखी पखवारन की।
लहि ऊँची उसास बिसूरै कहा,
लखि सैन घनी घन - भारन की।
दिन द्वैक में पैहै सकेलि सबै,
फल बेलि बई जो अँगारन की॥

घहरि-घहरि घन! सघन चहूँधाँ घेरि,
छहरि-छहरि विष बूँद बरसावै ना।
द्विजदेव' की सौं अब चूकि मत दाँव अरे,
पातकी पपीहा तू पिया की धुनि गावै ना।

फेरि ऐसौ औसर न ऐहै तेरे हाथ अरे,
मटकि मटकि मोर! सोर तू मचावै ना।
हौ तौ बिन-प्रान, प्रान चाहति तज्यौई अब,
कत नभचंद! तू अकास चढ़ि धावै ना॥

देखि मधु-मास की इतीक अनरीति,
मधुसूदन जु होते तौ न औते कहौ काहे कौ।
जानि ब्रज बूड़त जु होते गिरिधारी तौ पै,
ऊधौ इत तुमहि पठौते कहौ काहे कौ।
'द्विजदेव' प्यारे पिय पीतम जु होते तौ पै,
ब्रज मे बढ़ौते दुख-सोते कहौ काहे कौ।
बसिकै बिदेस बीजुरी-सी ब्रज-बालनि कौ,
होते घनस्याम तो बरौते कहौ काहे कौं॥

कौन कौ प्रान हरैं हम यौ,
दृग कानन लागि मतौ चहैं बूझन।
त्यौं कछु आपुस ही मे उरोज
कसाकसी कै-कै चहैं बढ़ि जूझन।
ऐसे दुराज दुहूँ बय के,
सब ही कौ लग्यौ अब चौचँद सूझन।
लूटन लागी प्रभा कढ़ि कै,
बढ़ि केस छबान सौं लागे अरूझन॥

जावक के भार पग परत धरा पैं मंद,
गंध भार कुचन परी हैं छुटि अलकैं।
द्विजदेव तैसिऐ बिचित्र बरुनी के भार,
आधे-आधे दृगनि परी हैं अध-पलकैं।
ऐसी छबि देखि अंग-अंग की अपार,
बार-बार लोल-लोचन सु कौन के न ललकैं।
पानिप के भारन सँभारत न गात लंक,
लचि-लचि जाति कच-भारन के हलकैं॥

चित चाहि अबूझ कहे कितने,
छबि छीनी गयदन की टटकी।
कवि केते कहै निज बुद्धि उदै,
यहि सीखी मरालन की मटकी।
द्विजदेव जू ऐसे कुतरकन मै,
सबकी मति यों ही फिरै भटकी।
वह मंद चलै किन मोरी भटू,
पग लाखन की अँखियाँ अटकी॥

आधी लै उसास मुख आँसुन सौ धोवे कहूँ,
जोवै कहूँ आधे-आधे पलन पसारि कै।
नींद भूख प्यास ताहि आधी हू रही न तन,
आधे हू न आखर सकत अनसारि कै।
द्विजदेव की सौं ऐसी आधि अधिकानी जा सों,
नैकऊ न तन मन राखति सँभारि कै।
जा दिन तै जोरि मनमोहन लला तै डीठि,
राधे आधे नैननि तै आई तू निहारि कै॥

मंद-भये दीपक बिलोकि क्यों अनंद होते,
भोरै चारु चद के चकोर चित चोखे तै।
होती समताई दिखवारन के भाँखै कब,
चितामनि-आरसी की आनन-अनोखे तै।
'द्विजदेव' की सौ एतौ हो तो उपहास कब,
मानसर हूँ के अरबिद-अति-ओखे तै।
आलिन के सग दीपमाली के बिलोकिबे कौ,
औझकि उझकि जो न झाँकती झरोखे तै॥

आज सुभाइन हीं गई बाग,
बिलोकि प्रसून की पाँति रही पगि।
ताहि समै तहँ आये गुपाल,
तिन्है लखि औरौ गयौ हियरौ ठगि।

पै 'द्विजदेव' न जानि पर्‌यो,
घौ कहा तिहिं काल परे अँसुवा जगि।
तू जो कहै सखि! लौनौ सरूप,
सो मो अँखियाँन मे लौनो गई लगि॥

कारौ नभ, कारी निसी, कारिऐ डरारी घटा,
भूकन बहत पौन आँनद को कंद री।
'द्विजदेव' साँवरी सलौनी सजी स्याम जू पै
कीन्हौ अभिसार लखि पावस अनंद री।
नागरी गुनागरी सु कैसै डरै रैनि-डर,
जाके सँग सोहै ए सहाइक अमद री।
बाहन मनोरथ, उँमाहि सँगवारी सखी,
मैन मद सुभट मसाल मुख-चंद री॥

दाबि-दाबि दंतन अधर-छतवंत करै,
आपने ही पाँइन कौ आहट सुनति स्रौन।
'द्विजदेव' लेति भरि गातन प्रसेद अलि,
पातहू की खरक जु होती कहूँ काहू भौन।
कंटकित होत अति उससि उसासिन तैं,
सहज सुबासन सरीर मंजु लागैं पौन।
पंथ ही मै कंत के जु होत यह हाल तो पै,
लाल की मिलनि ह्वै है बाल की दसा धौ कौन॥

बाँके, संक-हीने, राते-कंज-छबि-छीने, माँते,
झुकि-झुकि झूमि-झूमि काहू कौ कछू गनै न।
'द्विजदेव' की सौ ऐसी बनक बनाइ,
बहु-भाँतिन बगारैं चित-चाहन चहूँधाँ चैन।
पेखि परे प्रात जौ पै गातन उछाह भरे,
बार-बार तातै तुम्हैं पूछती कछूक बैन।
एहो ब्रजराज! मेरे प्रेम-धन लूटिबे कौं,
बीरा खाइ आऐ कितै आपके अनौखे नैन॥

उत्तर-रीति

सरदार

संग की सहेली रहीं, पूजत अकेली सिवा,
तीर जमुना के बीर चमक चपाई हे।
हौं तौ आई भागत डरत हियरा तै घर,
तेरे सोच करि मोहि सोचत सवाई हे।
बचि है बियोगी योगी जन सरदार,
ऐसी कठ तें कलित कूक कोकिल कढ़ाई हे।
विपिन - समाज में दराज सी अवाज होति,
आज महाराज रितुराज की अवाई हे॥

थोरी सी बैस किसोरी सबै,
भरि झोरी अबीर उडावती है।
कर ताल दै ढोलक की घधकी,
धुनि बाँध धमार बजावती है।
सरदार लिएँ मिथिलेस - कुमारि,
उदार ह्वै भाग सरावती है।
मुसिक्याय कै नैन नचाय सबै,
रघुनाथै बसंत बँधावती है॥

साहिब मनोज कौ मुसाहिब बसंत अंत,
मर ना गयौ री नाम सुनत नकारे कौ।
ग्रीषम गरूर पूर छायौ लै क्रुसानु भयौ,
भेद ते अजान, अंग तकत उजारे कौ।
बिन सरदार ना उपाय, अब एक कटै,
तरक तलास लायौ अधम अँध्यारे कौ।
देखि जग जीवननि जीवन कौ नाह,
हाथ छिवन न देत, लेत जीवन हमारे कौ॥

डरो न अहीरन तें, अगर अबीरन तें,
चार जनी चारु चार ओरन ते धाओ री।
एक हाथ आड़ी पिचकारी की अगारी मारि,
एक हाथ ओट राखि आँखिन बचाओ री।
कवि सरदार आयौ बड़ौ खिलवार,
ताहि खेल कौ सवाद रंग-रंगन बताओ री।
कीरति-कुमारी कह्यौ हेरि कै कुमारी कोउ,
ए री गुनवारी, बनवारी बाँधि लाओ री॥

लछिराम

सामुहै सुमन बरसाइ सुघराई संग,
लछिराम रंग सारदा हू कौ रितै रहे।
छाती मे लगाइ सूम थाती-सौ कमल कर,
सुकुमारताई कों सराहि दुचितै रहे।
अलक लँबाई, चारु चख चपलाई,
अधरान की ललाई पर हरष हितै रहे।
माई! मनमोहन, गोराई मुख-मंडल पै,
राई नौन बारि घरी चारि लौं चितै रहे॥

पैंजनी कंकन की झनकार सों,
नासिका मोरि मरोरति भौंहै।
ठाढ़ी रहे पग द्वैक चलै,
सने स्वेद कपोल कछू उघरौहै।
यों लछिराम सनेह के संगन,
साँकरे में पर प्यारी लजौंहै।
छाकि रह्यौ रस-रंग अभी,
मनमोहन ताकि रह्यौ तिरछौहैं॥

नौसत सिगार साजि, कीन्हौ अभिसार जाइ,
जोपन बहार रोम रोम सरसत जात।
लछिराम तैसी झनकार पैजनी की,
कर कंकन खनक चूरी चारु परसत जात।
झरत प्रस्वेद, मुख चूनर सुरंग बीच,
बिहँसत मन सारदा कौ तरसत जात।
दामिनी अमंद सौहें बस रस फंद चंद,
मानों लाल बादर में मोती बरसत जात॥

मौज में आई इतै लछिराम,
लग्यौ मन साँवरो आनँद-कद में।
सूनौ सँकेत निहारत ही,
पर्‌यौ सावरौ आनन घूंघट बंद में।
बोलिबे कौ अभिलाख रचै,
पै न बोलै कछू दुख-रासि दुचंद में।
ह्वै रही रैन -सरोज-सी प्यारी,
परी मनों लाज मनोज के फंद मे॥

चटपटी चाह अंग उपटे अनग के री,
रंग रावटी तें काम नट की कुमारी - सी।
कबि लछिराम राज - हंसनि सों मद - मद,
परम प्रकासमान चाँदनी सँवारी - सी।
नागरि निकुंज में न हेर्‌यौ ब्रजचंद,
मुख रुख पै सहेली भई आँखें रतनारी-सी।
भौहन मरोरति, बिथोरति मुकुत हार,
छोरति छरा के बंद, रोष - मद ढारी - सी॥

बदल्यो बसन सो जगत बदलोई करै,
आरस में होत ऐसो या में कहा छल है।
छाप है हरा की कै छपाए हौ हरा को,
छाती भीतर झगा के छाई छबि झलझल है।
लछिराम हौ हूँ धाय रचिहौ बनक ऐसो,
आँखिन खबाये पान जात क्यों अमल है।
परम सुजान मनरंजन हमारे कहा,
अँजन अधर में लगाये कौन फल है॥

आए कहूँ अनत बिहार करि मंदिर में,
सामुहे झमकि छवि दामिनी की छोरै है।
आरस - बलित बागौ, मरगजी ढीली पाग,
बदन प्रस्वेद भाल भौहन के कोरै हैं।

भरम खुल्यौ न अंग परसत मोहिनी कौ,
लछिराम सान संग भौंहन मरोरै हैं।
लोचन सुरंग हेरि बाल के सरोष मानौं
रंगसाज मदन मजीठ रंग-बोरै हैं॥

प्रीति रावरे सों करी, परम सुजान जानि,
अब तौ अजान बनि मिलत सबेरे पै।
लछिराम ताहू पै सुरंग ओढ़नी लै सीस,
पीत-पट देत गुजरैटिन के खेरे पै।
सराबोर छलकै प्रस्वेद कन, लाल भाल,
मदन मसाल वारौ बदन उजेरे पै।
आपुने कलक सों कलंकिनी बनी हौं,
लूटि और हू को धरत कलंक सिर मेरे पै॥

सजल रहत आप औरन को देत ताप,
बदलत रूप और बसन बरेजे में।
ता पर मयूरन के झुंड मतवारे सालै,
मदन मरोरै महा झरनि मजेजे में।
कवि लछिराम रंग साँवरो सनेही पाय,
अरजि न मानैं हिय हरषि हरेजे में।
गरजि-गरजि बिरहीन के बिदारै उर,
दरद न आवै, धरै दामिनी करेजे में॥

—:*॥०॥*:—

हरिश्चन्द्र

पहिले ही जाय मिले गुन में श्रवन फेरि,
रूप-सुधा मधि कीनो नैनहू पयान है।
हँसनि नटनि चितवनि मुसुकानि
सुघराई रसिकाई मिलि मति पय पान है।
मोहि मोहि मोहन मई री मन मेरो भयो,
हरिचंद भेद ना परत कछू जान है।
कान्ह भये प्रानमय प्रान भये कान्हमय,
हिय में न जानी परै कान्ह है कि प्रान है॥

जिय पै जु होइ अधिकार तो बिचार कीजै,
लोक-लाज भलो बुरो भलें निरधारिए।
नैन श्रौन कर पग सबै परबस भये,
उतै चलि जात इन्हे कैसे कै सम्हारिये।
हरिचंद भई सब भाँति सों पराई हम,
इन्हे ज्ञान कहि कहो कैसे कै निबारिये।
मन में रहै जो ताहि दीजिये बिसारि,
मन आपै वसे जामें ताहि कैसे कै बिसारिए॥

बोल्यो करै नूपुर श्रवन के निकट सदा,
रदतल लाल मन मेरे बिहर्यो करै।
बाजो करे बंसी धुनि पूरि रोम-रोम मुख,
मन मुकतानि मंद मन ही हँस्यो करै।
हरिचंद चलनि मुरनि बतरानि चित,
छाई रहै छबि जुग दृगन भर्यो करै।
प्रानहू ते प्यारो रहे प्यारो तू सदाई,
तेरो पीरो पट सदा जिय बीच फहर्यो करै॥

देखि घनस्याम घनस्याम की सुरति करि,
जिय मे बिरह घटा घहरि-घहरि उठै।
त्यों ही इन्द्रधनु बगमाल देखि बनमाल—
मोतीलर पी की जिय लहरि-लहरि उठै।
हरिचंद मोर पिक धुनि सुनि बंसीनाद,
बाँकी छबि बार-बार छहरि-छहरि उठै।
देखि - देखि दामिनि की दुगुन दमक,
पीत-पट-छोर मेरे हिय फहरि-फहरि उठै॥

गुरुजन बरज रहे री बहु बार मोहि,
संक तिनहूँ की छोड़ि प्रेम-रंग-राँची मैं।
त्यों हीं बदनामी लई कुलटा कहाइ कै,
कलंकिनी कहाई ऐसी प्रीति-लीक खाँची मैं।
कहि हरिचंद सब छोड़्यो प्रानप्यारे काज,
याते जग झूठो भयो रही एक साँची मै।
नेह के बजाय बाज छोड़ि सब लाज आज,
घूंघट उघारि ब्रजराज हेत नाची मैं॥

हो तो याही सोच में बिचारत रही री काहे,
दरपन हाथ तें न छिन बिसरत है।
त्योंही हरिचंद जू बियोग औ सयोग दोऊ,
एक से तिहारे कछु लखि न परत है।
जानी आज हम ठकुरानी तेरी बात तू तौ,
परम पुनीत प्रेम - पथ बिचरत है।
तेरे नैन मूरति पियारे की बसत ताहि,
आरसी में रैन दिन देखिबो करत है॥

पिया प्यारे बिना यह माधुरी मूरति,
औरन को अब पेखिये का।
सुख छाँड़ि कै संगम को तुमरे,
इन तुच्छन को अब लेखिये का।

हरिचंद जू हीरन को बेववहार कै,
काँचन को लै परेखिये का।
जिन आँखिन मे तुव रूप बस्यो,
उन आँखिन सों अब देखिये का॥

सुनी है पुरातन मे द्विज के मुखन बात,
तोहि देखै अपजस होत ही अचूक है।
तासों हरिचंद करि दरसन तेरो जिय
मेट्यो चाहै कठिन मनोभव की हूक है।
ऐसो करि मोहि सबे प्यारे नँदनँद जू सों
मिलि कहै लावै मुख सौतिन के लूक है।
गोकुल के चंद जू सों लागै जो कलंक तौ तू
साँचो चौथ-चद ना तो बादर को टूक है॥

साज्यो साज गाँव मिलि तीज के हिंडोरना को,
तानि कै बितान खासो फरस बिछायो री।
आवे मिलि गोपी ता पै भींजि झुंड झुंड,
काम-छाप सी लगावै गावै गीत मन-भायो री।
मोहि जानि पाछे परी देरी तै दया कै
हरिचंद अंक लैके लाल छिपि पहुँचायो री।
जानि गई ताहू पै चवाहनै गजब देखे,
पाँय बिनु पंक के कलंक मोहि लायो री॥

रंग-भौन पीतम उमंग भरि बैठ्यो आज,
साजै रति-साज पूर्यो मदन उमाह मै।
हरिचंद रीझत रिझावत हँसावत—
हँसत रस बाढ्यो अति प्रेम के प्रबाह मै।
बीरी देन मिस छुए आँगुरी अधर पुनि,
चूमै चुपचाप ताहि पान-खान-चाह मै।
लाजहिं छुड़ावत छकावत छकत छबि,
छावत छबीलो छैल-छल के उछाह मैं॥

आजु वृषभानुराय पौरी होरी होय रही,
दौरी है किसोरी सबै जोबन चढ़ाई मैं।
खेलत गोपाल हरिचंद राधिका के साथ,
बुक्का एक सोहत कपोल की लुनाई मै।
कैधौं भयो उदित मयंक नभ-बीच कैधौ,
हीरा जर्यो बीच नीलमनि की जराई मै।
कैधौ पर्यो कालिंदी के नीर माँहि छीर कैधौं,
गरक सु गोरी भई स्याम सुंदराई मैं॥

खेलौ मिलि होरी ढोरो केसर, कमोरी फैको,
भरि-भरि झोरी लाज जिअ में बिचारौ ना।
डारौ सबै रंग संग चंग हू बजाओ गाओ,
सबन रिझाओ सरसाओ संक धारो ना।
कहत निहोरि कर जोरि हरिचंद प्यारे,
मेरी बिनती है एक हाहा ताहि टारौ ना।
नैन है चकोर मुख-चंद तैं परैगी ओट,
यातै इन आँखिन गुलाल लाल डारौ ना॥

राखत नैनन में हिय में भरि,
दूर भए छिन होत अचेत है।
सौतिन की कहै कौन कथा,
तसवीर हू सों सतराति सहेत है।
लाग भरी अनुराग भरी,
हरिचंद सबै रस आपुहि लेत है।
रूप सुधा इकली ही पियै,
पिय हू को न आरसी देखन देत है॥

हौं तो तिहारै दिखाइबे के हित,
जागत ही रही नैन उजार-सी।
आए न राति पिया हरिचन्द,
लिए कर भोर लौं हौं रही भार-सी।

है यह हीरन सों जड़ी,
रंगन तापै करी कछु चित्र चितार-सी।
देखो जू लालन कैसी बनी है,
नई यह सुन्दर कंचन-आरसी॥

हौ तो तिहारै सुखी सों सुखी,
सुख सों जहाँ चाहिए रैन बिताइये।
पै बिनती इतनी हरिचद,
न रूठि गरीब पै भौह चढ़ाइये।
एक मतो क्यों कियो तुम सों तिन,
सोऊ न आवै न आप जो आइये।
रूसिबै सों पिय प्यारे तिहारै,
दिवाकर रूसत है क्यों बताइये॥

आई आज कित अकुलाई अलसाई प्रात,
रीसै मति पूछै बात रंग कित ढरिगो।
सोने से या गात छ्वै कै सोनो भयो आप, कै वा
आतप प्रभात ही को प्रगट पसरिगो।
हरिचंद सौतिन की मुख-दुति छीनी कै वा,
आपनो बरन कहुँ पाय धाय ररिगो।
नील पट तेरो आज औरै रंग भयो काहे,
मेरे जान बिछुरि पिया तै पीरो परिगो॥

रोकहिं जो तो अमंगल होय,
औ प्रेम नसै जो कहै पिय जाइये।
जौ कहै जाहु न तौ प्रभुता,
जौ कछू न कहै तो सनेह नसाइए।
जौ हरिचंद कहै तुमरे बिन जी है न,
तो यह क्यों पतिआइए।
तासौं पयान समै तुमरे हम,
का कहैं आपै हमै समझाइए॥

जो हरिचंद भई सो भई,
अब प्रान चलै चहै तासों सुनावै।
प्यारे जू है जग की यह रीति,
बिदा की समै सब कंठ लगावैं॥

अब प्रीति करी तो निबाह करौ,
अपने जन सों मुख मोरिये ना।
तुम तो सब जानत नेह मजा,
अब प्रीति कहूँ फिरि जोरिये ना।
हरिचंद कहै कर जोरि यही,
यह आस लगी तेहि तोरिये ना।
जिन नैनन माँहिं बसौ नित ही,
तिन आँसुन सों अब बोरिए ना॥

इन दुखियान को न चैन सपने हुँ मिल्यो
तासों सदा ब्याकुल बिकल अकुलायँगी।
प्यारे हरिचन्द जू की बीती जान औध
प्रान चाहत चले पै ये तो संग ना समायँगी।
देख्यो एक बार हू न नैन भरि तोहि यातें
जौन जौन लोक जैहे तहाँ पछतायँगी।
बिना प्रान-प्यारे भये दरस तुम्हारे हाय
मरे हू पै आँख ये खुली ही रहि जायँगी॥

मन मोहन ते बिछुरी जब सों
तन आँसुन सों सदा धोवती है।
हरिचन्द जो प्रेम के फन्द परीं
कुल की कुल लाजहि खोवती है।
दुख के दिन कों कोउ भाँति बितै
बिरहागम रैन सँजोवती है।
हम हीं अपनी दसा जानै सखी
निसि सोवती है किधौं रोवती है॥

पीरो तन पर्‌यो फूली सरसों सरस सोई
मन मुरझानो पतझार मानौ लाई है।
सीरी स्वाँस त्रिबिध समीर-सी बहति सदा
अँखियाँ बरसि मधु झरि-सी लगाई है।
हरिचन्द फूले मन मैन के मसूसन सों
ताही सों रसाल बाल बदि कै बोराई है।
तेरे बिछुरे ते प्रान कन्त के हिमन्त अन्त
तेरी प्रेम-जोगिनी बसन्त बनि आई है॥

कूकै लगी कोइलै कदंबन पे बैठि फेरि
धोए धोए पात हिलि-हिलि सररै लगे।
बोले लगे दादुर मयूर लगे नाचै फेरि
देख के सजोगी-जन-हिय हरसै लगे॥
हरी भई भूमि सीरी पवन चलन लागी
लखि हरिचन्द फेर प्रान तरसै लगे।
फेरि भूमि-भूमि बरषा की ऋतु आई फेरि
बादर निगोरे झुकि-झुकि बरसै लगे॥

घेरि-घेरि घन आए, छाए रहे चहुँ ओर
कौन हेत प्राननाथ सुरति बिसारी है।
दामिनी दमक जैसी जुगनूं चमक तैसी
नभ मे बिशाल बग पगति सँवारी है।
ऐसी समै हरिचन्द धीर न धरत नेकु
बिरह-बिथा तें होत ब्याकुल पियारी है।
प्रीतम पियारे नन्दलाल बिनु हाय यह
सावन की रात किधौ द्रौपदी की सारी है॥

सिसुताई अजों न गई तन तें,
तऊ जोबन जोति बटोरै लगी।
सुनिकै चरचा हरिचन्द की,
कान कछूक दै भोह मरोरै लगी।

बचि सासु जेठानिन सौं पिय तें,
दुरि घूँघट में दृग जोरै लगी।
दुलही उलही सब अंगन ते,
दिन द्वै तै पियूष निचोरै लगी ॥

आई गुरु लोग संग न्यौते ब्रज गाँव,
नई दुलही सुहाई शोभा अंगन सनी रही।
पूछे मन-मोहन बतायो सखियन यह
सोई राधा प्यारी बृषभानु की जनी रही।
हरिचन्द पास जाय प्यारो ललचायो,
दीठ लाज की धँसी सो मानो हीर की अनी रही।
देखो अन-देखो देखो आधो मुख आय तऊ
आधो मुख देखिबे की हौस ही बनी रही ॥

सास जेठानिन सौं दबती रहै.
लीने रहै रुख त्यों ननदी को।
दासिन सों सतरात नहीं,
हरिचन्द करै सनमान सखी को।
पीय कों दच्छिन जानि न दूसत,
चौगुनो चाउ बढ़ै या लली को।
सौतिन हू को असीसै, सुहाग करै
कर आपने सेदुर टीको ॥

—*॥०॥*—

छाई कछू हरुवाई सरीर कै,
नीर मै आई कछू भरुवाई।
नागरी की नित की जो सधी,
सोई गागरी आजु उठे न उठाई॥

ननद जिठानी सास सखिनि सयानी मध्य,
बैठी हुती बाल अलबेली जहाँ आइ कै।
कहै रतनाकर सुजान मनमोहन हूँ,
आए ललचाइ तहाँ कछु मिस ठाइ के।
चहत बनै न भरि लोचन दुहूँ सौ अरु,
रहत बनै न नार नैसुक नवाइ कै।
दुरि दुरि औरनि सौ जुरि जुरि तौरनि सौ,
घुरि घुरि जात नेन मुरि मुसुकाइ कै॥

बैठे बन विकल बिसूरत गुपाल जहाँ,
औचक तहाँई बाल जोगी इक आइगे।
कह्यौ रतनाकर उपाय हम ठानै कछु,
जानै जदि कापै आज एतिक लुभाइगे।
ताही छन छाइगे छलक इत आँस नैन,
बैन उत आवत गरे लौ बिरुझाइगे।
पाइगे न जानै कहा मरम दुहूँ के दुहूँ,
हँसि सकुचाइ धाइ हिय लपटाइगे॥

देखत हमारी हूँ दसा न इठिलानि माहि,
आपनी तौ बानि ना बिलोकत अठानि मै।
कहै रतनाकर उपाइ ना बसाइ कछू,
जासौं लखौ भाइ भेद उभय दसानि मै।
पावतौ कहूँ जौ कोऊ चतुर चितेरौ तौ,
दिखावतौ सुभाव सोधि कलित कलानि मै।
रिझवन-आतुरी हमारी अँखियानि माहि,
खिझवनि-चातुरी तिहारी मुसकानि मैं॥

जब ते रची हे रूप रावरे रसिकलाल,
तब ते बनी है बाल बात बरकत की।
कहै रतनाकर रही हे रुचि नैननि मै,
मीन-मुख मजुल मुकुत ढरकत की।
आठौ जाम बाम मग जोहत मृगी-सो जब,
चौकै पाय आहट तिनूका खरकत की।
अनुराग-रजित अजाज सौ कढ़त स्याम,
मानिक तै मानहु मरीचि मरकत की॥

औचक अकेले मिले कुंज रस-पुञ्ज दोऊ,
भौचक भए औ सुधि-बुधि सब ख्वै गईं।
कहे रतनाकर त्यों बानक बिचित्र बन्यौ,
चित्र की सी पलकै सुभौहनि मै प्वै गईं।
नैननि मै नैननि के बिब प्रतिबिबनि सौं,
दोऊ ओर नैननि की पाँति बँधि द्वै गईं।
दोउन कौ दोउनि के रूप लखिबे कौ मनौ,
चार आँख होत हीं हजार आँख ह्वै गईं॥

रोच्यौ रति-जाग नींद सौपि कै हमारै भाग,
सो तौ सोध आप ही झपकि ठहि देत है।
बाढ़ै उहि प्यारी मुख मंजुल सुधाकर सौं,
रस रतनाकर की थाह थहि देत है।
पानिप के अमल अगार सुख-सार तऊ,
लाइ उर दुसह दवारि दहि देत है।
नैन बिन बानी कहि कबिनि बखानी बात,
ये तौ पर सकल कहानी कहि देत है॥

चसकौ परै ना मान-रस कौ कहूँ धौ वाहि,
लीजै बात रचक विचारि हित हानि की।
कहै रतनाकर तिहारे सुबरन पर,
दमक दुलारी देति तमक तवानि की।

रोष की रुखाई रुख आवत सुसीली होति,
मंद मुसकानि लै रसीली अँखियानि की।
होत मृदु मीठे सीठे बचन तिहारे पाइ,
कंठ - कोमलाई मधुराई अधरानि की॥

लै लियौ चुम्बन खेलत में कहूँ,
तापै कहा इतनौ सतरानी।
होठनि ही मै कछू करि सोंहै,
बृथा भरि भौह कमान है तानी।
लीजिये फेरि सबेर अबै,
अबहीं तौ मिठासहुँ नाहि सिरानी।
यौं कहि सोंहे कियौ अधरा इन,
वे तिरछौहे चिते मुसकानी॥

तेरौ रोस रुचिर सदोस हू ह्वै हरन कौ,
लागी मन लालसा न नैकुं डगि जाति है।
कहे रतनाकर रुखाई माहि मान हूँ की,
सहज सुभाव सरसाई खगि जाति है।
फीकी चितवन हूँ न नीकी भाँति जानी जाति,
तामैं लोल लोचन लुनाई लगि जाति है।
कहति कछू जो कटु बानि हूँ अठान ठानि,
आनि अधरा सों मधुराई पगि जाति है॥

मान कियौ मोहन मनीसी मन मौज मानि,
पानि जोरि हारीं जब सखियाँ, मन्यौ नहीं।
तब बरजोरी करि नवल किसोरी भेस,
ल्याँई केलि भौन नैकु टेकहि गन्यौ नहीं।
प्यारी बनि प्रीतम भुजनि भरि लीन्यौ उन,
कल छल कीन्यौ बहु जात सु भन्यौ नहीं।
प्रथम समागम सो सब ही बन्यौ पै एक
अंक तैं छटकि छूटि भाजत बन्यौ नहीं॥

दीठि तुम्हे छ्वै छली पलट्यो रँग,
दीसत साँवरौ साज सबै हे।
है रतनाकर रावरे अंगनि,
चेटक पेखि प्रतच्छ परै हे।
देति है गोरस ठाढे रहौ उत,
रार करैं कछु हाथ न ऐहै।
साँवरे छैल छुवौगे जो मोहि तो,
गातनि मेरे गुराई न रैहै॥

नाक के चढ़ावत पिनाक भौह ढीली परैं,
चढत पिनाक भौह नाक मुसुकाइ दै।
कहै रतनाकर त्यौ ग्रीव हूँ नवाइ लिऐ
मुख तै टरैं न नैन गौरब गंवाइ दै।
अनख बढ़ावत अनंग की तरगै बढ़ै,
धीरज धरा तै प्रन-पायहि उठाइ दै।
रहति हियै ही हौस हिय की हमारे हाय,
पैयाँ परौ नैक मान करिबौ सिखाइ दै॥

गूँथन गुपाल बैठे बेनी बनिता की आप,
हरित लतानि कुंज माँहि सुख पाइ कै।
कहै रतनाकर सँवारि निरवारि बार,
बार बार बिबस बिलोकत बिकाइ कै।
लाइ उर लेत कबौ फेरि गहि छोर लखै,
ऐसे रही ख्यालनि में लालन लुभाय कै।
कान्ह-गति जानि कै सुजान मन मोद मानि,
"करत कहा हौ"? कह्यौ मुरि मुसुकाइ कै॥

साँवरी राधिका मान कियौ,
परि पाँइनि गोरे गुबिंद मनावत।
नैन निचौहै रहै उनके नहि,
बैन बिनै के न ये कहि पावत।

हारी सखी सिख दै रतनाकर,
आन न भाइ सुभाइ पै छावत।
ठानि न आवत मान उन्हैं,
इनकौ नहि मान मनावन आवत॥

नींद लै हमारी ह्वै दुनींदे ह्वै सुनींदे सोए,
सुनत पुकार नाहि परी हौ चहल मै।
कहै रतनाकर न ऐसी परितीति हुती,
प्रीति-रीति हाय हियै जानी हौ सहल मै।
देखत हीं आपने द्दगनि हितहानी करी,
अब पछितात परी ताहि की दहल मै।
बीर मै अजान बलबीरहि निवास दियौ,
नीर-सिचे बरुनी उसीर के महल में॥

जानति हो जेसे तुम छलके निधान कान्ह,
ताहू पर मोहि प्रेम-पूरन पगे लगौ।
कहै रतनाकर कपोलनि लै पीक-लीक,
मोको तुम मेरे अनुरागहि रँगे लगौ।
जैसे दरपन मै दिखात उलटोई सब,
सूधौ पर जानि जात जब लखिबे लगौ।
मेरे मन-मुकुर अमल स्वच्छ माहि त्यौ हीं,
कपट किऐ हूँ प्यारे निपट भले लगौ॥

जमुना कछारनि पै बन-द्रुम-डारनि पै,
और कछू मंजु मधुराई फिरि जाति है।
कहै रतनाकर त्यौ नगर-अगारनि पै,
बारनि पै बनक निकाई फिरि जाति है॥
नर-पसु पच्छिनि की चरचा चलावै कौन,
पौन-गौनहू मै सरसाई फिरि जाति है।
जहाँ जहाँ बाँसुरी बजावत कन्हाई बीर,
तहाँ तहाँ मदन-दुहाई फिरि जाति है॥

बीति जाति बातनि मैं सुखद सँजोग राति,
अतर थिरात नाहि साँझ औ सवेरे मै।
कहै रतनाकर कुलिस-हिय-धारी भारी,
करत अकाज आप नास हू ह्वै हेरे मै।
मिलि घनश्याम सौ तमकि जौ बियोग माहि,
चमकि चमक उपजाई उर मेरे मै।
ताके बदले कौ दुख दुसह बिचारि आज,
गरक गई ह्वै मनौ बीजुरी अँधेरे मै॥

आइ अठखेलनि सौ अमित उमग भरै,
जिनके प्रसंग सौ तरुनि-अंग थहरै।
जीवन जुड़ावै रस-धाम रतनाकर कौ,
मानस मै जिनसौ तरंग मंजु ढहरैं।
अंग लागि मेरैं बिन बाधक सुखेन सोई,
ऐसी कब भाग-पुंज होहि कुंज डहरै।
दंद हरै हीतल कौ, कौन नँद-नंद ? नाहि,
सीतल सुगध मंद मारुत की लहरैं॥

सोई फूल सूल से भए है सुख-मूल अबै,
ताप-प्रद चंदन अनंद-कंद ही भयौ।
कहै रतनाकर जो फनि-फुतकार हुतौ,
सब सुखसार मलयानिल वही भयौ।
फरकि हमारे बाम अंग की फरक ही सो,
बाम सौं सुदच्छिन प्रभाव सबही भयौ।
कालिह ही भयौ हो बीर विषम बिषाकर कौ,
आज सो सुधाकर सुधाकर सही भयौ॥

होरी खेलिबे कौ कढ़ी केसरि कमोरि घोरि,
उमगति आनँद की तरल तरंग मे।
कहै रतनाकर महर कौ लड़ैती छैल,
रोकी गैल आनि हुरहारनि के संग मे।

मो तन निहारि धारि पिचकी-अधार अंक,
मारी मुसुकाय धारी उरज उतंग मै।
सोई पिचकारी रँगी सारी लाल रंग माहिँ,
सोई रँगीं अँखियाँ हमारी स्याम-रंग मै॥

★

बिरह-बिथा की कथा अकथ अथाह महा,
कहत बनै न जो प्रबीन सुकबीनि सौं।
कहै रतनाकर बुझावन लगे ज्यौं कान्ह,
ऊधौ कौं कहन हेत ब्रज-जुवतीनि सौं।
गहबरि आयौ गरौ भभरि अचानक त्यौं,
प्रेम पर्‍यौ चपल चुचाइ पुतरीनि सौं।
नैकु कही बैननि, अनेक कही नैननि सौं,
रही सही सोऊ कहि दीनी हिचकीनि सौं॥

प्रेम-भरी कातरता कान्ह की प्रगट होत,
ऊधव अवाइ रहे ज्ञान-ध्यान सरके।
कहै रतनाकर धरा कौ धीर धूरि भयौ,
भूरि भीति भारनि फनिंद-फन करके।
सुर-सुरराज सुद्ध-स्वारथ-सुभाव-सने,
संसय-समाए धाए धाम बिधि हर के।
आई फिरि ओप ठाम-ठाम ब्रज-गामनि के
बिरहिनि बामनि के बाम अंग फरके॥

आए हौ सिखावन कौं जोग मथुरा तैं,
तौपै, ऊधो ये बियोग के बचन बतरावौ ना।
कहै रतनाकर दया करि दरस दीन्यौ,
दुख दरिबै कौं, तौ पै अधिक बढ़ावौ ना।
टूक टूक ह्वै है मन-मुकुर हमारौ हाय,
चूकि हूँ कठोर बैन-पाहन चलावौ ना।
एक मनमोहन तौ बसिकै उजार्‍यो मोहिं,
हिय में अनेक मनमोहन बसावौ ना॥

जोगिनि की भोगिनि की बिकल बियोगिनि की,
जग मैं न जागती जमातैं रहि जाइँगी।
कहै रतनाकर न सुख के रहे जौ दिन,
तौ ये दुख द्वंद्व की न रातैं रहि जाइँगी।
प्रेम-नेम छाँड़ि ज्ञान छेम जो बतावत सो,
भीति ही नहीं तौ कहा छातैं रहि जाइँगी।
घातैं रहि जाइँगी न कान्ह की कृपा तैं इती,
ऊधौ कहिबे कौ बस बातैं रहि जाइँगी॥

ढोंग जात्यौ ढरकि परकि उर-सोग जात्यौ,
जोग जात्यौ सरकि सकंप कँखियानि तैं।
कहै रतनाकर न लेखते प्रपंच ऐंठि,
बैठि धरा लेखते कहूँ धौं नखियानि तैं।
रहते अदेख नाहि बेष वह देखत हूँ,
देखत हमारी जान मोर पंखियानि तैं।
ऊधौ ब्रह्म ज्ञान कौ बखान करते ना नैकु,
देख लेते कान्ह जौ हमारी अँखियानि तैं॥

चाहत निकारन तिन्हैं जो उर-अंतर तैं,
ताकौ जोग नाहि जोग-मंतर तिहारे मैं।
कहै रतनाकर बिलग करिबै मैं होति,
नीति बिपरीत महा, कहति पुकारे मैं।
तातैं तिन्हैं ल्याइ लाइ हिय तैं हमारे बेगि,
सोचिये उपाय फेरि चित्त चेतवारे मैं।
ज्यों ज्यों बसे जात दूरि दूरि प्रिय प्रान-मूरि,
त्यों त्यों धँसे जात मन-मुकुर हमारे मैं॥

थाती राखि रूप की हमारी हाय छाती माहि,
बाल कौ सँघाती घाती बनि बिलगायौ है।
कहै रतनाकर सो सूधौ न्याव ही तौ ऊधौ,
मधुपुरी माहि जो अरूप सो लखायौ है।

परम अनूप एक कूबरी बिरूप छाँड़ि,
रूपवती जुवती न कोऊ मोहि पायौ है।
तातै तुम्है अब मनभावन सरूप सोई,
हिय तै हमारे काढ़ि ल्यावन पठायौ है।।

हरि-तन-पानिप के भाजन दृगंचल तैं,
उमगि तपन तै तपाक करि धावै ना।
कहै रतनाकर त्रिलोक - ओक - मंडल मैं,
बेगि ब्रह्मद्रव उपद्रव मचावै ना।
हर कौ समेत हर-गिरि के गुमान गारि,
पल मैं पतालपुर पैठन पठावै ना।
फैलै बरसाने मैं न रावरी कहानी यह,
बानी कहूँ राधे आधे कान सुनि पावै ना।।

रहति सदाई हरिआई हिय - घायनि मैं,
ऊरध उसास सो झकोर पुरवा की है।
पीव - पीव गोपी पीर-पूरित पुकारति है,
सोई रतनाकर पुकार पपिहा की है।
लागी रहै नैननि सौं नीर की झरी औ,
उठै चित में चमक सो चमक चपला की है।
बिनु घनस्याम धाम-धाम ब्रजमंडल मे,
ऊधौ नित बसति बहार बरसा की है।।

हाल कहा बूझत बिहाल परीं बाल सबै,
बसि दिन द्वैक देखि दृगनि सिधाइयौ।
रोग यह कठिन, न ऊधौ कहिबे के जोग,
सूधौ सौ सँदेस याहि तू न ठहराइयौ।
औसर मिलै औ सरताज कछु पूछहिँ तौ,
कहियौ कछू न दसा देखी सो दिखाइयौ।
आह कै कराहि नैन नीर अवगाहि कछू,
कहिबे कौं चाहि हिचकी लै रहि जाइयौ।।

धाईं जित तित तैं बिदाई हेत ऊधव की,
गोपी भरीं आरति सँभारति न साँसु री।
कहै रतनाकर मयूर-पच्छ कोऊ लिए,
कोऊ गुञ्ज अंजली उमाहै प्रेम आँसु री।
भाव-भरी कोऊ लिए रुचिर सजाव दही,
कोऊ मही मंजु दाबि दलकति पाँसुरी।
पीत पट नंद जसुमति नवनीत नयौ,
कीरति-कुमारी सुरवारी दई बाँसुरी॥

कोऊ जोरि हाथ कोऊ नाइ नम्रता सौं माथ,
भाषन की लाख लालसा सौं नहि जात है।
कहै रतनाकर चलत उठि ऊधव के,
कातर ह्वै प्रेम सौं सकल महि जात है।
सबद न पावत सो भाव उमगावत जो,
ताकि ताकि आनन ठगे-से हठि जात है।
रञ्चक हमारी सुनौ रञ्चक हमारी सुनौ,
रञ्चक हमारी सुनौ कहि रहि जात हैं॥

—:*॥०॥*:—

हरिऔध

मद माती मुदित मयूर-मडली के काज,
पारत पियूख कौन घन की थहर मै।
मंजु सुर मत्त या कुरङ्गन के हेत कौन,
बेवसी भरत बेनु बधिक-निकर मैं।
हरिऔध होति जो न मोह मै महानता,
तो बँधत मिलिद कैसे कंज के उदर मै।
मन कैसे रमत चकोर औ मरालन कौ,
मोदवारे मंजुल मयंक मानसर मै॥

सरिता-सलिल है बहत कल-कल नाहि,
खिलखिल हँसि है हुलास-पगो हुलसत।
दारिम-फलन दंत-राजि है निकसि लसि
खोलि मुँह बिकच-सुमन-बृन्द सरसत।
हरिऔध हेरि-हेरि राका-रजनी को हास,
मुदित दिगंत है विकास-भरो बिलसत।
हँसि-हँसि लोटि-लोटि जात चारु चाँदनी है,
मंजुल मयक अहै मंद मंद बिहँसत॥

दोऊ दुहूँ चाहे दोऊ दुहुँन सराहैं सदा,
दोऊ रहै लोलुप दुहूँन छबि न्यारी कै।
एकै भये रहै नैन मन प्रान दोहुँन के,
रसिक बनेई रहै दोऊ रस-क्यारी के।
हरिऔध केवल दिखात द्वै सरीर ही है,
नातो भाव दीखै है महेस गिरिबारी कै।
प्रान-प्यारे चित मै निवास प्रानप्यारी रखै,
प्रानप्यारो बसत हिये मै प्रानप्यारी कै॥

नैन मदमाते बैन कछु अलसाते कढ़ै,
उर मै उमंग अधिकाने की दुहाई है।
कंप होत गात ना समात कंचुकी मे कुच,
आनन लखात तेरे अजब लुनाई है।
हरिऔध हेतु बीर बावरी बनी-सी डोलै,
धरति न धीर कैसी करति ढिढाई है।
रंग-ढंग दीखे बूझि परत कुरङ्ग - नैनी,
आज तेरे अगन अनंग की चढ़ाई है॥

बयन सुधा मे सनि सनि सरसन लागे,
कान परसन लागे नयन नवेली कै।
आँगुरो की पोरन मे लालिमा दिपन लागी,
गुन गरुआन लागे गरब गहेली कै।
हरिऔध हेरि हेरि हियरो हरन लागी,
चाहि चितवन लागी कोरक चमेली कै।
मंजु छबि छिति-तल पर छहरान लागी,
छुअन छवान लागे केस अलबेली कै॥

कुञ्ज में राजति ही मुख मंजु ते
कै कल कंजन की छबि औगुनो।
बात वहै तहाँ तौ लौं भई
नहिं जाहि रही मन माहि कबौ गुनी।
चौकि परी हरिऔध को चाहि,
उमाहि चली बनि आकुल चौगुनी।
नौगुनी चावमयी चपला भई,
लोचन - चंचलता भई सौगुनी॥

मधुराई मनोहरता मुसुकानि मै,
औचक आइ समानी नई।
रस की बतिआन हूँ मैं हरिऔध,
अनेक गुनी निपुनाई ठई।

मद छाके छबीली बिलासन हूँ,
सुबिलासिता की बर बेलि बई।
छलकी सी छटा अँखियान परै,
छबि आननहूँ पै अनूनी छई॥

श्रीफल कहे ते सुख होत सपने हूँ नाहि,
तोख होत हिय मे न कंदुक बखाने से।
कंचन-कलस की कथान को उठावै कौन,
रति को सिधोरा कहे रहत लजाने से।
हरिऔध जामे बसि मत्त मन-भृंग मेरो,
काढ़त न दीखै अजौं कौन हूँ बहाने से।
सोभा सने सोहैं सौहैं ससि लौं सु आनन के,
सरस उरोज ए सरोज सकुचाने से॥

छबि रावरी हेरि छबीली छकी,
सिगरे छल-छंदन छोरै लगी।
अलकावली लाल तिहारी लखे,
कुल कानि हूँ तें मुख मोरै लगी।
हरिऔध निहारि कै नैन सुहावनै,
देवन हूँ को निहोरै लगी।
तरुनाई तिहारी निहारि तिया,
उकतान भरी तृन तोरै लगी॥

कान ए कान करैं फिर क्यों,
सुनि तानन ही इन बानि बिगारी।
मोहि गयो मन मोहन पै तो,
भई तब हूँ मन सों मन बारी।
पै हमें बूझि परी ना अजौं,
हरिऔध की सौं बतियाँ यह न्यारी।
बावरी कैसे रँगी रँग लाल मैं
मो अँखियान की पूतरी कारी॥

सूधियै नीकी लगै सब को भला,
बंकता भौहन कों कत दीजत।
नूतन लालिमा लाभ किये कत,
गोल कपोल की हे छबि छीजत।
चूक परी न चलै हरिऔध पे,
नाहक ही इतनो कत खीजत।
बाल हौ यों ही निहाल भई,
अब लाल कहा अँखियान को कीजत॥

जीवन है सिगरे जग को,
लखि जीवत तेरे ही आनन ओर है।
प्रान हे कामिनि को हरिऔध पै,
हेर्यो करै तव आँखिन-कोर है।
भाग हैं ऐसो तिहारो भटू,
इतनो कत कीजत मान मरोर है।
है घनश्याम पै तेरो पपीहरा,
है ब्रज-चंद पै तेरो चकोर है॥

बैठी हुती मंदिर में कलित कुरंग नैनी,
जाको लखि काम कामिनी को मान किलिगो।
क्यों हूँ कढ़्यो तहाँ आइ साँवरो छबीलो छैल,
जाको गान तानन ते ताके कान पिलिगो।
मुख खोलि उझकि झरोखे हरिऔध झाँके,
लोक-सुन्दरी को मजु रूप ऐसो खिलिगो।
नीलिमा गगन में मगन ह्वै गयो कलक,
आनन - उजास में मयंक-बिब मिलिगो॥

चलन चहत प्रान-प्यारो परदेश आली,
आकुल ह्वै हियरा हमारो सुधि लेखै ना।
चकि-चकि रहत चहूंकित चितै कै चित्त,
बेदन-बिबस ह्वै कै सुरति सरेखै ना।

हरिऔध प्यारे सग करन पयान ही मै,
आपनी भलाई पापी प्रान हू परेखे ना।
बिलखि-बिलखि भरि-भरि बार बार वारि,
नैनहू निगोरो आज नेन भरि देखे ना॥

बावरी ह्वै जाती बार बार कहि वेदन को,
बिलखि-बिलखि जो बिहार थल रोती ना।
पीर उठे हियरा हमरो टूक टूक होत,
ध्याइ प्राननाथ जो कसक निज खोती ना।
हरिऔध प्यारे के पधारि गये परदेस,
नैन नसि जात जो सपन सग सोती ना।
तन जरि जातो जो न अँसुआ ढरत आली,
प्रान कढ़ि जातो जो प्रतीति उर होती ना॥

चूमि चूमि प्यार ते उचारती बचन ऐसे,
जाते प्रेम प्रीतम को तोपे भूरि आवतो।
मोहित ह्वै तेरे चोंच मोहि चारु चामीकर,
हरिऔध हीरा हारि हिय पे लगावतो।
ए रे काक बोलत कहा है कमनीन बैठि,
मंजुल मनीन तेरे चरन जरावतो।
नैनन को तारो बाँकी बड़ी अँखियान-वारो,
प्यारो प्रान वारो जो हमारो कंत आवतो॥

भोर भये पै पधारें कहा भयो,
मेरी सदा सुख ही की घरी है।
ए री कछू हरिऔध करैं,
हमै तो उनकी परतीति खरी है।
बूझि बिचारि कहै किन बावरी,
बीच ही मै कत जाति मरी है।
साँवरे प्रेम पसीजि परी नहि,
मो अँखिया अँसुआन भरी है॥

कत पिचकारी कर मॉहि लीने आवत है,
बज मै जनात तू तो निपट हठीलो है।
नेक मेरी बातन को भूलि ना करत कान,
होरी के गुमान मे गजब गरबीलो है।
हरिऔध कहा लाभ अनरस कीने होत,
सुबस बसे हूँ बज कैसो तू लजीलो है।
ऐ हो लाल वा पै रंग छोरिबो छजत नॉहि,
गात-रंग ही सों वाको बसन रंगीलो है॥

बीर बरसानो छोरि गोकुल गई ही आज,
जान्यो ना गोपाल ऐसो ऊधम मचाय है।
सारी बोरि दीनी सारो गात करि लीनो लाल,
जैसो छल कीनो ताहि कैसे बतराय है।
हरिऔध अब तो न आपने रहे है नैन,
करि कै उपाय कौन इनै समझाय है।
अंग-लाग्यो रंग तो सलिल सों छुड़ाय लै हैं,
नेह संग लाग्यो तासों कैसे छूटि पाय है॥

छोरो रंग चाव सों हमारे इन अंगन पै,
कबहूँ कछू ना लाल भूलि हम कहि है।
बोरि दीजै सिगरी हमारी सारी केसर मै,
मन मैं बिनोद मानि मौन साधि रहि है।
हरिऔध अँखियाँ छकी है रावरी छबि मै,
इन पै दया ना कीने क्यों हूँ ना निबहि हैं।
परिबो पलक को तो कैसहूँ सहत प्यारे,
परिबो गुलाल को गोपाल कैसे सहि है॥

ताकि कै मारत हो पिचकारी,
तऊ मन मैं तनकौ नहि खीजत।
रंग मैं सारी भिगोय दई हम,
ताको उराहनो हूँ नहि दीजत।

पै इतनी बिनती हरिऔध,
मया करि क्यों हमरी न सुनीजत ।
साँवरे-रंग रँगी अँखियान कों,
प्यारे गुलाल ते लाल क्यों कीजत ॥